रजत जयंती विशेषांक



निर्माण

अंक-14 / वर्ष-2021-22

राष्ट्र की सेवा में परमाणु
निसेसंप्रनि
DCSEM
ATOMS IN THE SERVICE OF THE NATION

निर्माण, सेवा एवं संपदा प्रबंध निदेशालय

DIRECTORATE OF CONSTRUCTION, SERVICES AND ESTATE MANAGEMENT

हिंदी अनुभाग, तीसरा तल, दक्षिणी स्कंध, विक्रम साराभाई भवन, अणुशक्तिनगर, मुंबई - 400 094
HINDI SECTION, 3RD FLOOR, SOUTH WING, VIKRAM SARABHAI BHAVAN, ANUSHAKTINAGAR, MUMBAI - 400 094



मैं "निर्माण" हूँ...

1996 में जन्मा DCSEM का आविष्कार हूँ,
मैं "निर्माण" हूँ ।

25 वर्ष का तप, C & S Group और DEM की याद हूँ,
निर्माण, सेवा एवं संपदा प्रबंध निदेशालय का त्याग हूँ,
मैं "निर्माण" हूँ ।

नई ऊर्जा, नई पहल, नई खोज, नया जोश हूँ,
और DCSEM का उत्थान हूँ,
मैं "निर्माण" हूँ।

DCSEM का काव्य, हिन्दी का अवतार
और ज्ञान का भण्डार हूँ,
मैं "निर्माण" हूँ।

DCSEM का प्यार हूँ, मान-सम्मान हूँ,
बुध्दिमता से परिपूर्ण, DCSEM का श्रृंगार हूँ,
मैं "निर्माण" हूँ।

DAE और DCSEM के
गौरवपूर्ण इतिहास का संक्षिप्त सार हूँ,
मैं "निर्माण" हूँ।

मैं "निर्माण" हूँ...

- विनोद कुमार मालाकार

संरक्षक



श्री भरत कुमार जैन,
निदेशक निसेसंप्रनि

संपादक



श्रीमती अनुराधा दोडके,
उपनिदेशक (राजभाषा)

संपादक मंडल



श्रीमती शैलजा प्रकासम
मुख्य प्रशासन अधिकारी



श्री ए. एस. यादव
मुख्य अभियंता,
सामान्य सेवा अनुभाग



श्री एस. के. सैनी
प्रधान, एस डी एस



श्रीमती सोनाली शुक्ला
वैज्ञानिक अधिकारी



श्री ए. एन. शुक्ल
वैज्ञानिक अधिकारी

संपादन सहयोग



श्रीमती अनुभा खरगोणकर
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी



श्रीमती हेमलता कदम
प्रवर श्रेणी लिपिक

निसेसंप्रनि की राजभाषा कार्यान्वयन समिति



श्री बी.के.जैन
निदेशक



श्री एस. के. जायसवाल
प्रधान (यांत्रिकी)



श्री मिलिंद गोवर्धन
मुख्य अभियंता (सी1)



श्री के. शिवप्रकाश
प्रधान, निर्माण समूह (सी3)



श्री ए. के.जाना
प्रधान (सीक्यूडी)



श्री वी. के. मिश्रा
प्रधान, उद्यान विज्ञान एवं
साज सज्जा अनुरक्षण



श्री ए.एस. यादव
मुख्य अभियंता,
सामान्य सेवा अनुभाग



श्रीमती शैलजा प्रकासम
मुख्य प्रशासन अधिकारी



श्री साई कन्नन
संयुक्त नियंत्रक (वित्त एवं लेखा)



श्री के. सुधाकर
प्रशासन अधिकारी-III



श्री अरूप बॅनर्जी
प्रशासन अधिकारी-III



श्रीमती अनुराधा दोडके
उपनिदेशक (राजभाषा)

अनुक्रमणिका

क्र. सं.	विषय	लेखक / रचनाकार	पृष्ठ सं.
1.	संपादकीय		
2.	सचिव, पऊवि का संदेश		
3.	संयुक्त सचिव (प्रशासन व लेखा), पऊवि का संदेश		
4.	अध्यक्ष की कलम से		
5.	निर्माण, सेवा एवं संपदा प्रबंध निदेशालय - संक्षेप में		01
6.	निर्माण, सेवा एवं संपदा प्रबंध निदेशालय अविस्मरणीय कार्य अनुभव	श्री ए. के. गुप्ता, पूर्व निदेशक	05
7.	डीसीएसईएम के साथ मेरी कार्य यात्रा...	श्री के. एस. वाघ, पूर्व निदेशक	08
8.	निसेसंप्रनि के साथ मेरा जुडाव	श्री एन. एस. गभने, पूर्व निदेशक	11
9.	मन की बात	श्री अनिल श्रीवास्तव, पूर्व निदेशक	13
10.	अभिन्न मैं...	श्रीमती शैलजा प्रकासम	14
11.	विक्रम साराभाई-आधुनिक भारत के अन्तरिक्ष महर्षि	श्री अनिल पुंडलिक	15
12.	महिला सशक्तिकरण	श्री के. महापात्रा	19
13.	निर्माण, सेवा एवं संपदा प्रबंध निदेशालय मना रहा है आजादी का अमृत महोत्सव	श्री ए. एस. यादव, विनोद मालाकार	21
14.	निदेशालय द्वारा कोविड-19 महामारी के दौरान निर्माण और सेवाओं का प्रबंधन	श्री ए. एस. यादव, श्री ए.एन. शुक्ल	25
15.	जल अनमोल है	श्री एस. के. भिसे, श्री दीवान सिंह	27
16.	स्वच्छ एवं हरित अणुशक्तिनगर...	श्रीमती सोनाली शुक्ला	29
17.	जीरो डिस्चार्ज की ओर एक कदम	श्री एस. के. भिसे, श्री शुभम तालियान	33
18.	सौर ऊर्जा का दोहन	श्री तजिंदर लाम्बा, श्री मयंक शर्मा	35
19.	मेरा कचरा, मेरी जिम्मेदारी	श्री पी. एस. साळुंके	37
20.	उर्जा संरक्षण की आवश्यकता	श्री के. आर. रेड्डी	40
21.	शहर का सफर...	श्री अंशु गुप्ता	42
22.	जीसीएनईपि साइट पर कोविड सुरक्षा	श्री मिलिंद गोवर्धन	44

क्र. सं.	विषय	लेखक / रचनाकार	पृष्ठ सं.
23.	निसेसंप्रनि के 25 वर्षों की गौरवशाली निर्माण यात्रा		45
24.	निदेशालय की राजभाषा गतिविधियाँ	श्रीमती हेमलता कदम	54
25.	निदेशालय में लेखा अनुभाग की शानदार यात्रा	श्रीमती एस. प्रेमलता	56
26.	भोजन (कहानी)	श्रीमती अनुराधा दोडके	57
27.	एक विचार	श्रीमती सोनाली शुक्ला	60
28.	समय बलवान है	श्री अनुदीप गुप्ता	61
29.	जिंदगी की पतंग	श्रीमती अनुभा खरगोणकर	62
30.	आजादी के 75 वर्ष (कहानी)	श्रीमती रेश्मा मगरे	63
31.	एक सोच-गऊ को समर्पित	श्रीमती संजु कुमारी	64
32.	जान है तो जहान है	कुमारी शिखा मेश्राम	66
33.	कोविड-19 से मैंने क्या सीखा...	श्रीमती रानी सरदेसाई	67
34.	परोपकार (कहानी)	श्री अनुदीप गुप्ता	68
35.	आपबीती	श्रीमती उषा डुंगडुंग	69
36.	काश वो क्षण...(कहानी)	श्रीमती संजु कुमारी	70
37.	कर्म	श्री संतोष कुमार	72
38.	उपलब्धियां एवं सम्मान		73
	काव्यांजलि		
1.	मैं निर्माण हूँ	श्री विनोद मालाकार	
2.	गीत नया हमें रचना है	श्री अलोक सक्सेना	20
3.	जिंदगी	श्री अनिल बावस्कर	26
4.	हाँ, ये तो मेरा गाव नहीं	श्रीमती अंजली कारडा	28
5.	रोज़ाना	श्रीमती अंजली कारडा	32
6.	परिवर्तन	श्रीमती रानी सरदेसाई	34
7.	रोज-रोज सूरज है आता	श्री सुनील सोहंदा	39
8.	युवा शक्ति का आव्हान	श्रीमती मिनाक्षी सिंह	41
9.	अस्तित्व का गौरव	श्री अलोक सक्सेना	55
10.	सपनों की उडान	श्री मोहन खपरिये	59
11.	भाभा तुझे प्रणाम	श्रीमती अनुराधा दोडके	



संपादकीय...

निर्माण, सेवा, संपदा प्रबंधन
प्रकृति-अभियंता प्रेमिल बंधन
निदेशालय तव शत-शत नमन ....

"**निर्माण**" सौहार्द्रपूर्ण रिश्तों का ... आपसी प्रेम और सामंजस्य का ... एक दूसरे के प्रति आदर और सम्मान का.. मिलकर कठिनाइयों का सामना करने के साहस का .... सेवाभावी समर्पण का दूसरा नाम है निर्माण, सेवा एवं संपदा प्रबंध निदेशालय...

ऊर्जस्वी, कर्मठ मानवशक्ति के धनी निर्माण, सेवा एवं संपदा प्रबंधन निदेशालय के रजत जयन्ती विशेषांक हिंदी गृह पत्रिका "**निर्माण**" का 14वां अंक आपको समर्पित है .....

हर प्रतिकूल परिस्थिति में भी निदेशालय अडिग रहा है ....सेवा इकाई होने के नाते अपने प्रत्येक कर्त्तव्य को पूर्ण कर रहा है ....चाहे प्राकृतिक विपदा हो या कोविड-19 महामारी का प्रकोप... यह निदेशालय सतत अपनी पूर्ण कार्यक्षमता के साथ कार्य करता रहा है ... इससे राजभाषा हिंदी कार्यान्वयन भी अछूता नहीं है.... कोविड-19 लॉकडाउन में भी राजभाषा हिंदी में बराबर काम होता रहा... कोविड-19 संबंधी सभी दिशा-निर्देशों का समुचित पालन करते हुए राभाकास बैठकें, कार्यशालाएं, प्रतियोगिताएं एवं संयुक्त रुप से अन्य हिंदी गतिविधियां सफलतापूर्वक आयोजित की गईं..

राजभाषा हिंदी कार्यान्वयन के लिए निदेशालय ने सदैव प्रेरक व उत्साहवर्धक वातावरण प्रदान किया है...इसका प्रतिरूप है हिंदी गृह पत्रिका "**निर्माण**"....

"**निर्माण**" का यह अंक अपने आप में विशेष है ... निदेशालय की उत्तरोत्तर प्रगति का प्रमाण है.. इसमें प्रकाशित लेख के रचनाकारों ने इसे सजीव बनाया है ... प्रत्येक लेख/रचना व छायाचित्र निदेशालय की यशोगाथा व्यक्त करते हैं....

"**निर्माण**" के संपादक-मण्डल के सम्माननीय सदस्यों एवं रचनाकारों का हार्दिक आभार...

"**निर्माण**" के प्रबुद्ध पाठकों से अनुरोध है कि हिंदी गृहपत्रिका "**निर्माण**" में सुधार हेतु अपने प्रखर विचारों एवं अनमोल सुझावों से अवश्य अवगत कराएँ।

अनुराधा दोडके

श्रीमती अनुराधा दोडके
उपनिदेशक (राजभाषा)

संजय कुमार
SANJAY KUMAR
संयुक्त सचिव (प्रशासन एवं लेखा)
JOINT SECRETARY (A & A)

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
परमाणु ऊर्जा विभाग
अणुशक्ति भवन,
छत्रपति शिवाजी महाराज मार्ग,
मुंबई - 400 001.

GOVERNMENT OF INDIA
DEPARTMENT OF ATOMIC ENERGY
ANUSHAKTI BHAVAN,
CHHATRAPATI SHIVAJI MAHARAJ MARG,
MUMBAI - 400 001.



संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हुआ है कि निर्माण,सेवा एवं संपदा प्रबंध निदेशालय रजत जयंती के अवसर पर अपनी गृह पत्रिका "निर्माण" के विशेष अंक का विमोचन कर रहा है ।

मैं सनझता हूँ कि यह गृह पत्रिका केवल एक पुस्तिका मात्र नहीं है अपितु इसमें कार्यालय के 25 वर्षों के कर्यकाल से जुडी स्मृतियां होंगी, घटनाओं का चित्रण होगा। इसमें प्रकाशित रचनाएं आपके परिश्रम व मेहनत का दर्पण होंगी ।

मैं आशा करता हूँ कि "निर्माण" का यह अंक निदेशालय के अधिकारियों और कर्मचारियों की साहित्यिक सृजनशीलता को बढावा देगा तथा राजभाषा हिंदी में और अधिक कार्य करने के लिए प्रेरित करेगा ।

"निर्माण" पत्रिका के प्रकाशन से जुडे आप सभी को हार्दिक बधाई देता हूँ और इसकी सफलता की कामना करता हूँ ।

संजय कुमार
(सजयकुमार)

टेलीफोन / Telephone : 022-2284 0309 ▪ फैक्स / Fax : 022-2283 8640 / 2204 8476 ▪ ई-मेल / E-mail : jsaa@dae.gov.in

के. एन. व्यास
K. N. Vyas

भारत सरकार
Government of India

अध्यक्ष, परमाणु ऊर्जा आयोग
व
सचिव, परमाणु ऊर्जा विभाग
Chairman, Atomic Energy Commission
&
Secretary, Department of Atomic Energy



संदेश

मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि निर्माण,सेवा एवं संपदा प्रबंध निदेशालय इस वर्ष रजत जयंती समारोह मना रहा है । इस उपलक्ष्य में निदेशालय की वार्षिक हिंदी गृहपत्रिका "निर्माण" का प्रकाशन किया जा रहा है ।

निर्माण,सेवा एवं संपदा प्रबंध निदेशालय अपने आप में महत्वपूर्ण है .इसके कार्यकलाप चुनौतिपूर्ण और समयबद्ध हैं जिनकी पूर्णता निदेशालय का प्रत्येक कर्मचारी-अधिकारी पूरे समर्पण से करता है ।

आप सब की लगन और परिश्रम ने निदेशालय को राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्रदान की है. स्वच्छ, सुंदर, हरित अणुशक्तिनगर ने एक आदर्श टाऊनशिप के रूप में मिसाल कायम की है ।

राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन की दिशा में भी निदेशालय ने प्रशंसनीय योगदान दिया है । रजत जयंती विशेषांक "निर्माण" का यह अंक इसका साक्षी है ।

मैं आशा करता हूँ कि निदेशालय अपने विविध कार्य क्षेत्रों के साथ–साथ राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन, प्रचार-प्रसार में उत्तरोत्तर प्रगति करता रहे ।

हिंदी गृहपत्रिका "निर्माण" के संपादक मण्डल व इसके रचनाकार बधाई के पात्र हैं । हार्दिक शुभकामनाओं सहित ।

के.एन.व्यास

(के.एन.व्यास)

अणुशक्तिभवन, छत्रपति शिवाजी महाराज मार्ग, मुंबई - 400 001. भारत • Anushakti Bhavan, Chhatrapati Shivaji Maharaj Marg, Mumbai - 400 001. India
दूरभाष/Phone:+(91) (22) 2202 2543 • फैक्स/Fax: +(91) (22) 2204 8476 / 2284 3888
ई मेल/E-mail: chairman@dae.gov.in



अध्यक्ष की कलम से...

निर्माण, सेवा एवं संपदा प्रबंध निदेशालय की हिंदी गृह पत्रिका "निर्माण" का 14वां अंक आपको सौंपते हुए मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। निदेशालय की रजत जयंती समारोह पर "निर्माण" गृह पत्रिका का विमोचन किया जा रहा है, यह मेरे लिए आनंद, उल्लास और गरिमा की बात है ।

"निर्माण" गृह पत्रिका का यह अंक मेरी दृष्टि से ऐतिहासिक अंक होगा क्यूंकि इसमें निदेशालय के 25 वर्षों के कार्य-प्रवास का समावेश किया गया है। इसमें रोमांचक अनुभवों का संस्मरण मिलेगा और साथ ही पूर्व निदेशकों के नेतृत्व में इस कार्यालय की हुई उनति, प्रगति उन्हीं की कलम से हमें पढने को मिलेगी। इसमें 25 वर्षों की स्मृतियों को जीवंत करनेवाले सुंदर छायाचित्र हैं। इन 25 वर्षों के दौरान निसेसंप्रनि ने कई महत्वपूर्ण परियोजनाओं का अभिकल्पन और निर्माण किया है, जिनमें से कुछ परियोजनाओं को राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कार भी प्राप्त हुए हैं।

यह गौरव की बात है कि आज निदेशालय के कार्यों को राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिली है, इसका सारा श्रेय हमारे निदेशालय के प्रत्येक कार्मिक को जाता है। इन्हीं की मेहनत के दर्शन हमें स्वच्छ, सुंदर व हरित अणुशक्तिनगर टाऊनशिप में होते हैं।

"निर्माण" गृह पत्रिका में प्रकाशित विविध साहित्यिक रचनाएं और तकनीकी लेख हमारे वैज्ञानिकों व रचनाकारों की सृजनात्मकता तथा राजभाषा हिंदी के प्रति प्रेम और आदर को प्रदर्शित करती हैं।

मैं, "निर्माण" गृह पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मण्डल और हिंदी अनुभाग का विशेष आभार प्रकट करता हूँ।

मैं, निदेशालय के निरंतर विकास और प्रगति तथा आप सबके स्वस्थ जीवन की कामना करता हूँ।

भरत कुमार जैन
निदेशक, निसेसंप्रनि एवं अध्यक्ष,राभाकास

निर्माण सेवा संपदा प्रबंध निदेशालय - संक्षेप में

प्रस्तावना

परमाणु ऊर्जा विभाग ने वर्ष 1965 में ट्रॉम्बे टाउनशिप प्रोजेक्ट के रूप में एक घटक इकाई की स्थापना की थी, जिसमें इसके मुंबई में स्थित विभिन्न इकाइयां वैज्ञानिकों, टेक्नोक्रेट और कर्मचारियों के आवास के लिए देवनार (अब अणुशक्तिनगर) में स्वतंत्र आवास परिसर की स्थापना और जिम्मेदारी सौंपी गई थी। अप्रैल 1982 में इसे कंस्ट्रक्शन एंड सर्विसेज ग्रुप (सी एंड एस ग्रुप) के रूप में गठित किया गया था। सन् 1972 से संपदा प्रबंधन निदेशालय (डीईएम) आवास कॉलोनियों के आबंटन और अनुरक्षण कर रहा था। इसके बाद, दिनांक 1 जून 1996 को इस इकाई का विस्तार वर्तमान निर्माण, सेवा संपदा प्रबंध निदेशालय में किया गया।

निर्माण, सेवा एवं संपदा प्रबंध निदेशालय, परमाणु ऊर्जा विभाग की विभिन्न इकाईयों के साथ-साथ उसकी सहायता प्राप्त संस्थानों तथा अन्य सरकारी विभाग जैसे विज्ञान/ इलेक्ट्रॉनिकी, जैव-प्रौद्योगिकी, मानव संसाधन विकास आदि के लिए आवास, छात्रावास, विद्यालय, चिकित्सालय, प्रयोगशाला तथा अन्य सार्वजनिक भवनों के निर्माण, जन-स्वास्थ्य, विद्युत, वातानुकूलन तथा संवातन कार्यों की योजना, अभिकल्पन, अभियांत्रिकी, निष्पादन, परीक्षण आदि कार्यो के लिए उत्तरदायी है।

निसेसंप्रनि के विभिन्न समूह

- योजना एवं अभिकल्पन समूह
- केंद्रीकृत मात्रा प्रभाग
- निर्माण समूह
- अनुरक्षण समूह
- सामान्य सेवा समूह
- संपदा प्रबंधन समूह

विभिन्न समूहों की गतिविधियां :-

योजना एवं अभिकल्पन समूह :

योजना और डिजाइन समूह वास्तुकला, संरचनात्मक, सार्वजनिक स्वास्थ्य, विद्युत और यांत्रिक कार्यों की योजना, डिजाइनिंग में शामिल है जिसमें शामिल है

- उपयोगकर्ता की आवश्यकता को एकत्रित करना
- ड्राईंग तैयार करने सहित विस्तृत योजना एवं अभिकल्पन
- कार्य प्रगति के दौरान निष्पादन समूह को नियोजन सहायता प्रदान करना
- योजना हेतु नए सामान, डिझाइन इत्यादि का अनुमोदन लेना।

केंद्रीकृत मात्रा प्रभाग :-

केंद्रीकृत मात्रा प्रभाग में शामिल है :

- निसेसंप्रनि और उपयोगकर्ता की परियोजना के सभी पूंजीगत परियोजनाओं से संबंधित अनुमान तैयार करना, निविदा लेना और कार्य आदेशों को अंतिम रूप देना।
- निसेसंप्रनि और उपयोगकर्ता की परियोजना की सभी पूंजी परियोजनाओं से संबंधित अनुमान तैयार करना, निविदा लेना और कार्य आदेशों को अंतिम रुप देना।
- अभियांत्रिकी सेवा समूह से संबंधित निविदा एवं कार्य आदेश को अंतिम रुप देना।
- सभी कार्यों से संबंधित भिन्नता, विचलन, अतिरिक्त मद प्रस्तावों, अंतिम विस्तार प्रस्तावों और तकनीकी जांच आदि को अंतिम रुप देना।

निर्माण समूह :-

इस समूह के विभिन्न कार्यों में भवनों, उपकरणों आदि के निर्माण, खरीद, स्थापना, परीक्षण कमीशनिंग सहित निष्पादन में निम्न कार्य शामिल है :

- निष्पादन हेतु अनुबंध संभालना
- कार्यों का दिन-प्रतिदिन पर्यवेक्षण
- सामग्री का पूर्व निरीक्षण, मटेरियल के टेस्टिंग सहित साईट पर गुणवत्ता नियंत्रण

- रिकार्डिंग माप
- बिल तैयार करना
- कार्य की प्रगति का मानिटरन
- साईट के रिकार्ड/ रजिस्टरों का रखरखाव
- उपकरण का टेस्टींग, कमिशनन
- कार्य की प्रगति में तेजी लाने के लिए नए उपकरणों, औजारों का उपयोग
- भवनों/ उपकरणों को अनुरक्षण समूह/ उपयोगकर्ता को सौंपना।
- वर्तमान में उपरोक्त तीन समूह विभिन्न परियोजनाओं के लिए काम कर रहे हैं जैसे 312 फ्लैट टाइप _V, 356 फ्लैट टाइप III, IV और V, । एचबीएनआई / बीएआरसी प्रशिक्षुओं के लिए छात्रावास का निर्माण , वी.एस. भवन का विस्तार, वैजाक में टीएमसी के लिए 100 बिस्तरों वाले अस्पताल का निर्माण, बीएआरसी में ब्रिट के लिए विखंडन आधारित 99Mo उत्पादन सुविधा के लिए भवन, दक्षिण साइट, औंध-हिंगोली (जिला), महाराष्ट्र में लिगो-इंडिया परियोजना के लिए भूमि का अधिग्रहण, कोलकाता में वीईसीसी के लिए, एसआईएनपी कोलकाता में, और हरियाणा में जीसीएनईपी, मैसूरु में आरएमपी-बीएआरसी और कर्नाटक के चल्लाकेरे में एसएमएफ टाउनशिप में विभिन्न कार्य।

अनुरक्षण समूह :-

इस समूह में अभियांत्रिकी सेवा प्रभाग, बागवानी और साजसज्जा अनुरक्षण अनुभाग जिसमें 9980 फ्लैटों के, वीएस भवन, एईआरबी, एईईएस भवन में नागरिक रखरखाव/ जन अनुरक्षण शामिल है। साथ ही मुंबई के विभिन्न क्षेत्रों जैसे अणुशक्तिनगर, चेंबूर, बांद्रा, शिवाजी पार्क, घाटकोपर, मुलुंड, वर्ली में, पेडर रोड, मालाबार हिल्स, कोलाबा, ओवाईसी, नई दिल्ली में गेस्ट हाउस आदि की सामान्य सेवाएं शामिल हैं।

इस समूह की जिम्मेदारियां है :

- भवन संरचना की सुदृढ़ता और सुरक्षा सुनिश्चित करने और उनकी मजबूती को बढ़ाने के लिए निवारक अनुरक्षण और विशेष मरम्मत
- भवनों के निवास्यता और सौंदर्य को सुनिश्चित करने के लिए समय-समय पर मरम्मत और अनुरक्षण ।
- भवनों में मानसून और आंतरिक रिसाव को रोकने के लिए निवारक उपाय।
- आंतरिक एवं बाह्य पेटिंग ।
- अनुमोदित मानदंडों के अनुसार सुविधाओं का नवीनीकरण और उन्नयन कार्य।
- सड़कों, फुटपाथों, स्टार्म वॉटर की नालियों आदि जैसे बुनियादी ढांचे का रखरखाव और उन्नयन। ऊपर वर्णित भवनों के उपयोगकर्ताओं के लिए समय पर, त्वरित और कुशल सेवा सुनिश्चित करने के लिए, ईएसडी ने उपयुक्त शिकायत रिकॉर्डिंग के साथ अनुरक्षण यूनिटों का व्यापक रूप से फैला हुआ नेटवर्क प्रदान किया है और निगरानी प्रणाली।
- रिक्त फ्लैटों की मरम्मत और सफेद/ रंग की वाशिंग पेंटिंग आदि सुनिश्चित करना ताकि इसे पुनः आबंटन/ आवास बदलने के लिए न्यूनतम संभव समय में आबंटन के लिए उपयुक्त बनाया जा सके।
- अणुशक्तिनगर अवासीय कल्याण संघ/ एसोसिएशन (आरवा) और अन्य व्यक्तिगत बिल्डिंग एसोसिएशन के साथ नियमित रूप से विचार-विमर्श करें और क्षेत्र के विकास के लिए कार्रवाई शुरू करें।
- अणुशक्तिनगर में एक लाख वर्ग मीटर से अधिक हरे-भरे मैदानों और खेल के मैदानों का रखरखाव।
- पर्यावरण को समृद्ध करने और कॉलोनी के सौंदर्य, वनस्पतियों और जीवों को बचाएं रखने के लिए अन्य संबंधित कार्य करना।
- कालोनी में अपशिष्ट प्रबंधन और सफाई का रखरखाव।

सामान्य सेवा समूह (जीएसएस) :–

यह समूह आवासीय भवनों, सार्वजनिक भवनों आदि के विद्युत, यांत्रिक, सार्वजनिक स्वास्थ्य कार्यों से संबंधित बाहरी सेवाओं के संचालन और रखरखाव की देखभाल करता है। जीएसएस लिफ्टों की सेवाओं और रखरखाव, कार्यालय परिसर, अतिथि गृह आदि के लिए एयर कंडीशनिंग सिस्टम भी देखता है।

निम्नलिखित कार्यों की प्रकृति है जिन्हें मोटे तौर पर वर्गीकृत किया गया है:

I) विद्युत एवं यांत्रिकी से संबंधित उन्नयन और पुनर्सज्जा कार्य

ii) उन्नयन और पुनर्सज्जा कार्यों के तहत, भवन और सेवाओं की हालात/खराबी के अनुसार फ्लैटों की आंतरिक और बाहरी रीवायरिंग की जाती है। आवश्यकता के अनुसार सब-स्टेशनों, लिफ्टों और केबलों आदि का उन्नयन भी किया जाता है। साथ ही, पाइप लाइनों की हालात/खराबी और स्थिति के आधार पर जलापूर्ति लाइनों/सीवर लाइनों की मरम्मत/प्रतिस्थापन का कार्य किया जाता है।

iii) संरक्षा और सुरक्षा प्रणाली को बढ़ाना।

iv) संरक्षा एवं सुरक्षा उन्नयन कार्य के अंतर्गत अग्नि हाइड्रेंट सेवाओं का प्रावधान, सुरक्षा एवं अभिगम नियंत्रण प्रणाली का प्रावधान, सब स्टेशनों का उन्नयन आदि किया जाता है।

v) विद्युत, जल आपूर्ति, एवं सिवेज से संबंधित अनुरक्षण कार्य .

vi) अनुरक्षण कार्य के तहत, लिफ्ट, फायर अलार्म सिस्टम, डीजी सेट, सब-स्टेशन उपकरण जैसे बिजली के सामान की नियमित और नियमित सर्विसिंग / मरम्मत की जाती है। साथ ही पंप, स्टार्टर, मोटर, वॉल्व, ब्लोअर, पानी/सीवर पाइप लाइन आदि की मरम्मत भी की जाती है। पानी की आपूर्ति न होने/कम आपूर्ति से संबंधित शिकायतों, निर्माण और उद्यान जल आपूर्ति से संबंधित शिकायतों, सीवरेज निपटान लाइनों से संबंधित शिकायतों और सुरक्षा प्रकाश व्यवस्था से संबंधित विद्युत शिकायतों पर भी दिन-प्रतिदिन के आधार पर कार्रवाई की जाती है।

vii) विभागीय वाहनों का रखरखाव। विभागीय वाहनों की सर्विसिंग और रखरखाव नियमित आधार पर की जाती है। निर्माताओं के दिशा-निर्देशों के अनुसार वाहनों की ओवरहालिंग भी नियमित आधार पर की जाती है।

संपदा प्रबंधन समूह :–

प्रशासन और लेखा शामिल हैं-

1) प्रशासन के महत्वपूर्ण अनुभाग है:

i) आबंटन,

ii) प्रवर्तन,

iii) वसूली,

iv) स्थापना,

v) सतर्कता,

vi) भर्ती,

vii) सामान्य,

viii) हिंदी,

ix) भूमि

प्रशासन निम्नलिखित सेवाएं प्रदान करने के लिए समर्पित है:

परमाणु ऊर्जा विभाग की विभिन्न इकाइयों के वेतन एवं लेखा अधिकारियों के माध्यम से विभागीय आवास का आबंटन, लाइसेंस शुल्क और संबद्ध शुल्क की वसूली की निगरानी, परिसर के आबंटन के नियमों और विनियमों को लागू करना। वर्तमान में अणुशक्तिनगर टाउनशिप और मुंबई के अन्य स्थानों में विभिन्न श्रेणियों के 9980 फ्लैट हैं।

अणुशक्तिनगर स्थित पऊवि टाउनशिप में विभिन्न स्थानों पर खरीदारी सुविधाओं के आबंटन और वसूली को बनाए रखना। टाउनशिप के निवासियों और विभाग के बाहर रहने वाले कर्मचारियों के व्यक्तिगत और सामुदायिक कार्यों के लिए पुराने सामुदायिक केंद्र, लॉन, स्टिल्ट आदि का आबंटन। यह गतिविधि देश भर के विभिन्न राज्यों के लोगों के विभिन्न वर्गों के बीच सांप्रदायिक सद्भाव और सौहार्दपूर्ण और स्वस्थ संबंधों को बढ़ावा देने के लिए एक लंबा सफर तय करेगी। वी. एस भवन में विभागीय कैंटीन और नई दिल्ली अतिथि-गृह ध्रुव और मुंबई में ज़र्लीना, आनंद भवन का प्रबंधन।

मुंबई, नवी मुंबई, भुवनेश्वर, दिल्ली शहर में स्थित विभागीय भूमि और संपत्तियों का प्रबंधन, यानी बाहरी लोगों से और उन्हें जमीन और संपत्तियों को पट्टे पर देना, पट्टे के मुआवजे का भुगतान / प्राप्ति, सेवा कर का भुगतान, भूमि अभिलेखों का रखरखाव आदि।

2) लेखा :

निसेसंप्रनि का वित्त और लेखा स्कंध आंतरिक और बाहरी ग्राहकों की इष्टतम संतुष्टि प्राप्त करने के लिए समयबद्ध आधार पर अपने कर्मचारियों, ठेकेदारों आदि को वित्तीय सेवाएं प्रदान करता है और स्वीकृत बजट अनुमानों के भीतर व्यय को बनाए रखने के लिए प्रतिबद्ध है। इसका उद्देश्य नियमों और नियमावली के ढांचे के भीतर सर्वोत्तम सेवाएं प्रदान करना और विभिन्न वर्गों में निरंतर समन्वित प्रयास करना है। यह व्यक्तिगत दावों और विभिन्न प्रकार के बिलों का सुचारू निपटान प्रदान करता है और निसेसंप्रनि में निदेशक और वरिष्ठ अधिकारियों को वित्तीय सलाह प्रदान करता है। सामान्य कार्यों के अलावा, एनईएफटी/ आरटीजीएस के माध्यम से ठेकेदारों का भुगतान, बैंक के माध्यम से शत-प्रतिशत वेतन भुगतान और प्रशासन और लेखा के लिए एकीकृत प्रणाली लागू की गई है।

प्रशिक्षण प्रभाग समूह:–

यह समूह राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय बाजार में नवीनतम विकास के साथ तालमेल रखने के लिए निसेसंप्रनि कर्मियों के लिए सिविल, इलेक्ट्रिकल, मैकेनिकल, आईटी प्रकृति की नई वस्तुओं को प्रस्तुत करने की व्यवस्था भी करता है। यह मानव और उपकरणों की अधिक सुरक्षा के साथ बेहतर कारीगरी के लिए तकनीशियनों को प्रशिक्षण भी देता है। यह समूह पूरे निसेसंप्रनि कार्यों की सभी परियोजनाओं की निगरानी भी करता है और निसेसंप्रनि की प्रिस (जी) रिपोर्ट तैयार करने सहित पऊवि के साथ समन्वय करता है।

कृपया निम्नलिखित का अनुपालन सुनिश्चित करें
Please ensure the compliance of following

1. हिंदी में प्राप्त पत्र, आवेदन, अपील, अभ्यावेदन आदि पत्राचार का उत्तर हिंदी में ही दिया जाएं।
   Replies to letters, applications, appeal, representations, or any other communication received in Hindi should be in Hindi.

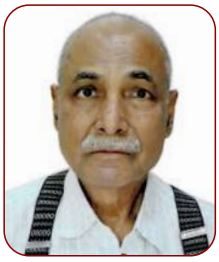
2. सभी मैन्युअल, संहिता और प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य हिंदी और अंग्रेजी द्विभाषी रुप में बनवाएं जाएं।
   All manuals, codes and other procedural literature should be in Hindi and in English in Diglot form.

3. नामपट्ट, मोहरें, कार्यालय का प्रतीक चिह्न, पत्र शीर्ष, विजिटिंग कार्ड, कार्यालय की मुद्राएं तथा जनता की सूचना के लिए लगाएं जानेवाले नामपट्टों, सूचना पट्टों आदि को द्विभाषी / त्रिभाषी रुप में बनवाया जाएं।
   Name plates, stamps, office logo, letter heads, visiting cards, office seals and name plates and notice boards for information of the public etc. should be in bilingual/ trilingual form.

4. सरकारी समारोहों के बैनर और निमंत्रण पत्र हिंदी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं में हों। आवश्यकतानुसार इनमें प्रादेशिक भाषा का भी उपयोग किया जाएं।
   Banners and Invitation Cards of all govt. functions should be in Hindi and English both. Where necessary, regional language should also be used.

5. सभी परिपत्र, रजिस्टरों के प्ररुप और शीर्षक, फाइल कवरों, लिफाफों सहित अन्य स्टेशनरी मदों पर मुद्रित मैटर, लेबल तथा कोई भी मुद्रित सामग्री द्विभाषी हो।
   All the forms, headings and format of register, mater printed on stationery items including file overs, envelopes and any other printed material should be bilingual.

निर्माण सेवा संपदा प्रबंध निदेशालय - अविस्मरणीय कार्य अनुभव



श्री ए. के. गुप्ता
पूर्व निदेशक, निसेसंप्रनि

मैंने दिनांक 1 जून 1995 को निर्माण और सेवा (सी एंड एस) समूह के निदेशक के रूप में श्री जे. ए. प्रसाद से पदभार ग्रहण किया । श्री जे. ए. प्रसाद ने मुझे मुंबई और भारत में अन्य स्थानों में सी एंड एस समूह की सभी गतिविधियों के बारे में पर्याप्त जानकारी दी जैसे हैदराबाद, वीईसीसी/एसआईएनपी कलकत्ता, एनसीसीएस पुणे, आईओपी भुवनेश्वर, एएमडी नागपुर और शिलॉंग। उन्होंने मुझे इन कार्यों के साथ साथ उन इकाइयों (जिनके लिये काम चल रहा था) के निदेशकों एवम प्रमुखों; अधिकारियों/ कर्मचारियों से परिचित कराया था । उन्होंने मेरा परिचय प्रमुख अधिकारी, मुख्य अभियंता (ई एंड एम) - श्री चंद्रमौली; अतिरिक्त मुख्य अभियंता - श्री अरोड़ा, श्री हलदर, श्री राजन्ना; परियोजना अभियंता - श्री वाघ और श्री मगलम; प्रमुख ईएसडी- श्री यूसुफ; अधीक्षक - श्री खानोलकर से करवाया।

हमारे वरिष्ठ अधिकारियों के साथ पहली बैठक में मुझे उनके नियंत्रण में गतिविधियों के बारे में जानकारी दी गई थी (बीएआरसी के वरिष्ठ वास्तुकार श्री सावकर ए एंड सीईडी समूह द्वारा सहायता प्रदान की गई थी)।

मैंने अनुरोध किया और सुझाव दिया कि मुझे साइटों आदि का दौरा करने में कुछ समय (कुछ सप्ताह) लग सकता है। इस बीच, उनके द्वारा तैयार की गई योजनाओं के अनुसार काम जारी रह सकता है और काम कर रहा है। तथापि, यह सुनिश्चित करने के लिए कि प्रगति की अनुसूची के अनुसार पालन किया जाएगा और किसी भी कठिनाई/ सहायता को आवश्यक कार्रवाई के लिए तुरंत मेरे संज्ञान में लाया जा सकता है।

दो सप्ताह के भीतर मुझे संपदा प्रबंध निदेशालय की अतिरिक्त जिम्मेदारी सौंपी गई जो मेरे लिए प्रबंधन का एक नया क्षेत्र था। इस कार्य में कॉलोनी के साथ-साथ मुंबई में सभी डीएई भवन के क्वार्टरों का वर्गीकरण एवं आबंटन और सुरक्षा सम्मिलित थे।

मेरे कार्यकाल में सम्पादित मुख्य कार्य निम्नानुसार है:

संपदा प्रबंधन :

1. मुंबई में फ्लैटों (आवास) की श्रेणियों का गठन।
2. कर्मचारी संघ/ अधिकारी संघ/ पऊवि के बीच मुंबई उच्च न्यायालय में कानूनी विवादों का निपटारा।
3. अणुशक्ति नगर के निवासियों के लिए आवास और अन्य सुविधाओं जैसे अस्पताल, स्कूल, बाजार और अन्य सामान्य सुविधाएं उपलब्ध कराना; सामाजिक, धार्मिक, मनोरंजक सुविधाएं, बाजार में शौचालय की सुविधा और सार्वजनिक स्थानों जैसे बैंक, डाकघर आदि के लिए उच्च स्तरीय समिति का गठन ।
4. प्रसाधन अनुरक्षण ।
5. विभिन्न श्रेणियों की प्राथमिकता सूची का कम्प्यूटरीकरण, सूचियां तैयार करना, प्रचार-प्रसार, आवंटन प्रक्रिया में पूर्ण पारदर्शिता की शुरुआत।
6. दोनों यूनियनों जैसे अधिकारी/ स्टाफ के साथ कालोनी में सामान्य सुविधाओं के उपयोग संबंधी खुली पारदर्शी बातचीत।
7. डीईएम / सी एंड एस प्रशासन / लेखा का एकीकरण ।
8. मुंबई में सभी इकाइयों से सभी स्तरों पर अधिकारियों/ कर्मचारियों के डेटा का संग्रहण।
9. मुंबई में सभी कर्मचारियों/ अधिकारियों के लिए अतिरिक्त आवास का निर्माण (अतिरिक्त 400 फ्लैटों का समावेश)
10. यूपीसी से अपने स्टाफ सदस्यों को सामान्य प्राथमिकता सूची में शामिल करने के लिए अतिरिक्त धनराशि का अनुरोध।

11. मुंबई में अणुशक्ति नगर और अन्य क्षेत्रों में ऊर्जा नियमों की एकरूपता (अर्थात एलटी, नियम)

12. वसूली में आसानी के लिए विद्युत/ जल प्रभारों का कम्प्यूटरीकरण।

अभियांत्रिकी :

अ. अणुशक्तिनगर की विभिन्न फॅसिलिटियों का प्रचालन एवं अनुरक्षण

क) विद्युतीय

ख) जलापूर्ति

ग) सामान्य बुनियादी संरचना और आवास

घ) एजिंग / विश्वसनीयता / संचालन और रखरखाव की सुरक्षा के कारण बिजली और पानी की आपूर्ति का उन्नयन।

1. सभी ऊंची इमारतों में लिफ्ट उन्नयन।

2. बिजली की विफलता / आउटेज, ग्रिड में उतार-चढ़ाव के दौरान लिफ्ट संचालन सुनिश्चित करने के लिए आपातकालीन डी.जी. सेट प्रदान करना।

3. मौजूदा सब स्टेशनों में संशोधन - ओ एंड एम में उच्च विश्वसनीयता और आसानी सुनिश्चित करने के लिए रिंग मेन सिस्टम का गठन।

4. कॉलोनी सबस्टेशनों के लिए बीएआरसी 110 केवी सबस्टेशन के साथ फीडर का इंटरकनेक्शन।

5. टाटा पावर कंपनी के लिए कॉलोनी को बिजली वितरण एजेंसी के रूप में बिजली की आपूर्ति को शामिल करना, जिसमें उन्हें आवंटित क्षेत्रों के लिए स्ट्रीट लाइटिंग शामिल है, जिससे विभाग को बिना किसी लागत के लो टेंशन सप्लाई प्रदान की जा सके जिससे काफी वित्तीय बचत हो सके और जिसका उपयोग मौजूदा सुविधाओं के उन्नयन हेतु किया जा सके।

6. फीडबैक सुविधाओं के साथ नवनिर्मित भवनों में बिजली/ पानी की आपूर्ति के मुद्दे से निपटना।

7. रखरखाव और बेहतर सुरक्षा को आसान बनाने के लिए इमारतों की छतों का उपयोग करके एरिया लाइटिंग की अवधारणा शुरू की गई थी।

8. आरक्षित प्रणाली को बढ़ाने के लिए वितरण/ अग्निशमन प्रणालियों के लिए अतिरिक्त जल भंडारण/ पंपिंग सिस्टम बनाना।

9. उच्च विश्वसनीयता/ उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए ओवरहेड वॉटर टैंकों में फ्लोट वाल्व का संशोधन।

10. नवीनतम ऊर्जा दक्ष फिक्स्चर का उपयोग करते हुए लिफ्टों, कार्यालय प्रकाश व्यवस्था, सुरक्षा प्रकाश क्षेत्रों की रोशनी आदि जैसी ढांचागत सुविधाओं में विद्युत ऊर्जा खपत में ऊर्जा संरक्षण का परिचय।

11. समर्पित टेलीफोन लाइनों के माध्यम से त्वरित प्रतिक्रिया प्रणाली की स्थापना।

ब . अवरोधों की पहचान करना और उनका समाधान करना

1. समन्वय, निगरानी और निष्पादन के लिए कंप्यूटरों का उपयोग।

2. कंप्यूटर उपयोग में व्यवस्थापक/ इंजीनियरिंग अधिकारियों/ कर्मचारियों का प्रशिक्षण।

3. बाहरी कार्यों और दूरस्थ स्थलों से मानव शक्ति का संवर्धन, कंप्यूटर मे विशेषता प्राप्त इकाइयां।

   1. बीएआरसी/ एनपीसी आदि विभिन्न इकाइयों के माध्यम से जनशक्ति संसाधन।

   2. संबंधित विभागों से लॉजिस्टिक संसाधन।

      i. कार्यालय और संचार सुविधाएं

      ii. यातायात

      iii. कार्य स्थलों के पास आवास सुविधा।

      iv. कंप्यूटर/ टाइपिस्ट/ स्टेनो आदि।

      v. बिजली/ पानी की सुविधा आदि।

4. उपयोगकर्ता की आवश्यकताएं

5. प्रधान कार्यालय/ उपयोगकर्ताओं के साथ संचार सुविधा।

6. आवधिक समीक्षा।

7. इंजीनियरिंग मैन पावर अर्थात आर्किटेक्चरल/ स्ट्रक्चरल इंजीनियर अपनी क्षमता में वृद्धि कर रहे हैं। निर्माण के दौरान उपयोगकर्ता इंजीनियरिंग कर्मचारियों को उनके प्रशिक्षण और बाद में पूर्ण किए गए कार्यों के ओ एंड एम के लिए शामिल करना।

8. कंप्यूटर, प्रशिक्षण, नवीनतम सॉफ्टवेयर को शामिल करना।

9. 3 डी मॉडलिंग, वॉकथ्रू ड्रग्स का उपयोग।

10. उपयोगकर्ता, प्रतिनिधि सहित परियोजना समन्वय समिति।

11. शटरिंग/ स्कैफोल्डिंग तकनीकों में आरएमसी (रेडी मिक्स सीमेंट) संशोधन की शुरूआत जैसी उपलब्ध (नवीनतम) निर्माण तकनीकों/ विधियों में सुधार।

12. चूंकि सीमेंट/ इस्पात का विकेंद्रीकरण किया गया था, इसलिए हमने खरीद, भंडारण आदि की विभागीय आपूर्ति बाधाओं से बचने के लिए ठेकेदारों द्वारा आपूर्ति को शामिल किया।

13. निर्माण चित्र समय पर और चरणबद्ध जारी करना।

14. दरवाजे, खिड़कियां, सार्वजनिक स्वास्थ्य फिटिंग जैसी सहायक सामग्री की योजना पहले से ही बना लें।

15. संरचनात्मक कार्यों के साथ-साथ सभी संभव स्तरों पर ईंटवर्क, विद्युत कार्य, फर्श आदि पर समानांतर कार्य करना।

16. विद्युत/ जल आपूर्ति, सेटअप डब्ल्यूबीएम सड़कों (अस्थायी सड़कों), नालियों आदि जैसी बुनियादी सुविधाओं का साइट स्थितियों के अनुसार एक साथ विकास। ठेकेदारों के कर्मचारियों के भंडारण/ कार्य के लिए क्षेत्रों की पहचान और कंक्रीट/ स्टील/ मचान आदि की मशीन की आवश्यकताएं।

सी. वित्तीय योजना - समय पर काम पूरा करना निर्माण और उसके आपूर्तिकर्ताओं की वित्तीय ताकत पर भी निर्भर है। परियोजनाओं को समय पर पूरा करने के लिए समय पर भुगतान करना महत्वपूर्ण है। उचित समय पर ड्राईंग्स (आर्क/ स्ट्रक्चरल) की अनुपलब्धता के कारण विलम्ब।

अंत में, मैं इस निदेशालय के अपने सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को मन:पूर्वक धन्यवाद देना चाहूंगा जिन्होंने निदेशालय को ऊंचाई की चरम सीमा तक उभरने में अपनी स्वेच्छा और तन-मन से सहयोग दिया है।

मैं, परमाणु ऊर्जा विभाग को भी धन्यवाद देता हूँ जिनके मार्गदर्शन और सहयोग से निसेसंप्रनि की गतिविधियों को उडान मिली है। मैं यही मनोकामना करता हूँ कि निसेसंप्रनि का विकास होता रहे ताकि यह परमाणु ऊर्जा विभाग के विजन को सार्थक करने के लिए कार्यशील रहे।

डीसीएसईएम के साथ मेरी कार्य यात्रा - घटनापूर्ण साहचर्य



के. एस. वाघ
पूर्व निदेशक, निसेसंप्रनि

डीसीएसईएम -एक जोशपूर्ण व उद्योगी परियोजना का प्रबंधन करनेवाला सक्षम संगठन; उसके 25 वर्ष का कार्यकलाप, घटनापूर्ण कार्यपद्धति, उत्पादकता से भरा हुआ; और इसी से संबद्ध परमाणु ऊर्जा विभाग के साथ मेरे 36 वर्षों में से डीसीएसईएम के साथ 13 वर्षों का मेरा जुड़ाव; सभी मुझे बीते समय की याद दिलाते हैं। मुझे भावुक करते हैं और उससे भी बढ़कर मुझे गौरवान्वित करते हैं। अब मुझे इस संगठन की खुशहाली व समृद्धि के 25वें वर्ष को देखने का अवसर मिला है। मैं जो अनुभव कर रहा हूँ, उसे व्यक्त करने के लिए मेरे पास पर्याप्त शब्द नहीं हैं। पहले दिन से लेकर आज रजत जयंती के इस वर्ष तक कई लोग इस संगठन से जुड़े हुए हैं - यह बड़े गर्व की बात है। भावविभोर होकर इन पलों को मैंने संजोए रखा है।

यूनिट की स्थापना

मेरी स्मृतियां, मुझे वर्ष 1994 के समय में वापस ले जाती है, जब मैं पूर्ववर्ती निर्माण और सेवा समूह (सी एंड एसजी) का एक हिस्सा बन गया था। इस समूह का न केवल परमाणु ऊर्जा विभाग के लिए, बल्कि कई अन्य सरकारी संगठनों के लिए परियोजना प्रबंधन में विशेषज्ञता के साथ निर्माण कार्यों को सुपूर्द करने का एक अच्छा ट्रैक रिकॉर्ड था। समानांतर रूप से एक और संगठन था, संपदा प्रबंधन निदेशालय जो संपत्ति प्रबंधन, आधिकारिक आवासों के आबंटन, सुरक्षा आदि के कार्यों को देखता था। यह वह दौर था, जब हमें शायद ही यह एहसास हुआ था कि दो साल की अवधि के भीतर दोनों संगठनों को मिलाकर एक बड़ी युनिट की स्थापना की जाएगी - निर्माण, सेवा और संपदा प्रबंधन निदेशालय (DCSEM)।

यह वैसा ही था जैसा अंग्रेजी कवि अल्फ्रेड टेनीसन ने परिवर्तन के बारे में कहा था:-

"Old order changeth, yielding place to new,
And God fulfills himself many ways.
Lest one good custom should corrupt the world."

तो, यह उस महान परिवर्तन का हिस्सा था जो अच्छे भविष्य के लिए आवश्यक था। इस परिवर्तन का कारण क्या था? मेरा मानना है कि इस परिवर्तन का कारन था श्री अरुण कुमार गुप्ता, तत्कालीन निदेशक, सी एंड एस समूह, का आत्मविश्वास। श्री अरुण कुमार गुप्ता, नवगठित डीसीएसईएम के पहले निदेशक हैं।

पहले पांच वर्ष

मैं आपको बताना चाहता हूँ कि किस वजह से यह यूनिट सबसे जीवंत,जोशीली और सफल संगठन बन गई? यह श्री गुप्ता जी की दूरदृष्टि, कठोर अनुशासन का पालन और समग्र दृष्टिकोण था। सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण कार्य जो उन्होंने किया वह था आवासीय फ्लैटों के आबंटन के बहुत जटिल मुद्दे को सरल बनाने का कार्य आरंभ किया। उन्होंने एक डेटा प्रबंधन प्रणाली पर काम किया, प्रक्रिया को कम्प्यूटरीकृत किया और इसे फुलप्रूफ बनाया। यह किसी भी तरह से आसान काम नहीं था।

नई चुनौतियों के साथ जल्द ही एक नए संगठन की स्थापना की गई। लेकिन निदेशक ने सावधानी और दृढ दृष्टिकोण अपनाया। उन्होंने इंजीनियरिंग सेटअप का अध्ययन किया। उनके आकलन में बहुत अधिक संभावनाओं के साथ एक समृद्ध इंजीनियरिंग और जनशक्ति पूल मौजूद था। उन्होंने इसके साथ न्याय किया और इसमें से उत्कृष्ट परिणाम निष्पादित करने का निर्णय लिया। जैसा कि मुझे याद है, पहली चुनौती कैंसर में प्रगत उपचार, अनुसंधान और शिक्षा केंद्र (ACTREC) के निर्माण के लंबे समय से रुके हुए प्रस्ताव को पुनर्जीवित करना था। यह महसूस किया गया कि परियोजना का आकार और गुणात्मक पहलु डीसीएसईएम को संभालने के लिए बहुत अधिक जिम्मेदारी के थे। लेकिन चुनौती को साहसपूर्वक स्वीकार किया गया। कार्यान्वयन के प्रबंधन की पद्धति में और दृष्टिकोण में एक प्रभावी

परिवर्तन किया गया। परिणाम स्वरूप यह मनोबल बढ़ाने वाला एक ऐसा कार्य था जिसे बहुत सराहा गया।

महत्वपूर्ण रूप से मैं यहां उल्लेख करना चाहता हूँ कि यह न केवल डीसीएसईएम के लिए बल्कि टाटा मेमोरियल सेंटर व सुविधा के हितधारकों के लिए भी यह मनोबल बढ़ाने वाला कार्य था। वास्तव में, इस मामले में श्री गुप्ता जी ने हितधारकों का भी मार्गदर्शन किया। जल्द ही प्रगति के अधीन कुछ कार्यों को सीवीसी टीम की गहन जांच से गुजरना पड़ा। इसमें से डीसीएसईएम विशेष योग्यताएं हासिल करते हुए उभरकर आ गया ।

कार्यान्वयन प्रक्रिया ने रोल मॉडल का रूप लिया। परियोजना प्रबंधन विशेषज्ञता हासिल करने के लिए इच्छुक लोगों ने ACTREC और DCSEM का दौरा करना शुरू कर दिया। इसके परिणामस्वरूप डीसीएसईएम द्वारा इंस्टिट्यूट ऑफ़ प्लाज़्मा रिसर्च में प्रमुख विकास कार्य का भार लिया गया जो एक जटिल चुनौती थी, लेकिन आसानी से और सफलतापूर्वक कार्यान्वित की गई। कोलकाता में परिवर्तीत ऊर्जा साइक्लोट्रॉन डिवीजन के लिए सुपर कंडक्टिंग साइक्लोट्रॉन का प्रमुख कार्य निष्पादित किया गया था। जैसे-जैसे वर्ष बीतते गए, डीसीएसईएम का क्षेत्र व्यापक से और अधिक व्यापक होता गया। डीसीएसईएम के कार्य क्षेत्र में कुछ महत्वपूर्ण कार्य समाहित हैंजैसे-अणुशक्तिनगर का प्रमुख रूप से विस्तार, भारत में विभिन्न केंद्रों पर परमाणु खनिज प्रभाग के लिए कार्य, मुंबई, पुणे और हैदराबाद में टाटा मूलभूत अनुसंधान संस्थान के लिए नई सुविधाओं का निर्माण, अन्य सरकारी निकायों के लिए प्रतिष्ठित परियोजनाओं का कार्यान्वयन जैसे मानेसर, हरियाणा में राष्ट्रीय मस्तिष्क अनुसंधान केंद्र, नई दिल्ली स्थित जेएनयू में नेशनल सेंटर प्लांट जीनोम रिसर्च, पनवेल में भारतीय भू-चुम्बकत्व संस्थान, पुणे में नेशनल सेंटर फॉर सेल साइंस, होमी भाभा विज्ञान एवं शिक्षा केंद्र।

यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि कुछ ही वर्षों में डीसीएसईएम ने महत्ता प्राप्त की। वर्ष 1996 से 2001 की अवधि के दौरान तेजी से हो रहे विकास का मैं एक सक्रिय भागीदार और गवाह रहा हूँ।

अगले छह वर्ष

स्थापना से लेकर प्रारंभिक विकास तक इतिहास रचने के बाद, अपने उत्तराधिकारियों के लिए एक जीवंत और रचनात्मक संगठन को पीछे छोड़ते हुए निदेशक श्री गुप्ता जून 2001 में सेवानिवृत्त हुए। उनकी विरासत के अनुरूप, अगले छह वर्षों में ली गई विविध प्रकार की परियोजनाओं में गुणात्मक वृद्धि देखी गई ।

सबसे पहले अणुशक्तिनगर में बीएआरसी ट्रेनिंग स्कूल और होमी भाभा नेशनल यूनिवर्सिटी का निर्माण किया जाना था। बिल्डिंग के बारे में ध्यान देने योग्य तथ्य हैं - इसकी कार्यात्मक सुविधा और अच्छी सेवाओं के डिजाइन । वास्तुकला अद्वितीय थी। इन-हाउस आर्किटेक्चरल विंग ने इस पर काम किया जब कि आम राय यह थी कि डीसीएसईएम को एक बाहरी प्रतिष्ठित वास्तुकार की सेवाएं किराए पर लेनी चाहिए। लेकिन डीसीएसईएम आर्किटेक्ट्स ने अपनी काबिलियत साबित की। नियामक भवन -2 और एचबीसीएसई के लिए राष्ट्रीय पूर्वस्नातक अध्ययन संस्थान हेतु भवन ऐसे ही तेजी से और सुचारू रूप से सुपूर्द की गईं परियोजनाएं थीं।

ठीक इसी समय कुछ ऐतिहासिक हुआ। डीसीएसईएम ने 125 साल पुराने यॉच क्लब के हेरिटेज बिल्डिंग का जीर्णोद्धार किया, जिसमें परमाणु ऊर्जा विभाग का प्रधान कार्यालय था। उस समय तक डीसीएसईएम की दृष्टि से कोई भी कार्य अब कठीन और बहुत बड़ा नहीं रहाथा।

डीसीएसईएम ने जो प्रतिष्ठा प्राप्त की उसके अनुरूप यह स्वाभाविक था कि भुवनेश्वर में राष्ट्रीय विज्ञान शिक्षा और अनुसंधान केंद्र (NISER) की संस्थापना की परियोजना ने इसकी प्रतिष्ठा रूपी मुकुट में एक और हीरा स्थापित किया। यह वह समय था जब मैं निदेशक था। सन् 2006 में, मुझे सुबह डॉ. अनिल काकोडकर, सचिव, डीएई से एक अनौपचारिक फोन कॉल आया। उन्होंने बताया कि डीसीएसईएम को राष्ट्रीय स्तर पर महत्वपूर्ण परियोजना को कार्यान्वित करने की जिम्मेदारी लेनी है। मैं, डीएई द्वारा डीसीएसईएम में दिखाए गए इस विश्वास से अभिभूत हो गया था।

इस संबंध में, मुझे विशेष रूप से जुलाई 2007 में मनाए गए दूसरे डीसीएसईएम दिवस की याद आती है, जब मैंने सभा को संबोधित करते हुए आने वाली नाइजर(NISER) परियोजना का विशेष उल्लेख किया था। मैंने इसे सभी परियोजनाओं की जननी के रूप में वर्णित किया था और कहा था कि इसकी सफलता डीसीएसईएम के गौरव को बुलंदी की ऊंचाइयों पर पहुंचाएगी। और यह चुनौती स्वीकार की गई ।

डीसीएसईएम के साथ मेरा जुड़ाव अगस्त 2007 में समाप्त हो गया, जब मैं इसके निदेशक के रूप में सेवानिवृत्त हुआ। परंतु परियोजना कार्य जारी रहा और बाकी इतिहास है जिससे आप परिचित हैं।

डीसीएसईएम के साथ मेरे 11 वर्ष और सी एंड एस ग्रुप में उसके पहले के दो प्रारंभिक वर्ष मेरी टीम के लिए घटनापूर्ण और शिक्षाप्रद रहें तथा राष्ट्र के लिए फलदायी थे। अपने कार्यकाल मैंनेदार्शनिक धरातल पर बहुत कुछ सीखा। यह अनुभव डीसीएसईएम के सभी आने वाले पदाधिकारियों के लिए प्रेरणादायी होगा।

शिक्षा और सीख

पहली सीख है : परियोजना कार्यलेना चाहिए चाहे चुनौती कितनी भी कठिन क्यों न हो। इससेआपके बीच अत्यधिक प्रेरित लोगों काप्रोत्साहनबढताहै। टीम भावना और समान लक्ष्य के सामने कोई भी चुनौती बहुत बड़ी नहीं होती है। असफलताओं से घबराएं नहीं। असफलताएं जीवन के लिएनए सबक होती हैं। एक अमेरिकी कवि, हेनरी वड्सवर्थ लॉन्गफेलो ने कहा है :

In the world's broad field of battle
In the bivouac of life,
Be not like dumb driven cattle,
But be a hero in the strife.

दूसरी सीख : अपने क्षितिज का विस्तार करें। बाहर नए विकास का निरीक्षण करें; देखें कि चीजों को कैसे बेहतर बनाया जा सकता है।अपने साथियों के साथ-साथ बाहरी लोगों के बीच भी विचारों का आदान-प्रदान करें। उत्कृष्टता का अनुसरण करना कभी न खत्म होने वाला खेल है। ध्यान रखें कि आप यहां कुछ सृजितकरनेके लिए हैं,कुछ निर्माण करने के लिए हैं। भगवद्गीता के पाठ का पालन करें:

कर्मण्येवाधिकारस्ते, मा फलेशु कदाचन।

जैसा कि अमेरिकी कवि ने कहा है–

Trust no future however pleasant,
Let the dead past bury its dead,
Act, act in the real present,
Heart within and God overhead.

तीसरी सीख : अपना मनोबल हमेशा ऊंचा रखें। प्रशंसा हमेशा अच्छे काम के बाद की जाती है। लेकिन कुछ शैतान के मुखतार हो सकते हैं। वे भी एक उद्देश्य की पूर्ति करते हैं।

जब मैंने व्यक्तिगत रूप से कार्यों के लिए प्रशंसा अर्जित की, तब हमारे कुछ बेहतरीन कार्यों की सबसे खराब आलोचना हुई थी।

यह ध्यान रखने योग्य बातहै। हमारा दर्शन क्या था? जैसा कि अमेरिकी कवि ने कहा था

Not enjoyment and not sorrow,
Is our destined end or way,
But to act that each tomorrow,
Find us farther than today.

मेरी सेवानिवृत्ति से पहलेअगस्त 2007 तक, परमाणु ऊर्जा विभाग के साथ और डीसीएसईएम से जुड़े मेरे करियर के वे अंतिम वर्ष थे-व्यस्त, घटनापूर्ण, अत्यधिक प्रोफेशनल और उत्पादक। मैं विभाग और मेरे साथियों के प्रति कृतज्ञता की भावना और संतुष्टि के साथ सेवानिवृत्त हुआ। नई चुनौतियों, नए नेतृत्व, नए कर्मचारियों और नई ऊर्जा के साथ डीसीएसईएम 15 साल और आगे बढ़ा है।

ईश्वर आप सब पर कृपा बनाएं रखें, यही मेरी कामना है ।

निर्माण सेवा संपदा प्रबंध निदेशालय के साथ मेरा जुड़ाव



श्री एन. एस. गभने
पूर्व निदेशक, निसेसंप्रनि

मुझे यह जानकर बहुत खुशी हो रही है कि मेरी यूनिट निसेसंप्रनि अपनी स्थापना की रजत जयंती मना रही है। मैं अपने पिछले सात वर्षों के करियर के लिए परमाणु ऊर्जा विभाग की इस उद्यमी व जोशपूर्ण सेवा यूनिट का हिस्सा बनकर बहुत गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ । मैंने मई 2009 में बीएआरसी से स्थानांतरण के पश्चात निदेशक निसेसंप्रनि का कार्यभार ग्रहण किया और मार्च 2016 में मेरी सेवानिवृत्ति हुई । आज भी जब मैं निजी काम के लिए अणुशक्तिनगर जाता हूँ, तो मुझे लगता है कि मैं अभी भी निसेसंप्रनि का हिस्सा हूँ।

अणुशक्तिनगर में न केवल निसेसंप्रनि मुख्यालय है, अपितु यह इसकी सभी गतिविधियों और इसके सार्वजनिक कार्यों का अधिकेंद्र भी है। मुझे बहुत खुशी हो रही है कि निसेसंप्रनि के वर्तमान निदेशक श्री भरत कुमार जैन ने अणुशक्तिनगर को और अधिक ऊंचाइयों पर पहुंचाया है । मुझे यकीन है कि इस खूबसूरत टाउनशिप में रहने वाले वैज्ञानिकों को नए शोध कार्यों के लिए टाउनशिप में आवश्यक अनुकूल, शांत व प्रेरक वातावरण मिल रहा होगा।

निसेसंप्रनि में मेरा कार्यकाल बहुत ही घटनापूर्ण रहा है क्यूँकि यह पऊवि की उपयोगकर्ता यूनिटों के लिए बहुत से नए बुनियादी ढांचे और नए शोध परिसरों के निर्माण की दृष्टि से महत्वपूर्ण था। इसका मुख्य श्रेय मेरे कुशल सहयोगियों को जाता है ।

जब मैंने वर्ष 2009 में निदेशक का पदभार संभाला था, वह हमारे संस्थापक डॉ होमी जहांगीर भाभा की जन्म शताब्दी वर्ष था। हमें उनके जन्म स्थान, केनिलवर्थ (वर्तमान में डीएई हाउसिंग स्ट्रक्चर) पर उनके सम्मान में एक स्मारक बनाने का काम सौंपा गया था, जिसका उद्घाटन दिनांक 30/ 10/ 2009 को उनकी जयंती पर किया जाना था। हमारे पास केवल चार महीने का समय था कि हम इस विचार को समझने से लेकर इसे क्रियाशील बनाने तक सब कुछ ठीक से कर सकें। केनिलवर्थ रेजिडेंट्स एसोसिएशन के परामर्श से और तत्कालीन अध्यक्ष, पऊवि (डॉ अनिल काकोडकर) के मार्गदर्शन में हम इस कार्य को पूरा कर सके।

हमने मनोरंजन हॉल को एक संग्रहालय में बदल दिया जिसमें विभिन्न पऊवि गतिविधियों की तस्वीरें/प्रदर्शन और एक वैज्ञानिक के रूप में डॉ भाभा के जीवन पर कुछ महत्वपूर्ण तस्वीरें हैं। हमने केनिलवर्थ के उद्यान क्षेत्र में एक लंबी दीवार का निर्माण भी किया, जिसमें भित्ति प्रदर्शन के रूप में डॉ भाभा के समय में पूर्ण की गई विभिन्न बीएआरसी फैसिलिटियों को दर्शाया गया है। इसका उद्घाटन, उच्च स्तरीय पऊवि गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति में, तत्कालीन अध्यक्ष, पऊवि ने दिनांक 30/ 10/ 2009 को किया था।

हमें बहुत गर्व महसूस हुआ कि हम इस अपरंपरागत कार्य को निर्धारित समय सीमा में पूरा कर सके। वैज्ञानिक अनुसंधान के प्रदर्शन को बढ़ाने के लिए वर्ष 2009 में पऊवि में प्रिस योजना (PRIS) (प्रदर्शन संबंधी प्रोत्साहन योजना) शुरू की गई थी। इसके लिए दिशानिर्देश भापअकेंद्र की ट्रॉम्बे परिषद द्वारा तैयार किए गए थे और हमने अपने कार्यों की प्रकृति के अनुसार निसेसंप्रनि के लिए इसे अनुकूलित किया था। इन दिशानिर्देशों के आधार पर, हमने एक शिकायत मॉनिटरन प्रणाली (निवासियों से अनुरक्षण संबंधी शिकायतें) तैयार की और मुझे यकीन है कि इसका पालन करने से मुंबई में पऊवि कॉलोनी के निवासियों के बीच संतुष्टि के स्तर में सुधार हुआ है। मेरे सात वर्षों के कार्यकाल के दौरान पऊवि की विभिन्न यूनिटों के साथ-साथ निसेसंप्रनि के स्वयं के अव-संरचनात्मक विकास के लिए नई परियोजनाओं को शुरू किया गया और पूरा किया गया।

भुवनेश्वर में, हमने नाईज़र के लिए एक अंतरिम स्कूल भवन का निर्माण पूरा किया, जिसमें वर्तमान आईओपी परिसर में एक 300 क्षमता वाला डाइनिंग हॉल, भुवनेश्वर के पास जटनी में 300 एकड़ के भूखंड में नाईज़र के लिए एक नया परिसर और आईओपी के लिए एक पदार्थ विज्ञान प्रयोगशाला शामिल है।

कोलकाता में, हमने वीईसीसी के लिए मेडिकल साइक्लोट्रॉन, कंप्यूटिंग और सूचना विज्ञान प्रयोगशाला, रेडियोधर्मी आयन बीम सुविधा, अणुनेट भवन, फायर स्टेशन भवन, पीएसआई प्रयोगशाला का विस्तार, सुरक्षा प्रवेश परिसर के ऊपर छत्र, नया इंजीनियरिंग हॉल जैसी कई अनुसंधान फैसिलिटियों का काम लिया और पूरा किया है। राजोरहाट में सब स्टेशन और जल आपूर्ति पंप हाउस और राजोरहाट में एएमडी, एईआरबी भवन जैसी सहायक सेवाओं की सुविधा शामिल है । हमने कोलकाता में एसआईएनपी के लिए फ्रेना, एक त्वरक अनुसंधान सुविधा के रूप में जाना जाने वाला, सुरक्षा प्रवेश परिसर में संशोधन और वीआईपी डाइनिंग हॉल का निर्माण शुरू किया और पूरा किया है। जयपुर में एएमडी के लिए आवास के बाकी निर्माण कार्यों को भी पूरा किया गया।

हमने बेंगलुरु में एएमडी के क्षेत्रीय निदेशालय के लिए एक सभागार सहित नए कार्यालय व प्रयोगशाला भवन का अभिकल्पन और निर्माण कार्य भी पूरा किया। दिल्ली में, हमने भूमि के अधिग्रहण सहित बहादुरगढ़ के निकट 214 एकड़ के एक भूखंड में नए परिसर का डिजाइन पूरा कर लिया है और पऊवि के नए परिसर जिसे ग्लोबल सेंटर फॉर न्युक्लियर एनेर्जी पार्टनरशिप के नाम से जाना जाता है, के लिए भूमि अधिग्रहण व निर्माण की शुरुआत की है। टीआयएफआर के लिए हमने जैव विज्ञान में अनुसंधान के लिए गाचीबोवली हैदराबाद में 208 एकड़ के एक भूखंड में उनके नए परिसर का डिजाइन लिया है और टीआयएफआर (FRET) की पहली अनुसंधान और शिक्षण सुविधा के रूप में जानी जाने वाली फेज 1 प्रयोगशाला का निर्माण कार्य पूरा किया है।

पुणे में, हम ने जैव प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार के लिए सेल विज्ञान प्रयोगशाला और 100 लड़कियों के छात्रावास के डिजाइन और निर्माण का काम पूरा कर लिया है। हमने मानेसर, हरियाणा में डीबीटी के लिए ब्रेन रिसर्च सेंटर की शेष निर्माण गतिविधियों को भी पूरा कर लिया है। वाशी में, ब्रिट के लिए हमने विकिरण प्रौद्योगिकी हेतु इंटीग्रेटेड फैसीलीटी, आयोडीन 125 प्रयोगशाला, लेबल कंपाउंड प्रयोगशाला का लंबवत विस्तार और आइसोमेड परिसर, बीएआरसी, दक्षिण साइट पर नई मॉलिबडेनम 99 रेडियोफार्मास्युटिकल उत्पादन सुविधा जैसी नई सुविधाओं का डिजाइन और निर्माण पूरा किया है। पनवेल में, भारतीय भू-चुंबकत्व संस्थान के लिए, नए सभागार, आवास और अग्नि जल पंपहाउस का डिजाइन और निर्माण कार्य हाथ में लिया गया और पूरा किया गया।

खारघर, नवी मुंबई में बीएआरसी चिकित्सा प्रभाग के लिए नए औषधालय के डिजाइन और निर्माण का कार्य पूरा किया गया। मुंबई में, हमने आईआईटी बॉम्बे के लिए विभिन्न निर्माण कार्यों जैसे नए कंप्यूटर विज्ञान केंद्र, छात्रावास, आवास इत्यादि का भी डिजाइन और निर्माण कार्य पूरा किया है।

मुंबई में, हमने निसेसंप्रनि के लिए कई बुनियादी विकास कार्यों का काम किया जैसे जल भंडारण और आपूर्ति के लिए वृद्धि के विकास निर्माण कार्यों को शुरू किया है, पऊवि कर्मचारियों के लिए नया आवास (356 व 312 फ्लैट), सीआईएसएफ (212 फ्लैट) के लिए नए आवास का निर्माण, निवासियों की बदलती जीवन शैली के कारण बढ़ी हुई बिजली की मांग को देखते हुए सब स्टेशन क्षमताओं का विस्तार, टेनी कोर्ट/ बास्केटबॉल जैसी खेल सुविधाओं का नवीनीकरण एईईएस स्कूल भवनों का विस्तार, क्रेच के लिए अधिक भवन का निर्माण, सांस्कृतिक केंद्र का निर्माण, अणुशक्तिनगर के सुरक्षा प्रवेश परिसरों में संशोधन, एक नए सम्मेलन केंद्र का निर्माण, एचबीएनआई के लिए 1000 क्षमता वाले छात्र छात्रावासों का निर्माण, दो व्याख्यान कक्षों का निर्माण, मौजूदा एचबीएनआई भवन, विक्रम साराभाई भवन का विस्तार, पुराने सामुदायिक केंद्र का नवीनीकरण और नए सामुदायिक केंद्र का नवीनीकरण। एक अलग कैपिटल परियोजना के तहत मुंबई में विभिन्न पऊवि कॉलोनियों में घरों के नवीनीकरण के रूप में एक बहुत बड़ी कवायद की गई, जिसके परिणामस्वरूप मुंबई में विभिन्न पऊवि कॉलोनियों में रहने वाले पऊवि कर्मचारियों की संतुष्टि स्तर में वृद्धि हुई।

मुझे यह कहते हुए गर्व हो रहा है कि हमारी कुछ निर्माण सेवाओं ने CIDC (थर्ड पार्टी एजेंसी) जैसे ICTS, NISER और GCNEP के लिए सर्वश्रेष्ठ निर्माण पुरस्कार प्राप्त किए हैं। मेरे कार्यकाल के दौरान, निसेसंप्रनि को पहली बार अभिनव निर्माण अवधारणाओं के लिए पऊवि समूह उपलब्धि पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया था। देश में सुरक्षा खतरे के परिदृश्य में बदलाव के कारण, सुरक्षा उपायों में वृद्धि और अणुशक्तिनगर में आगंतुकों की प्रविष्टि को कड़ा करने की पहल भी इस अवधि के दौरान सड़कों/ भवनों पर सीसीटीवी कैमरे प्रदान करने सहित शुरू की गई थी।

निविदा गतिविधियों में पारदर्शिता बढ़ाने के लिए निसेसंप्रनि द्वारा ई-निविदा शुरू की गई थी और बाद में पऊवि ने निसेसंप्रनि को सहायता प्राप्त इकाइयों सहित सभी पऊवि इकाइयों के लिए एक नोडल ई-निविदा एजेंसी के रूप में बनाया। इस अवधि के दौरान निसेसंप्रनि में विभिन्न एजेंसियों को ई-भुगतान भी शुरू किया गया था। ई-गतिविधियों पर अधिक ध्यान देने के लिए एक अलग आईटी सेल बनाया गया। इसके अलावा, उद्यानों और ठोस अपशिष्ट प्रबंधन पर ध्यान केंद्रित करने के लिए, बागवानी और कॉस्मेटिक रखरखाव के रूप में जाना जाने वाला एक अलग अनुभाग बनाया गया था।

अंत में यही कहूँगा कि निसेसंप्रनि में मेरे सात वर्षों के कार्यकाल के दौरान यह मेरे लिए एक बहुत ही संतोषजनक अनुभव रहा है। निसेसंप्रनि, पऊवि की एक बहुत ही जीवंत और सक्षम यूनिट है और मेरे सभी सहयोगियों और उपयोगकर्ताओं का मुझे तहे दिल से सहयोग मिला है।

मन की बात...



श्री अनिल श्रीवास्तव
पूर्व निदेशक, निसेसंप्रनि

मुझे डीसीएसईएम के अपने कार्यकाल के दौरान बहुत संतोष और प्रसन्नता का अनुभव हुआ। डीसीएसईएम, सर्विसेस के सभी पहलुओं को छूता है। डीसीएसईएम का स्टाफ वह सभी कार्य करता है जिससे कॉलोनी में रहने वाले परमाणु ऊर्जा विभाग के निवासियों के जीवन को बेहतर बनाया जा सके. इस प्रयास से उन्हें अपनी जॉब के साथ-साथ एक सामाजिक कार्य करने का मौका भी मिलता है और साथ ही प्रसन्नता और संतुष्टि का एहसास भी होता है। इसलिए हम लोगों को इस बात के लिए कृतज्ञ होना चाहिए कि हमें जीवन में यह अवसर मिला।

साथियों, एक और बहुत महत्वपूर्ण बात यह है कि हम अपने कार्य और व्यवहार से हर निवासी परिवार को उनके कुछ खास होने का एहसास कराते हैं जो एक बहुत बड़ी सफलता होती है।

मैं,परमाणु ऊर्जा विभाग का बहुत आभारी हूँ कि मुझे यह मौका मिला। साथ ही, अपने साथियों का भी बहुत आभारी हूँ कि उन्होंने मेरा बहुत साथ दिया।

अभिन्न मैं ...



श्रीमती शैलजा प्रकासम
मुख्य प्रशासन अधिकारी

समय को मानो पंख लग गए हों..ऐसे लग रहा है जैसे कुछ ही हफ्तों पहले की बात है... छुई-मुई सी मैं... 19 वर्षीय किशोरी... बीएआरसी के सेंट्रल कॉम्पलेक्स में निम्न श्रेणी लिपिक के पद के लिए इंटरव्यू देने पहुंच गई... यह चालीस साल पहले की बात है ...

चालीस साल...स्वप्न जैसे लगता है यह सब ... एक कार्यालयीन-सफर परमाणु ऊर्जा विभाग के साथ ... मेरा जीवन, मेरा अस्तित्व, मेरी पहचान, मेरा मान-सम्मान... विभाग से जुडा अभिन्न रिश्ता...

विभाग में प्रवर श्रेणी लिपिक के पद से कार्यालयीन सफर आरंभ किया और शनैः शनैः प्रगति करते हुए आज मुख्य प्रशासनिक अधिकारी के पद का कार्यभार सम्हाल रही हूँ..

इन 40 सालों के करियर के दौरान मैंने विभाग के विविध युनिटों में काम किया... शुरुआत बीएआरसी से हुई ,फिर क्रय एवं भंडार निदेशालय,परमाणु ऊर्जा विभाग,राजारामन्ना प्रगत प्रौद्योगिकी केंद्र,इंदौर और अब निर्माण,सेवा एवं संपदा प्रबंध निदेशालय...

इन युनिटों में मुझे विभिन्न अनुभागों में विविध पदों पर काम करने का अवसर मिला जैसे-स्टाफ रिलेशंस एंड वेलफेअर, क्रय एवं भंडार, स्थापना, भर्ती, सतर्कता, बतौर संपदा अधिकारी कोर्ट से संबंधित मामले देखना, शिकायत निवारण अधिकारी, संपर्क अधिकारी, जनसूचना अधिकारी, प्रशासन अधिकारी, मुख्य प्रशासनिक अधिकारी..

मुझे विभाग ने ये सारी जिम्मेदारियां निभाने और चुनौतियों का सामना करने का हर बार सुनहरा अवसर दिया है...ये चुनौतियां प्रबंधन के अलग-अलग क्षेत्रों से जुडी थी... जिनकी बदौलत मुझमें स्थितियां व परिस्थितियां सम्हालने-संवारने का आत्मविश्वास बढता गया ...

इन सब में निर्माण,सेवा एवं संपदा प्रबंध निदेशालय मेरे लिए सबसे ज्यादा चुनौतीपूर्ण रहा है...इस युनिट के कार्यकलाप प्रत्यक्ष लोगों को प्रदान की जानेवाली सेवाओं से जुडे हैं ....निर्माण कार्यों के साथ संपदा प्रबंधन, परियोजनाओं के लिए भूमि से संबंधित कार्य,आबंटन,प्रवर्तन कार्य इसकी विशेषताएं हैं ...जितना अधिक कार्य विस्तार उतनी अधिक चुनौतियां..

लेकिन इन सबके बावजूद प्रत्येक युनिट में परिवार जैसा माहौल मिला, जिससे काम करने में आनन्द और ऊर्जा मिलती थी ...मैंने काम सीखा,जीने के तौर - तरीके, सलीके सीखे, अपने साथ-साथ अपने परिवार का विकास व उत्कर्ष देखा है...

मैंने 40 साल विभाग में काम किया ...31 दिसम्बर 2022 को सेवानिवृत्त हो जाऊंगी ...विभाग के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं ...

मैं विशेष रूप से निर्माण,सेवा एवं संपदा प्रबंध निदेशालय की सदैव आभारी रहूंगी....इस निदेशालय की बदौलत मैंने अणुशक्तिनगर में खुशहाल जीवन बिताया है...बच्चों की शिक्षा से लेकर अस्पताल,आवास और अनगिनत सुविधाएं मुझे और मेरे परिवार को मिली हैं ... इस कॉलॉनी ने स्वच्छ,सुंदर,हरित और पर्यावरण-मित्रवत वातावरण में जीवन बिताने का सौभाग्य दिया...

मैं सौभाग्यशाली रही हूँ अपनी टीम के कारण... लोगों की अच्छी टीम मुझे मिली... वैचारिक मतभेद होते हुए भी सकारत्मकता के साथ हम लोगों ने मिलकर काम किया है...

इस विभाग में काम करने का मुझे आत्मिक संतोष है.. विभाग के प्रति आदर और प्रेम व्यक्त करते हुए मैं स्वयं को विभाग से अभिन्न मानती हूँ...सेवानिवृत्ति के बाद भी यह विभाग मेरा है... विभाग से अभिन्न मैं ...

विक्रम साराभाई –आधुनिक भारत के अन्तरिक्ष महर्षि



श्री अनिल पुंडलिक
प्रधान, विद्युत प्रभाग

आधुनिक भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान के प्रणेता डॉ विक्रम अंबालाल साराभाई ने अपने दूरदर्शी और अथक प्रयासों से देश में विज्ञान के प्रति जागरुकता का जो माहौल बनाया और जो योजनाएं बनाई वे उनकी असामयिक मृत्यु के पाँच दशक बाद भी पथ प्रदर्शक बनी हुई हैं।

सन् 1961 में डॉ. होमी जहांगीर भाभा के नेतृत्व में परमाणु ऊर्जा विभाग को अंतरिक्ष विज्ञान के अध्ययन की जिम्मेदारी सौंपी गई थी। डॉ. भाभा ने अगले ही वर्ष डॉ. साराभाई के नेतृत्व में ईनकोस्पार (इंडियन नेशनल कमेटी फॉर स्पेस रिसर्च) का गठन किया। डॉ. साराभाई ने केरल स्थित थुम्बा को बहुत महत्व दिया क्योंकि यह पृथ्वी की भूमध्य रेखा के पास स्थित है। थुम्बा इक्वेटोरियल रॉकेट लॉन्चिंग स्टेशन (TERLS) भारत का पहला रॉकेट लॉन्चिंग स्टेशन बन गया। पहला रॉकेट रूस का M100 था तथा यह रॉकेट भारत और रूस के संयुक्त तत्वावधान में 21 नवंबर 1963 को प्रक्षेपित किया गया था।

1962 में गठित ईनकोस्पार से ही भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) का जन्म हुआ। अंतरिक्ष विज्ञान और प्रौद्योगिकी केंद्र, उपग्रह संचार स्टेशन श्रीहरिकोटा और भारतीय उपग्रह प्रणाली परियोजना की स्थापना की गई। 1969 में डॉ. विक्रम साराभाई ने आईएसआरओ का पुनर्गठन किया और भारत में अंतरिक्ष संबंधी सभी गतिविधियों को इसरो के नियंत्रण में लिया।

आधुनिक भारतीय अंतरिक्ष अन्वेषण के प्रारंभिक प्रयास कलकत्ता में सन् 1920 में वैज्ञानिक एस. के. मित्रा के नेतृत्व में शुरू हुए थे। बाद में सर सी वी रमन और डॉ मेघनाद साहा ने भी कुछ सिद्धांत प्रस्तुत किए। सन् 1945 में, डॉ होमी भाभा ने मुंबई में टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च (टीआईएफ़आर) की स्थापना की और अंतरिक्ष विज्ञान में नए प्रयोग शुरू किए। ब्रह्मांडीय किरणों के अध्ययन के साथ-साथ विभिन्न उपकरणों और उनके वैमानिकी (एरोनोमी), उच्च वायुमंडल (अपर एटमोस्फियर) और गहरे-भूमिगत (डीप अंडरग्राऊंड) प्रयोगों पर काम शुरू हुआ। उत्तर प्रदेश राज्य वेधशाला की स्थापना सन् 1954 में हिमालय की तलहटी में की गई थी। रंगपुर वेधशाला सन् 1957 में उस्मानिया विश्वविद्यालय, हैदराबाद में शुरू की गई थी। प्रारंभ में, परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम के तहत एक अंतरिक्ष कार्यक्रम शुरू किया गया था। इसके लिए आवश्यक ध्वनि रॉकेट परियोजना के लिए संयुक्त करार किए गए थे, जिसमें संयुक्त राज्य अमेरिका के नासा, फ्रांस के सीएनएस और रूस के हायड्रोमेटेओरो-लोजिकल सर्विसेस जैसी संस्थाएं शामिल थी। शुरुआत में इन रॉकेटों का निर्माण परमाणु ऊर्जा संस्थापना अर्थात वर्तमान के भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र, में ही किया गया था।

डॉ. साराभाई का स्पष्ट दृष्टिकोण और विश्वास था कि "भारत को अपनी शिक्षा, विकास, प्रौद्योगिकी और उत्पादन के सभी पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करके आत्मनिर्भरता प्राप्त करनी चाहिए। इससे राष्ट्रीय क्षमता और राष्ट्रीय सम्पदा का निर्माण होगा। भारत विकसित विश्व के साथ-साथ अगली शताब्दी तक अपने विज्ञान और प्रौद्योगिकी के माध्यम से समाज कल्याण के लिए कार्य कर पाएगा।" इसलिए उन्होंने अंतरिक्ष अनुसंधान संस्थान और राष्ट्रीय उपग्रह प्रक्षेपण केंद्र का निर्माण किया। उन्हें कल्पना थी कि भविष्य में, अंतरिक्ष विज्ञान का उपयोग कई कल्याणकारी कार्यक्रमों जैसे समाचार, कंप्यूटर, मनोरंजन, मौसम पूर्वानुमान, दूरसंचार आदि के लिए किया जाएगा।

दिनांक 24 जनवरी 1966 को डॉ. होमी भाभा की असामयिक मृत्यु के बाद तत्कालीन प्रधान मंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने डॉ. विक्रम साराभाई को परमाणु ऊर्जा आयोग का अध्यक्ष नियुक्त किया। साराभाई पहले से ही डॉ. भाभा के साथ काम कर रहे थे। वे परमाणु ऊर्जा आयोग के सदस्य भी थे।

जब वे आयोग के अध्यक्ष बने, तो उन्होंने कुछ वरिष्ठ वैज्ञानिकों और इंजीनियरों को संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस और फ्रांस में परमाणु रिएक्टरों और अन्य उन्नत प्रौद्योगिकियों का अध्ययन करने के लिए भेजा और उन्हें उच्च ऊर्जा भौतिकी, विकिरण जीव विज्ञान, धातु विज्ञान और नाभिकीय पदार्थ विज्ञान में अनुप्रयोगों के लिए प्रेरित किया। सितंबर 1966 में वे स्वयं

डॉ. ब्रह्मप्रकाश और डॉ. सेठना के साथ उन्नत प्रौद्योगिकी का अध्ययन करने के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका गए।

साराभाई का कथन है कि देश की सशक्त सुरक्षा के लिए एक संपूर्ण रक्षा प्रणाली की आवश्यकता है जिसमें प्रक्षेपण माध्यम, मिसाइल, रडार, प्रगत इलेक्ट्रॉनिक्स, धातु विज्ञान और मजबूत औद्योगिक तंत्र शामिल हैं। उनका जोर कृषि अनुसंधान और नई तकनीकों के उपयोग के माध्यम से कृषि उत्पादन में आत्मनिर्भरता प्राप्त करने पर भी था। उन्होंने आकाशवाणी, दूरदर्शन, भारतीय कृषि अनुसंधान केंद्र और दिल्ली प्रशासन के संयुक्त तत्वावधान में `कृषिदर्शन' नामक एक ग्रामीण विकास टेलीविजन कार्यक्रम शुरू किया। `कृषिदर्शन' सामुदायिक टेलीविजन के माध्यम से दिल्ली के आसपास के 80 गांवों तक पहुंचता था।

सन्1970 में डॉ. साराभाई ने **'परमाणु ऊर्जा और अंतरिक्ष अनुसंधान प्रोफाइल 1970 से 1980'** प्रस्तुत की थी। इसी वर्ष उन्हें अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी (IAEA) के चौदहवें सत्र की अध्यक्षता के लिए मनोनीत किया गया था।

परमाणु ऊर्जा आयोग की अध्यक्षता करते हुए, डॉ. साराभाई ने यूरेनियम कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड जादूगुड़ा, इलेक्ट्रॉनिक्स कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड हैदराबाद, हेवी वाटर बोर्ड मुंबई जैसे राष्ट्रीय संगठनों की स्थापना की।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी विक्रम साराभाई का जन्म 12 अगस्त 1919 को अहमदाबाद में एक सम्पन्न परिवार में हुआ था। माता का नाम सरलादेवी और पिता का अंबालाल साराभाई था। भारत के कई क्रांतिकारी और समाज सुधारक साराभाई परिवार से जुड़े थे। विक्रम को रवींद्रनाथ टैगोर, मोतीलाल नेहरू, महात्मा गांधी, जवाहरलाल नेहरू आदि जैसे कई महान क्रांतिकारी देशभक्तों का सान्निध्य बचपन से ही मिला। विक्रम सहित आठ भाई-बहनों की शिक्षा के लिए उनकी मां ने अपने आवास 'रिट्रीट' में ही स्कूल शुरु किया जो इटली की मैडम मोंटेसरी द्वारा विकसित प्रणाली पर आधारित था। इसमें सक्रिय भागीदारी के माध्यम से बच्चों को अलग-अलग विषय और कार्य सिखाए जाते थे । इस प्रणाली में बच्चों की जिज्ञासा को बढ़ाने पर ज़ोर दिया जाता था । सरलादेवी ने यूरोप और भारत के कई प्रतिष्ठित शिक्षकों को अपने यहाँ पढ़ाने के लिए आमंत्रित किया।

पाठ्यक्रम में कई भाषाएं जैसे गुजराती, संस्कृत, हिंदी, अंग्रेजी, बंगला सिखाई जाती थीं। इसमें इतिहास, भूगोल, गणित, भौतिकी, रसायनशास्त्र, चित्रकला, नृत्य, संगीत, हस्तशिल्प और मूर्तिकला भी शामिल थे । इस प्रकार एक अलग प्रकार की शिक्षा प्रणाली से विक्रम के बहुमुखी व्यक्तित्व विकास में मदद मिली।

रिट्रीट में अपनी प्रारंभिक शिक्षा पूरी करने के बाद, विक्रम ने आरसी हाई स्कूल से मैट्रिक किया और बाद में गुजरात कॉलेज से भौतिकी और रसायन विज्ञान में उत्कृष्ट अंकों के साथ इंटरमीडिएट की परीक्षा उत्तीर्ण की। विक्रम को संस्कृत काव्य से भी प्रेम था ।

विक्रम आगे की पढ़ाई के लिए सन्1937 में कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी में दाखिल हुए। सन्1939 में जब द्वितीय विश्व युद्ध छिड़ गया, तो उनके पिता ने उन्हें वापस बुला लिया। तब तक विक्रम ने भौतिकी और गणित की पढ़ाई पूरी कर ली थी। वहाँ से लौटने से पहले, उन्होंने भारत में स्नातकोत्तर अध्ययन करने की अनुमति प्राप्त कर ली थी। सन्1940 में जब विक्रम भारत लौटे, तो उन्होंने सर सी वी रमन के मार्गदर्शन में भारतीय विज्ञान संस्थान IISC बैंगलोर में अपनी पढ़ाई शुरू की। विक्रम ने ब्रह्मांडीय किरणों के साथ-साथ बाह्य अंतरिक्ष विकिरण पर अनुसंधान कार्य शुरू किया ।

विश्व युद्ध के अंत में, विक्रम ने `कॉस्मिक रे इन्वेस्टिगेशन इन ट्रोपिकल आल्टीट्यूड्स` विषय पर कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में अपना शोध प्रबंध प्रस्तुत किया। इसी में उन्होने दक्षिण भारत में चुंबकीय भूमध्य रेखा के पास ब्रह्मांडीय किरणों का अध्ययन करने पर ज़ोर दिया था । वह सन् 1947 में पीएचडी की डीग्री प्राप्त कर भारत लौट आए।

डॉ. साराभाई कहा करते थे कि भारत में इतनी क्षमता है कि हम कुछ भी बना सकते हैं , चला सकते हैं और किसी भी समस्या को हल कर सकते हैं। इसके लिए समाज के सभी स्तरों पर कौशल विकास की आवश्यकता है। नई तकनीकों की दिशा में लोगों को शिक्षित करने की जरूरत है।

फिजिकल रिसर्च लैबोरेटरी (पीआरएल) की स्थापना 11 नवंबर 1947 को डॉ साराभाई ने अपने अहमदाबाद स्थित आवास रिट्रीट में ही की थी। सन् 1952 में भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला के नये भवन का भूमि पूजन सर सी वी रमन ने किया

था। बाद में निर्माण पूरा होने पर अप्रैल 1954 में तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू ने इसका विधिवत उद्घाटन किया। ब्रूनो रॉसी, जेम्स वैनलेन, बर्ट्रेंड गोल्डस्चिमिड, सिडनी चैपमैन, पीएमएस ब्लैकेट, विक्टेनहर, फिलिप मैरिसन सहित कई अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वानों ने साराभाई के रिट्रीट और पीआरएल का दौरा किया था।

अपने पिता के प्रतिष्ठान में, विक्रम ने विपणन अनुसंधान और प्रबंधन मॉडलिंग के लिए नई तकनीकों को लागू किया। उन्होंने उस समय कंप्यूटर के साथ प्रयोग करना शुरू किया और अहमदाबाद टेक्सटाइल इंडस्ट्री रिसर्च एसोसिएशन (ATIRA) की स्थापना की। उन्होंने हमेशा अपने कर्मचारियों और सहयोगियों को उन्नति के लिए प्रोत्साहित किया। चाहे वह विदेश यात्रा हो या किसी प्रतिष्ठान का दौरा, डॉ साराभाई उन्हें नई तकनीक सीखने और आत्मसात करने में मदद करते थे।

शुरू से ही, ATIRA का ध्यान ऑपरेशन रिसर्च के माध्यम से कपड़ा उद्योग के सभी आयामों को विकसित करने पर रहा। वस्त्र प्रौद्योगिकी और प्रबंधन में मनोविज्ञान, रसायनशास्त्र, भौतिकी, सांख्यिकी, प्रलेखन, प्रशासन आदि जैसे सभी विषयों को शामिल किया गया था।

उन्होंने अहमदाबाद मैनेजमेंट एसोसिएशन (ए एम ए) की शुरुआत सन् 1956 में कस्तूरभाई लालभाई नामक एक उद्योगपति के साथ मिलकर की थी। यह संगठन विभिन्न कंपनियों के कर्मचारियों के लिए अनुसंधान और प्रशिक्षण प्रदान करता था। सन् 1962 में ए एम ए ने भारतीय प्रबंधन संस्थान, अहमदाबाद की स्थापना की।

विक्रम साराभाई ने अपनी पत्नी प्रसिद्ध नृत्यांगना मृणालिनी साराभाई के साथ मिलकर अहमदाबाद में ही दर्पण नृत्य अकादमी की स्थापना की। मृणालिनी की बहन कैप्टन डॉ. लक्ष्मी सहगल आज़ाद हिन्द फौज़ में नेताजी सुभाष चन्द्र बोस की सहयोगी रह चुकी थी। वह कानपुर में चिकित्सक थीं। `जनसंख्या विस्फोट' के विषय में डॉ साराभाई ने उन्हें जनसंख्या नियंत्रण हेतु पुरुष नसबंदी पद्धति पर सुझाव दिया था।

डॉ. साराभाई लगातार काम की अधिकता से अस्वस्थ रहने लगे थे पर उन्होने उनकी व्यस्तता में कमी नहीं की। सन्1971 की 27 तारीख की सुबह, वे और डॉ. राजा रमन्ना ने दिल्ली के लिए उड़ान भरी और शाम को मुंबई लौट आए। 28 तारीख की सुबह वह थुंबा के लिये रवाना हुए। मल्लिका अपने पिता को रोक रही थी क्योंकि विक्रम की तबीयत ठीक नहीं थी और मल्लिका उनके साथ नया साल मनाना चाहती थीं। विक्रम ने उससे वादा किया कि थुंबा का काम पूरा होते ही वापस आ जाएंगे। अगले दो दिन विक्रम के लिए काफी व्यस्त थे।

30 दिसंबर की रात डॉ. साराभाई के साथ गोवारिकर, सुरेश ठाकुर, जनार्दन राव, मुथुनायगन, ईवी चिटनिस और एमके मुखर्जी सहित कई गणमान्य व्यक्ति कोवलम गेस्ट हाउस में एकत्रित हुए थे। रात में अब्दुल कलाम का फोन दिल्ली से आया था। साराभाई ने उन्हें अगली सुबह त्रिवेंद्रम हवाई अड्डे पर मिलने के लिए कहा। लेकिन सुबह डॉक्टर साराभाई अपने कमरे में पड़े मिले और उन्हें मृत घोषित कर दिया गया।

सन्1974 में चंद्रमा पर पाए गए एक क्रेटर (शंकु) का नाम `विक्रम' रखा गया। इसी तरह इंटरनेशनल एस्ट्रोनॉमिकल यूनियन ऑस्ट्रेलिया द्वारा बेसेल क्रेटर का नाम बदल कर `साराभाई क्रेटर' रख गया। भारत सरकार ने उन्हें मरणोपरांत पद्मविभूषण से सम्मानित किया।

अपने जीवन में एक ही समय में इतने सारे अलग-अलग क्षेत्रों में अपनी उपलब्धियों को प्रदर्शित करना और उस क्षेत्र को अपने योगदान से एक नई ऊंचाई पर ले जाना आम आदमी की क्षमता से बाहर है। इसके लिए अनन्य साधारण दूरदर्शिता, लगन, अद्वितीय अध्ययन, चिंतन और परिश्रम की आवश्यकता होती है। भारतीय अंतरिक्ष विज्ञान के भविष्य का सही आकलन व नियोजन एक द्रष्टा का ही काम हो सकता है। इसलिए डॉ. विक्रम साराभाई वास्तव में आधुनिक भारत के `अन्तरिक्ष महर्षि' ही थे।



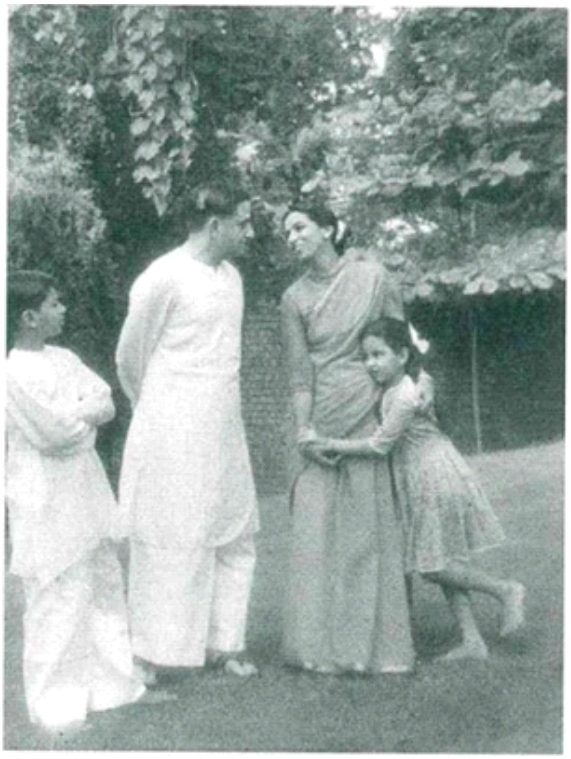
. Homi Bhabha (right) and Vikram Sarabhai in discussion. Bhabha was a nentor to Sarabhai.



With mentors and friends: from left to right, S.S. Bhatnagar, Homi Bhabha and C.V. Raman



A strong faith in international collaboration: Vikram with P.M.S. Blackett (front row, right), C.F. Powell (second row, left) and Homi Bhabha



Vikram and Mrinalini with the children



Vikram with his children: In Mrinalini's absence he was an attentive single parent

महिला सशक्तिकरण



श्री के. महापात्रा
प्रधान (परियोजनाएं) एवं
मुख्य अभियंता (सी-2)

भारतीय समाज में लैंगिक असमानता और पुरुष प्रभुत्व के परिणामस्वरूप प्राचीन काल से ही महिलाओं की समानता की आवश्यकता उत्पन्न हुई है। कई कारणों से, महिलाओं को अभी भी परिवार के सदस्यों और समाज में अन्य लोगों द्वारा प्रताड़ित किया जाता है। प्राचीन काल से सामाजिक दृष्टिसे में महिलाओं के लिए चली आ रहीं कुरितियों और पुराने पैटर्न ने अब अच्छी तरह से विकसित रीति-रिवाजों और परंपराओं का रूप ले लिया है। भारत में, देवी पूजा की परंपरा सदियों से चली आ रही है, जिसमें समाज में मां, चाची, पुत्री, पत्नी जैसी महिला भूमिकाओं का सम्मान करना शामिल है।

भारत एक ऐसा देश है जो प्रसिद्ध कहावत की पुष्टि करता है 'एकता ही बहुलता है' जहां भारतीय समाज में कई धर्मों के नागरिक रह रहे हैं। प्राचीन भारतीय संस्कृति में कई कुप्रथाएं थीं जैसे सती प्रथा, बाल श्रम, बाल विवाह, आदि। ये सभी समाज की गतिशील पौरुष श्रेष्ठता और इसकी पितृसत्तात्मक संरचना से उपजे हैं। पहले परिवार के पुरुष सदस्यों ने महिलाओं के लिए काम करने का अधिकार, शिक्षा का अधिकार, अपने लिए चुनने का अधिकार आदि जैसे सामाजिक-राजनीतिक अधिकारों को पूरी तरह से सीमित कर दिया था।

लेकिन खुले विचारों वाले और अच्छे भारतीय लोग जो महिलाओं के खिलाफ भेदभावपूर्ण प्रथाओं के लिए आवाज उठाते हैं, उन्होंने महिलाओं के खिलाफ कुछ कुरीतियों को दूर किया है और विधवा पुनर्विवाह जैसी प्रथाओं का समर्थन किया है।

आइए एक बहुत ही सामान्य उदाहरण देखें,

सिनेमाघरों से बाहर आने वाले लोगों को अक्सर अभिनय कौशल और फिल्म के अविश्वसनीय वितरण की सराहना करते देखा जाता है। लेकिन क्या आपने कभी किसी को उन लोगों की सराहना करते देखा है जिन्होंने कैमरे के पीछे कलाकारों से ज्यादा काम किया है।

घर, बच्चों की देखभाल करने और यहां तक कि दैनिक कार्यों को संभालने के बाद भी महिलाएं ऐसा ही महसूस करती हैं। हमारे समाज में इनका पर्याप्त महत्व नहीं है। हम ऐसी दुनिया में विकास की उम्मीद कैसे कर सकते हैं जहां महिलाओं को न तो निर्णय लेने में शामिल किया जाता है और न ही उन्हें समान अधिकार दिए जाते हैं। समाज में हमारी महिलाओं का सशक्तिकरण पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गया है।

महिला सशक्तिकरण केवल निर्णय लेने की प्रक्रिया में महिलाओं को शामिल करने तक सीमित नहीं है। यह लैंगिक समानता, उनके विचारों और दृष्टिकोणों के बारे में है, उनके प्रयासों और निर्णयों की सराहना करना, उन्हें अपने जीवन के निर्णय लेने के लिए मजबूर किए बिना उन्हें अपनी आवाज उठाने देना है। महिलाओं को तभी सशक्त बनाया जाएगा जब उन्हें अवसरों तक पहुंचने से रोका नहीं जाएगा।

सरकार ने पिछले कुछ वर्षों में "बेटी बचाओ बेटी पढाओ" योजना, महिला शक्ति केंद्र इत्यादि जैसी कई योजनाएं शुरू की हैं, लेकिन एक व्यक्ति के रूप में, समाज की महिलाओं के प्रति हमारी कुछ जिम्मेदारियां भी हैं। हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि हम अपने आसपास की हर महिला का सम्मान करें और उनके विचारों का सम्मान करें।

शिक्षा से बड़ा कोई उपहार नहीं है और अगर हम अपने प्रयासों से ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में एक लड़की को सशक्त बना सकते हैं, तो हम निश्चित रूप से समाज में बदलाव ला सकते हैं।

पिछले कुछ वर्षों में, भारत सरकार ने अनैतिक प्रथाओं और महिलाओं के खिलाफ यौन शोषण को मिटाने के लिए कई संवैधानिक और कानूनी सुरक्षा की पहल की है। फिर भी इतनी बड़ी समस्या के समाधान के लिए महिलाओं सहित सभी के निरंतर प्रयास की जरूरत है। आधुनिक समाज महिलाओं के अधिकारों के प्रति अधिक जागरूक है, इस दिशा में काम कर रहे स्वयं सहायता समूहों, गैर सरकारी संगठनों आदि की बढ़ती संख्या में योगदान दे रहा है।

महिलाएं अधिक खुले विचारों वाली होती हैं और प्रताडनाओं का सामना करते हुए सभी आयामों में अपने अधिकारों को प्राप्त करने के लिए समाज की प्रतिकूलताओं को तोड़ती हैं।

संसद द्वारा अपनाए गए कुछ तथ्य : -

- समान पारिश्रमिक अधिनियम-1976,
- दहेज निषेध अधिनियम-1961,
- अनैतिक व्यापार (रोकथाम) अधिनियम-1956,
- गर्भावस्था का चिकित्सा रद्दकरण अधिनियम - 1971,
- मातृत्व लाभ अधिनियम - 1961,
- सती आयोग (रोकथाम) शामिल हैं। अधिनियम - 1987,
- बाल विवाह निषेध अधिनियम - 2006,
- गर्भधारण पूर्व और प्रसव पूर्व निदान तकनीक (विनियमन और दुरुपयोग की रोकथाम) अधिनियम - 1994,
- कानूनी अधिकारों के साथ महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए, काम पर महिलाओं का यौन उत्पीड़न (रोकथाम, सुरक्षा) अधिनियम - 2013 आदि।

भारत में महिलाओं को सुरक्षा प्रदान करने और महिला अपराध को कम करने के लिए, सरकार ने एक और किशोर न्याय अधिनियम (देखभाल और बाल संरक्षण) विधेयक, 2015 (विशेषकर निर्भया मामले में एक आरोपी किशोर की रिहाई के बाद) पारित किया। यह अधिनियम पहले के भारतीय किशोर अपराध कानून 2000 (किशोर न्याय, बच्चों की देखभाल और संरक्षण) अधिनियम, 2000 का विस्तार है, ताकि आपराधिक अपराधों के लिए किशोर आयु को 18 से घटाकर 16 वर्ष किया जा सके।

भारतीय समाज को वास्तव में महिला सशक्तिकरण देने के लिए, महिलाओं के खिलाफ कुरीतियों का मुख्य कारण जो कि पदानुक्रमित और पुरुष-प्रधान सामाजिक संरचना है, को समझने और समाप्त करने की आवश्यकता है।

महिलाएं दुनिया में सब कुछ हासिल कर सकती हैं। उन्हें बस पंखों की जरूरत है और वे अपने दम पर ऊंची उड़ान भर सकती हैं!

गीत नया हमें रचना है...



श्री आलोक सक्सेना
वैज्ञानिक सहायक

हर दिन गीत नया हम गाएँगे,
सब मिलकर मुस्कुराएँगे,
बीते पल में जो मिली निराशा
उसे भूलाते जाएँगे !

मिलकर नयी किताब लिखेंगे,
उसमें अच्छी बात कहेंगे
कुछ मीठी, कुछ खट्टी-तीखी
अच्छी-अच्छी याद लिखेंगे

जब-जब आए नया साल
मिलकर नव इतिहास रचाना है
जिनके मुँह में नहीं निवाला,
उन तक सब कुछ पहुँचाना है

हर दिन हर वर्ष एक नया संकल्प
लेकर हमें साथ बढ़ना है
चाहे सुनामी आए या आए कोविड
मानवता को जगाए रखना है,
हर दिन गीत नया हमें रचना है

निर्माण, सेवा एवं संपदा प्रबंध निदेशालय मना रहा है आजादी का अमृत महोत्सव



श्री ए.एस. यादव
मुख्य अभियंता, सामान्य सेवा अनुभाग



श्री विनोद मालाकार
कार्य सहायक







जैसा कि हम सभी जानते हैं कि भारत लम्बे समय तक गुलाम रहा था। ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना के बाद धीरे धीरे भारत अंग्रेजों के अधीन होता गया और भारत के सभी राजाओं ने अंग्रेजों की अधीनता स्वीकार कर ली और भारत में अंग्रेजी शासन स्थापित हो गया।

लेकिन भारतीयों को अंग्रेजी शासन व्यवस्था बिल्कुल ही मंजूर नहीं थी। धीरे धीरे अंग्रेजी शासन से खिलाफत शूरु हो गई और सन्1857 की क्रांति का आगाज़ हुआ। उस विद्रोह का परिणाम सन् 1947 को मिला ।

महात्मा गांधी ने भारत छोड़ो आंदोलन का आगाज़ किया। और फिर 15 अगस्त 1947 के दिन आजादी का सूरज उदय हुआ।

उस दिन आज तक 15 अगस्त को आजादी का उत्सव मनाकर उन सभी वीर शहीदों का स्मरण किया जाता रहा है। मगर केंद्र सरकार ने वर्ष 2021 में 75वें आजादी के उत्सव पर आज़ादी का अमृत महोत्सव की शुरुआत की है जो लगातार वर्ष 2023 तक चलेगा।

परमाणु ऊर्जा विभाग और निर्माण, सेवा एवं संपदा प्रबंध निदेशालय

वर्ष 1965 में परमाणु ऊर्जा विभाग ने मुंबई स्थित अपनी विभिन्न यूनिटों के वैज्ञानिक एवं तकनीकी पदाधिकारियों को आवास प्रदान करने हेतु देवनार (अब अणुशक्तिनगर) में स्वतंत्र आवासीय परिसर स्थापित करने की जिम्मेदारी, एक संघटक इकाई ट्रांबे टाउनशीप परियोजना (टीटीपी) को सौंपी। अप्रैल 1982 में इसे निर्माण एवं सेवा वर्ग (सी एंड एस ग्रुप) के रुप में गठित किया गया। वर्ष1972 से संपदा प्रबंध निदेशालय आवासीय

कालोनी का आवंटन एवं रखरखाव कर रहा था। तदुपरांत, जून 1996 को इस यूनिट का विस्तार, निर्माण,सेवा समूह एवं संपदा प्रबंध निदेशालय दोनों को मिलाने से वर्तमान के निर्माण, सेवा एवं संपदा प्रबंध निदेशालय (निसेसंप्रनि) के रुप में किया गया है, जिसको मुंबई महानगर में पऊवि की भूमि की अभिरक्षा के साथ साथ क्वार्टरों के आवंटन एवं रखरखाव की अतिरिक्त जिम्मेदारी सौंपी गई है।

आज़ादी के अमृत महोत्सव का अर्थ

आज़ादी का अमृत महोत्सव का अर्थ नए विचारों का अमृत है। एक ऐसा महाउत्सव है जो स्वतंत्रता की ऊर्जा का अमृत है, जो हमें सदैव देश के प्रति समर्पित रहने की प्रेरणा देता है। हमारे मन में नए विचारों, नए संकल्पों की क्रांति लाता है।

आजादी के महोत्सव का उद्देश्य

आजादी के महोत्सव के उपलक्ष्य में प्रत्येक विभाग अपने कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार करके कार्यक्रम का आयोजन करेगा। इस अभियान के तहत डीसीएसईएम में अनेकों कार्यक्रम, सांस्कृतिक कार्यक्रम, पोस्टर, बैनर, आदि कार्यक्रम और आयोजन शामिल है।

अपने देश की तरक्की में परमाणु ऊर्जा विभाग और DCSEM कदम से कदम मिला कर चल रहा है। इसी कड़ी में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए और इस महोत्सव को लेकर तरह-तरह के महाअभियान जारी है।

1. डी.ए.ई. के सांस्कृतिक केन्द्र (इन्द्रधनुष) का उद्घाटन



2. स्वतंत्रता दिवस 2021 का उत्सव





3. HBCHRC, विशाखापट्टनम में वृक्षारोपण



4. अणुशक्तिनगर में संचार टावर्स की स्थापना



5. स्वच्छता पखवाड़ा महोत्सव के अंतर्गत कई कार्यक्रम आयोजित किए गएऔर आगे भी तरह-तरह के अभियान जारी है।



क. अणुशक्तिनगर में मधुबन शहरी वन का उद्घाटन



ख. अणुशक्तिनगर में पार्कों का उद्घाटन

1. रिम-जिम पार्क (अणुशक्तिनगर) का उद्घाटन
2. रिम-जिम पार्क कामेट का उद्घाटन

ग. अध्यक्ष ए.ई.सी. द्वारा अणुशक्तिनगर में संगम जल वायु विहार का उद्घाटन



6. विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए और इस महोत्सव को लेकर तरह-तरह के महाअभियान जारी है-



7. ऊर्जा संरक्षण के क्षेत्र में भी विभिन्न कार्यक्रम-

क. रुफ टॉप सोलर सिस्टम (चरण- I)



1. रुफ टॉप सोलर पी. वी. सिस्टम (वेंकटगिरी) का शिलान्यास
2. रुफ टॉप सोलर पी. वी. सिस्टम (पी.टी.ए.ए.एफ.) का उद्घाटन

3. रुफ टॉप सोलर पी. वी. सिस्टम (वी.एस. भवन) का उद्घाटन

4. रुफ टॉप सोलर पी. वी. सिस्टम (ए.ई.आर.बी.) का उद्घाटन

ख. रुफ टॉप सोलर सिस्टम (चरण- II) कार्यरत है

ग. फ्लशिंग के लिए रिसाइकल्ड पानी की आपूर्ति (वज्र एवं चक्र बिल्डिंग)



घ. फ्लशिंग के लिए रिसाइकल्ड पानी की आपूर्ति (फेज- I) न्यू मंडाला क्षेत्र



ड. ईवी चार्जिंग स्टेशन

वर्तमान में, निर्माण, सेवा एवं संपदा प्रबंध निदेशालय, परमाणु ऊर्जा विभाग की विभिन्न इकाईयों के साथ-साथ उसकी



सहायता प्राप्त संस्थानों तथा अन्य सरकारी विभाग जैसे विज्ञान/इलेक्ट्रॉनिकी, जैव-प्रौद्योगिकी आदि के लिए आवास, छात्रावास, विद्यालय, चिकित्सालय, प्रयोगशाला तथा अन्य सार्वजनिक भवनों के निर्माण, जन-स्वास्थ्य, विद्युत, वातानुकूलन तथा संवातन कार्यों की योजना, अभिकल्पन, अभियांत्रिकी, निष्पादन, परीक्षण आदि कार्य कर रहा है। इसके अतिरिक्त, निदेशालय अणुशक्तिनगर तथा मुंबई शहर के अन्य स्थानों पर स्थित परमाणु ऊर्जा विभाग की आवासीय कॉलोनियों की सिविल, विद्युत, यांत्रिक, संपदा प्रबंधन के प्रचालन तथा अनुरक्षण एवं सुरक्षा सेवाओं के लिए कार्य किये जा रहे हैं।

अभियांत्रिकी सेवा समूह का प्रयास है कि मुंबई स्थित अणुशक्तिनगर एवं अन्य पऊवि परिसर के रहिवासी वैज्ञानिक समूह को यथासंभव उत्कृष्ट सेवाएँ उपलब्ध कराया जाए ।सभी फ्लैटों, कार्यालयों, विद्यालयों एवं औषधालयों को ठीक-ठाक रखने के लिए अभियांत्रिकी सेवाएँ समूह नियमित अनुरक्षण कार्य करता है। इस समूह द्वारा सभी फ्लैटों, भवनों, सब-स्टेशन, विद्युत आपूर्ति नेटवर्क, सडक की बत्तियाँ, जल आपूर्ति नेटवर्क, मलजल निपटान एवं उपचार संयंत्र, सड़क, लॉन, खेल के मैदान का दैनिक रखरखाव, नियमित रखरखाव, निवारण रखरखाव एवं मरम्मत रखरखाव और संपूर्ण अणुशक्तिनगर का सामान्य रखरखाव कार्य कर रहा है ।

इसी प्रकार अपनी चुनौतियों का सामना करते हुए निर्माण, सेवा एवं संपदा प्रबंध निदेशालय आजादी का महोत्सव मना रहा है।

निदेशालय द्वारा कोविड-19 महामारी के दौरान निर्माण और सेवाओं का प्रबंधन



श्री ए. एस. यादव
मुख्य अभियंता, सामान्य सेवा अनुभाग



श्री ए. एन. शुक्ल
वैज्ञानिक अधिकारी

अचानक दिनांक 22 की रात्रि मार्च 2020 को भारत सरकार द्वारा कोविड-19 महामारी की परिस्थिति में लॉकडाउन की घोषणा करने के बाद सब कुछ ठप हो गया। सेवाओं को बनाए रखने और निर्माण गतिविधियों को जारी रखने में निसेसंप्रनि के सामने नई चुनौतियां सामने आई।

टीएमसी वैजाक, एसएमएफ और आरएमपी कार्यों, जीसीएनईपी चरण II, आरएमआरसी, टाइप VE के 312 फ्लैट, 356 फ्लैट, एचबीएनआई हॉस्टल, लिगो के लिए साइट कार्यालय के परियोजना स्थलों पर महामारी के दौरान निर्माण गतिविधियां जारी रहीं और आगे बढ़ीं। मार्च और अक्टूबर 2020 के बीच उपरोक्त पूंजीगत कार्यों पर निष्पादित सिविल और एमईपी/ MEP कार्यों के लिए संचयी बिल भुगतान रुपये 80.00 करोड़ का था। महामारी के दौरान, कम संसाधन, स्टाफउपस्थिति पर प्रतिबंध और सार्वजनिक परिवहन का बहुत ही सीमित संचालन का सामना करते हुए युनिट के कार्यकलाप जारी रखना मानो कठीनतम परीक्षा की घडी थी।

सेवाओं का निर्बाध संचालन सुनिश्चित किया गया जैसे -10 टन प्रतिदिन ठोस अपशिष्ट का प्रोसेसिंग, 10 मिलियन लीटर प्रति दिन जल आपूर्ति का वितरण और 30 लाख यूनिट / माह बिजली की आपूर्ति, 50 किमी सड़क नेटवर्क का रखरखाव, 120 लिफ्टों का रखरखाव, अग्निशामक प्रणाली, सीवरेज प्रणाली, पुनर्नवीनीकरण पानी की आपूर्ति, सुरक्षा निगरानी प्रणाली और संचार नेटवर्क। महामारी के दौरान हुए प्रमुख ब्रेकडाउन में पानी की पाइप लाइन, सुरक्षा निगरानी प्रणाली की बहाली और पंप हाउसों में खराबी और पानी SCADA की मेन स्क्रीन, 300 मिमी व्यास में रिसाव को रोकना, प्री-मानसून और निवारक अनुरक्षण कार्यों को समय पर पूरा करना शामिल है। महामारी के दौरान निष्पादित अनुरक्षण कार्यों के लिए संचयी बिलिंग 60.00 करोड़ रुपये थी जो सामान्य वार्षिक बजट आबंटन का लगभग 35% है। अणुशक्तिनगर में ठेकेदार और विभाग के कर्मचारियों के लिए आवास की व्यवस्था करके और उन्हें भोजन आदि प्रदान करके और महाराष्ट्र सरकार और एमसीजीएम द्वारा जारी किए गए COVID-19 प्रोटोकॉल का पालन करते हुए उपरोक्त सभी का प्रबंधन किया गया।

महामारी के दौरान निर्माण और अनुरक्षण गतिविधियों



यूवी ब्लास्टर

के लिए कुल 74 नए कार्य आदेश जारी किए गए। तथा कार्य सम्बंधी अन्य प्रस्ताव एवं भुगतान समय से क्रियान्वित हुए। डिजाइनरों ने भी साथ-साथ 500 वर्किंग ड्रॉइंग जारी कर समर्थन किया। कोविड-19 लॉक डाउन के दौरान परिवहन सबसे बड़ी चिंता का विषय रहा है। प्रशासनिक और लेखा कर्मियों के लिए पिकअप और ड्रॉप के लिए परिवहन सुविधा की व्यवस्था आपातकालीन वाहनों को तैनात करके की गई थी।

सार्वजनिक/आवासीय भवनों की स्वच्छता, यू.वी. ब्लास्टर्स, हैंड्स फ्री डिस्पेंसर, सोशल डिस्टेंसिंग के लिए मार्किंग, हैंड्स फ्री हैंड वाशिंग, सार्वजनिक भवनों और मुख्य सुरक्षा द्वारों पर कीटाणुशोधन गेटवे की स्थापना, ऑक्सीजन के स्तर (एसपीओ 2) की जांच और थर्मल मॉनिटरिंग आदि व्यवस्थाएं विभिन्न स्थानों / प्रवेश / निकासी बिंदुओं पर स्थापित / सुनिश्चित की गई थी, तैनात मजदूरों/कर्मचारियों के बीच कोविड से संबंधित मामलों को जांच/नियंत्रण में रखा गया है।

महामारी के दौर में उपर्युक्त अनुकरणीय कार्य के साथ, निसेसंप्रनि ने महामारी के दौरान निर्माण उद्योग को चलायमान रखने के लिए निर्माण उद्योग के "कोरोना योद्धाओं के लिए पुरस्कार" श्रेणी के तहत CIDC विश्वकर्मा पुरस्कार प्राप्त किया है।



सॅनिटायझेशन सुरंग

जिंदगी



अनिल बावस्कर
प्रधान, ईएसडी - II

बचपन कितना होता है सुहाना,
ना कमाने की झंझट, ना कल का रोना।

फिर तरूणाई आती है प्यारी सुहानी,
बनते नये किस्से नयी कहानी।

फिर चाहिए नौकरी या धंदा पानी,
देखो घर परिवार और दाना पानी।

गुजर जाती है ऐसे ही जिंदगानी,
आता बुढापा, तब बन जाती सयानी।

रे मानुस ! चलती रहेगी जीवन की चक्की
कभी सांसे , कभी मौत पक्की ।

जल अनमोल है



श्री एस.के.भिसे
अधीक्षक, पीएच एंड एम



श्री दीवान सिंह
प्रभारी अभियंता

"जल बचाओ विश्व बचाओ"

आजादी के समय, हमारे पास ग्रामीण भारत में लगभग 15 लाख जल निकाय फैले हुए थे, लेकिन अब तक12 लाख से अधिक या तो अतिक्रमण कर लिया गया है या प्रदूषित कर दिया गया है। इसका असर अब महसूस किया जा रहा है क्योंकि लगभग 72 जलभृत सूख रहे हैं।

भारत के जल पुरुष-वॉटर मॅन, राजेंद्र सिंह ने अपने एक साक्षात्कार में बताया कि दुनिया आपदा की ओर बढ़ रही है, क्योंकि पानी तीसरे विश्व युद्ध की शुरुआत का मुख्य कारण हो सकता है।



अणुशक्तिनगर के विभिन्न स्थानों पर उच्च स्तरीय भूजल जलाशयों (एचएलजीआर)/ईएसआर में एमसीजीएम से लगभग 9.0 एमएलडी पीने योग्य पानी प्राप्त किया जा रहा है और अणुशक्तिनगर में 42 सेक्टरों वाले 16 पंप हाउसों के माध्यम से दैनिक आधार पर वितरित किया जा रहा है।

निसेसंप्रनिविभिन्न उपायों को अपनाकर पानी बचाने के लिए अपना काम कर रहा है जैसे :

पर्यवेक्षी नियंत्रण और डेटा अधिग्रहण (SCADA) प्रणाली द्वारा पानी का वितरण:

SCADA प्रणाली के माध्यम से जल आपूर्ति वितरण प्रणाली को पूरी तरह से स्वचालित कर दिया गया है जिसमें केंद्रीकृत निगरानी और सभी पंप हाउसों के स्वचालित संचालन और एक्चुएटर के साथ दैनिक परिचालन वाल्व, पानी की आपूर्ति लाइनों में दबाव की निगरानी, पंपों की ऑटो प्राइमिंग, नियंत्रित तरीके से वाल्वों के ऑटो संचालन जैसी विशेषताएं पूर्व निर्धारित पम्पिंग/ आपूर्ति अनुसूची के अनुसार हैं।

अणुशक्तिनगर के बड़े जल आपूर्ति नेटवर्क के संचालन में मानवीय त्रुटियों के कारण अतिप्रवाह आदि के कारण पानी की बर्बादी हो सकती है। केंद्रीकृत नियंत्रण कक्ष, मुख्य पंप हाउस में SCADA प्रणाली की मदद से जल आपूर्ति नेटवर्क के टूटने और रिसाव का तुरंत पता लगाया जाता है और बंद करने जैसी त्वरित कार्रवाई की जाती है। रिमोट ऑपरेशन के माध्यम से सेक्टर वाल्व बहुत पानी बचाता है, मैन्युअल ऑपरेशन में ऐसी त्वरित कार्रवाई संभव नहीं थी। सिस्टम दैनिक पंपिंग शेड्यूल के अनुसार पानी की टंकियों और पंपिंग सिस्टम के स्तर की निगरानी करता है।



मुख्य पंप हाउस, अणुशक्तिनगर में SCADA नियंत्रण कक्ष

पुराने पाइपलाइन नेटवर्क को बदलना:

पुरानी जलापूर्ति पाइप लाइनों को बदलने का कार्य चरणबद्ध तरीके से शुरू किया गया है ताकि पाइप लाइनों में टूट-फूट को कम किया जा सके और लीकेज को कम किया जा सके। नया जलापूर्ति पाइप नेटवर्क बिछाया जा रहा है जिससे कीमती पानी की बर्बादी कम होती है।

24 X 7 समान जल वितरण:

जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है, इमारतों में सभी ओवरहेड टैंकों को समान जल वितरण प्राप्त करने के लिए कई क्षेत्रों का गठन किया गया है। प्रत्येक क्षेत्र की पानी की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए जलापूर्ति का समय समान जल वितरण के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए निर्धारित किया गया है। यहां तक कि पानी का वितरण भी कई निवासियों की रोजाना पानी जमा करने और फेंकने की प्रवृत्ति पर काबू पा लेता है जिससे पानी की बर्बादी कम हो जाती है।

फ्लशिंग और बागवानी के लिए पुनर्चक्रण पानी का उपयोग:

उपचारित अपशिष्ट जल का उपयोग पानी के पुनर्चक्रण के अलावा और कुछ नहीं है। कीमती जल संसाधनों को बचाने के लिए जल का पुनर्चक्रण प्रगति पर है। पुनर्चक्रण पानी का उपयोग मुख्य रूप से बागवानी, फ्लशिंग, अग्निशामक और एयर कंडीशनिंग अनुप्रयोगों के लिए किया जाता है। वर्तमान में, अणुशक्तिनगर के कुछ भवनों में फ्लशिंग के उद्देश्य से उपचारित जल का उपयोग किया जा रहा है और अन्य भवनों (2500 फ्लैटों) के लिए पुनर्चक्रण पानी के उपयोग को सुविधाजनक बनाने के लिए आवश्यक पाइपिंग और प्लंबिंग सिस्टम के संशोधन का कार्य प्रगति पर है और कार्य पूरा होने के बाद, वर्ष 2022 के अंत तक प्रतिदिन 7.0 लाख लीटर पीने योग्य पानी की बचत होगी।

वर्ष 2025 के अंत तक सभी शेष फ्लैटों में फ्लशिंग के लिए पुनर्चक्रण पानी की आपूर्ति करने की योजना है, जिससे प्रति दिन 13.0 लाख लीटर पीने योग्य पानी की बचत होगी। वर्ष 2025 के अंत तक कुल मिलाकर लगभग 20-25 लाख लीटर पीने योग्य पानी की बचत होगी।

बागवानी के लिए पुनर्चक्रण पानी के उपयोग से भूजल के पुनर्भरण में मदद मिलेगी जिसके परिणामस्वरूप जल संरक्षण होगा।

हाँ, ये तो मेरा गाँव नहीं



श्रीमती अंजली कारडा
वैज्ञानिक अधिकारी

सूरज की किरणों ने मिलकर
आँगन में धूप सजाई थी
साँझ सुनहरा कागज़ लेकर
कोई संदेसा लाई थी

तारों का नभ ओढ़े रैना
फिर चुनार-सी लहराई थी
हर आलम वैसा है फिर भी
आँगन बरगद की छांव नहीं
हाँ, ये तो मेरा गाँव नहीं
हाँ, ये तो मेरा गाँव नहीं

गलियारे आवाज़ लगाते
नुक्कड़ पर भी चहक वही है
फूलों की मुस्कान वही है
कलियों में भी महक वही है

हाँ, चूड़ी श्रृंगार वही है
कंगन में भी खनक वही है
सावन, बादल, पतझड़, काजल
भीगे बचपन की नाव नहीं
हाँ, ये तो मेरा गाँव नहीं
हाँ, ये तो मेरा गाँव नहीं

कितने सावन बीत गए हैं
फिर भी लगता बेगाना क्यों
चंचल मन ने मानो बदला
इस दुनिया में ये ठिकाना क्यों

सब कुछ पाकर भी लगता है
खाली-खाली हर कोना क्यों
झूठे नातों का मरहम है
पर कोई भरता घाव नहीं
हाँ, ये तो मेरा गाँव नहीं
हाँ, ये तो मेरा गाँव नहीं

स्वच्छ एवं हरित अणुशक्तिनगर - एक मिसाल



श्रीमती सोनाली शुक्ला
वैज्ञानिक अधिकारी

निसेसंप्रनि, परमाणु ऊर्जा विभाग की सेवा इकाई के रूप में अपनी भूमिका बखूबी समझता है और निसेसंप्रनि की हमेशा से कोशिश रही है कि वो परमाणु ऊर्जा विभाग में कार्यरत सभी कर्मचारियों की सुविधाओं और जरूरतों का खयाल रखे।

न केवल निर्माण बल्कि अनुरक्षण (रख-रखाव) और साथ ही अणुशक्तिनगर और मुंबई स्थित सभी आवासीय कॉलॉनियों में जीवनयापन के लिए सर्वोत्तम वातावरण उपलब्ध कराना भी निसेसंप्रनि का लक्ष्य है। इस लक्ष्य को पूरा करने की ओर हमारे कदम निरंतर आगे बढ़ते चले जा रहे हैं।

पिछले एक-दो वर्षो में अणुशक्तिनगर एवं मुंबई स्थित सभी आवासीय कॉलॉनियों में ओपन जिम, प्लेपार्क्स और अणुशक्तिनगर में मधुबन (शहरी वन), अलमोड़ा एम्फीथियेटर (रंगभूमि), संगम जलवायु विहार जैसी योजनाओं को कार्यरूप में परिणत किया गया। बच्चे और बडे सभी **ओपन जिम और प्ले पार्क्स** का आनंद ले रहे हैं।





मधुबन (शहरी वन) के मियावाकी संकल्पना को अणुशक्तिनगर वासियों ने खूब सराहा.



अलमोड़ा रंगभूमि में नुक्कड़ नाटक की प्रस्तुति (स्वच्छता पखवाड़ा वर्ष 2021 व वर्ष 2022 के दौरान) का सभी ने भरपूर आनंद उठाया।



संगम जलवायु विहार एक बडी उपलब्धि है, क्योंकि एक ऐसी जगह जिसके आसपास से लोग गुज़रना पसंद नहीं करते थे, आज वह जगह लोगों के लिये सबसे मनोरम स्थल बन गया है।





इस तरह अणुशक्तिनगर के रहने वालों के लिये एक स्वास्थ्यवर्धक और आनंददायक वातावरण निर्मित हुआ है, जिससे उनकी जीवन शैली और बेहतर हो गयी है। ऐसे वातावरण में रहने से यहाँ रहने वाले हर एक व्यक्ति की कार्य क्षमता बेहतर होगी, कार्य उत्पादकता बढेगी ; साथ ही हर व्यक्ति काम के साथ साथ, जीवन के प्रति भी सकारत्मक रवैया रखेगा।

हमारा लक्ष्य यह भी है कि अणुशक्तिनगर, जो कि मुंबई और देश के **सर्वश्रेष्ठ आवासीय परिसर** के रूप में जाना जाता है, वह **उत्कृष्टता के नये मापदण्डों पर खरा उतरे।** मुझे यह बताते हुए अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है कि इस लक्ष्य को पूरा करने के लिए हमने कई कदम उठाये हैं। अणुशक्तिनगर की कई





इमारतो में रूफ टॉप सोलर पैनल लगाये गये हैं जिससे हम करीब 250 किलो वाट बिजली का उद्पादन कर रहे हैं और जल्द ही कुछ और सोलर पैनल्सके संस्थापन से 255 किलो वाट अतिरिक्त बिजली उत्पन्न होगी।

हम अणुशक्तिनगर में **प्लाज्मा आधारित इंसिनिरेटर** की स्थापना में सफल हो चुके हैं जिसका उद्घाटन 16 फरवरी 2021को किया गया।





इतना ही नहीं, वर्तमान सीवेज ट्रीट्मेंट प्लांट अब बड़े पैमाने पर अपशिष्ट जल पर उपचार कर रहा है और यह पुनः चक्रित पानी बागवानी और ड्ब्लू सी में फ्लश हेतु उपयोग में लाया जा रहा है।





1.8 टन जैव निम्नीकरणीय अपशिष्ट/बायोडिग्रेडेबल कचरा 6 बायोगैस संयंत्रों द्वारा कम्पोस्ट किया जा रहा है. 3 टन बायोगैस संयंत्र निर्माणाधीन हैं और आगे 2 X 1.5 ton क्षमता & 50 KPD बायोगैस संयंत्रों को संस्थापित करने की योजना है। इस तरह हम गीले कचरे से उत्पन्न खाद को बागवानी के लिये प्रयुक्त कर रहे है और बायोगैस संयंत्रों से उत्सर्जित मीथेन गैस का उपयोग बिजली बनाने में करेंगे, जिसके लिये 40kVA के जनरेटर का संस्थापन हो चुका है। बायोगैस संयंत्र गीले कचरे को ऊर्जा के संसाधन में परिवर्तित कर रहे हैं। भविष्य में पुनश्चक्रित अपशिष्ट का पुनःचक्रण होगा।





इन सबके अलावा हमारी एक और उपलब्धि है कि हमने 16 फरवरी 2021को अणुशक्तिनगर के प्रथम **ई–वाहन चार्जिंग पॉइंट** का उद्घाटन गुलमर्ग बिल्डिंग के सामने स्थित सबस्टेशन/ अनुरक्षण कार्यालय के बाहर किया और पब्लिक ई-चार्जिंग स्टेशन का उद्घाटन16 फरवरी 2022 को पुलिस चौकी, न्यू मंडाला एवं टी एम सी अतिथि गृह के पास किया गया।







इतना ही नहीं, पब्लिक टॉयलट्स का निर्माण भी करवाया गया है।

इस तरह इको-फ्रेंडली तरीके अपनाने की हर सम्भव कोशिश की जा रही है। निदेशालय का लक्ष्य अणुशक्तिनगर को **जीरो डिस्चार्ज कॉलॉनी** बनाना भी है.

इस तरह हम भारत सरकार के, परम्परागत ऊर्जा स्रोतों पर हमारी निर्भरता कम करने, सौर ऊर्जा का दोहन करने, कार्बन उत्सर्जन को कम करने और स्वच्छ भारत अभियान के लक्ष्य प्राप्ति में भी योगदान दे रहे हैं।

जल्द ही **अणुशक्तिनगर सही मायनों में हरित और स्वच्छ टाऊनशिप होगा** और **वो दिन दूर नहीं जब अणुशक्तिनगर देश के सामने एक ऐसा उदाहरण होगा जिसकी मिसालें दी जाएंगी।**

हमारे निदेशक महोदय के इस सपने को साकार करना निसेसंप्रनि के अधिकारियों व कर्मचारियों **के सहयोग** के बिना असंभव था। इस सफलता के लिए निसेसंप्रनि के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी शुभ-कामनाओं तथा प्रशंसा के हक़दार हैं। यह विश्वास है किभविष्य में भी यह निदेशालय नये सोपान तय करता रहेगा।

रोज़ाना

दौड़ लगाते चल निकले हम
रब जाने क्या-कुछ है पाना
शायद उस जमघट का मैं भी
हिस्सा बनती हूँ रोजाना

वक्त की बाज़ी चलती है यूँ
जाने कब किसके हक़ में हो
उसको ही मंज़िल मिलती है
इक हूंकार हर धडक में हो

अपनी अपनी आशाओं से
अंबर का दामन छू जाना
शायद उस जमघट का मैं भी
हिस्सा बनती हूँ रोजाना

चुभती बातें मुशकिल राहें
मन फिर भी है लक्ष्य को साधे
जैसे धड़कन चलती रहती
इन साँसों की डोरी बांधे

कोई इसको जीवन कहता
कोई खुद ही में खो जाना
शायद उस जमघट का मैं भी
हिस्सा बनती हूँ रोजाना

दुनिया इतनी संगदिल क्यों है
जग मुट्ठी मे करना चाहे
रेत रुकी है कब हाथों मे
कौन यहा किसको समझाए

सब कुछ किसको किधर मिला है
यूँ सब का है आना जाना
शायद उस जमघट का मैं भी
हिस्सा बनती हूँ रोजाना

- श्रीमती अंजली कारडा
वैज्ञानिक अधिकारी

जीरो डिस्चार्ज की ओर एक कदम



श्री एस.के.भिसे
अधीक्षक, पीएच एंड एम



श्री शुभम तालियान
वैज्ञानिक अधिकारी

अपशिष्ट/ अशुद्ध पानी पर यदि का उपचार नहीं किये बिना, अपशिष्ट जल की मात्रा विनाश का कारण बनेगी, जैसा कि आज भी विकासशील देशों में होता है। विश्व स्तर पर, सभी अपशिष्ट पानी का 80 प्रतिशत से अधिक बिना उपचार के छोड़ दिया जाता है। अतःउपचार का सामान्य लक्ष्य अपशिष्ट पानी को यथासंभव शुद्ध करना है और इसे मानव और पृथ्वी को सुरक्षित और संपन्न रखने के लिए पर्यावरण में वापस भेजना है।

अपशिष्ट पानी में मनुष्य और पारिस्थितिकी तंत्र के लिए जहरीले तत्व होते हैं। अपशिष्ट जल उपचार सुविधाएं पानी को शुद्ध करने और विकासशील देशों में वर्तमान में देखी जाने वाली जल के आभाव कि स्थितियों को खत्म करने में मदद करती हैं। अशुद्ध पानी से स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण जोखिम पैदा होते हैं, जो सालाना 1.7 मिलियन मौतों का कारण बनते हैं, जिनमें से 90 प्रतिशत से अधिक विकासशील देशों में हैं। कई विकासशील देशों में हैजा और शिस्टोसोमियासिस सहित पानी से संबंधित कई बीमारियां फैली हुई हैं, जहां पर्यावरण में छोड़ने से पहले घरेलू और शहरी अपशिष्ट जल का केवल एक बहुत छोटा अंश (कुछ मामलों में 5 प्रतिशत से कम) का उपचार किया जाता है।

अपशिष्ट पानी उपचार पारिस्थितिकी तंत्र की भी रक्षा करता है। मछली और जलीय जीवन को ताजे पानी की आवश्यकता होती है। जब उनका जल पर्यावरण अपशिष्ट जल से भरा होता है, तो वे जीवित नहीं रह सकते। यदि रसायन, जैसे नाइट्रोजन और फॉस्फेट, अत्यधिक मात्रा में नदियों, धाराओं या पानी के बड़े निकायों में प्रवेश करते हैं, तो यह पौधों की अत्यधिक वृद्धि का कारण बनता है जो पानी में विषाक्त पदार्थों को छोड़ता है। यह ऑक्सीजन की कमी और मृत क्षेत्रों की ओर जाता है; ऐसे क्षेत्र जहाँ मछलियाँ और अन्य जलीय जीवन अब मौजूद नहीं रह सकते हैं।

अणुशक्तिनगर लगभग 9 एमएलडी पानी की खपत करता है और 7.2 एमएलडी अपशिष्ट जल उत्पन्न करता है। निसेसंप्रनि ने अणुशक्तिनगर में अनुपचारित अपशिष्ट जल के मुद्दों से निपटने और अणुशक्तिनगर के लिए शून्य निर्वहन के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक कदम उठाया है।

मौजूदा सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट (एसटीपी) का विवरण नीचे दिया गया है:

- मौजूदा एमबीबीआर एसटीपी
- वेस्टर्न सेक्टर में - 1.50 एमएलडी
- वृंदावन में - 0.50 एमएलडी
- आकाशगंगा में मौजूदा एनजीपीएसटीपी - 0.10 एमएलडी
- मौजूदा पारंपरिक एसटीपी
- वेस्टर्न सेक्टर में - 1.00 एमएलडी

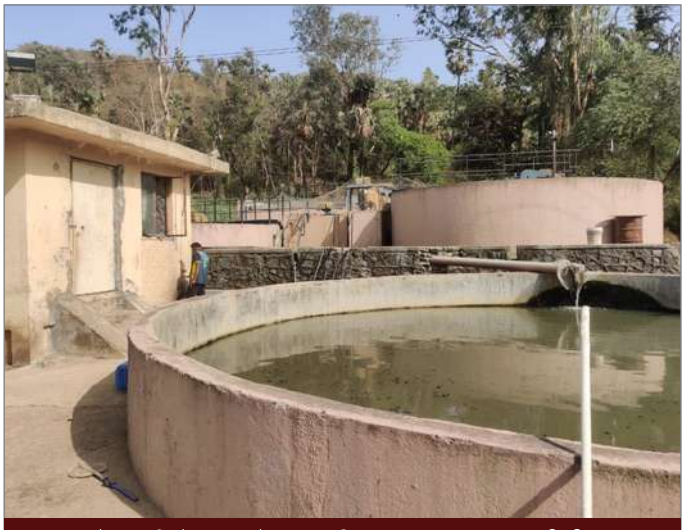
अब तक 3.1 एमएलडी अपशिष्ट जल का उपचार किया जा रहा है, हालांकि यह एमसीजीएम की आवश्यकता को पूरा करता है, लेकिन पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण और शून्य निर्वहन के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए और अणुशक्तिनगर में फ्लशिंग और बागवानी पानी की पूरी आवश्यकता को पूरा करने के लिए, निम्नलिखित एसटीपी की योजना पहले ही बनाई जा चुकी है।

- निर्माणाधीन एमबीबीआर एसटीपी
- वेस्टर्न सेक्टर में - 2 X 1.5 एमएलडी
- बृंदावन में एसटीपी का विस्तार - 0.5 एमएलडी
- न्यू मंडला में एचजीएसबीआर टाइप एसटीपी - 1.5 एमएलडी
- (आईजीसीएआर/ बीएआरसी प्रौद्योगिकी पर आधारित) कुल– 5.0 एमएलडी

उपरोक्त सभी एसटीपी के चालू होने के बाद सभी संयंत्रों की कुल क्षमता 8.1 एमएलडी हो जाएगी। 7.2 एमएलडी के अपशिष्ट जल उपचार के साथ, फ्लशिंग और बागवानी उद्देश्य के उपयोग के लिए लगभग 6 एमएलडी पुनर्नवीनीकरण पानी उपलब्ध होगा। इससे निसेसंप्रनि अणुशक्तिनगर से अपशिष्ट जल के शून्य उत्सर्जन (जीरो डिस्चार्ज) के लक्ष्य को प्राप्त कर लेगा।



वेस्टर्न सेक्टर में एमबीबीआर टाइप एसटीपी



वेस्टर्न सेक्टर में पारंपरिक प्रकार का एसटीपी

परिवर्तन



श्रीमती रानी सरदेसाई
प्रवर श्रेणी लिपिक

जिंदगी के दो सच-
एक मृत्यू तो दूसरा परिवर्तन ।
मृत्यू ना चाहे कोई,
किंतु परिवर्तन चाहे सभी।

किसी को खाने में परिवर्तन,
किसी को काम में परिवर्तन,
किसी को घर में परिवर्तन,
तो किसी को जीने में परिवर्तन।

ग्रहों के परिवर्तन से,
बनती-बिगड़ती किस्मत।
इन्साफ के परिवर्तन से,
चलती-रुकती देश की उन्नत।

विज्ञान के आविष्कार ने,
लाए परिवर्तन अनेक।
सद्परिवर्तन बनाए रखे,
प्रकृति को हमेशा नेक।

बाकी सब क्षणिक है अनुज....
जो ब्रह्मांड में रहेगा कायम,
वही है परिवर्तन का नियम ।

सौर ऊर्जा का दोहन



श्री तजिंदर लाम्बा
वैज्ञानिक अधिकारी



श्री मयंक शर्मा
वैज्ञानिक अधिकारी

सूर्य से पृथ्वी द्वारा ग्रहण की गई सौर ऊर्जा लगभग 1.8 x10 शक्ति 11MW है जो वर्तमान खपत दर से बहुत अधिक है। इसलिए सौर ऊर्जा निरंतर आधार पर ऊर्जा की सभी वर्तमान और भविष्य की मांगों को पूरा कर सकती है और इस प्रकार यह सबसे विश्वसनीय ऊर्जा स्रोतों में से एक साबित होती है। यह ऊर्जा का एक स्वच्छ स्रोत भी है। भारत में सौर ऊर्जा की अपार संभावनाएं हैं। देश में प्रति वर्ष औसतन तीन सौ गरम दिन होते हैं और औसतन प्रति घंटा विकिरण 200 मेगावाट/ स्क्वे.कि.मी प्राप्त करता है। जवाहरलाल नेहरू राष्ट्रीय सौर मिशन (जेएनएनएसएम) ने फीड-इन-टैरिफ रिजिम स्थापित कर और स्पष्ट विनियमन का मसौदा तैयार कर उद्योग को महत्वपूर्ण बढ़ावा दिया है। मिशन ने अगले दशक में 20GW सौर पीवीऔर सीएसपीबिजली क्षमता के निर्माण का लक्ष्य रखा है।

सौर पीवी प्रणाली की मुख्य विशेषताएं:

सौर फोटो वोल्टिक सेल में निम्नलिखित मुख्य विशेषताएं हैं:

- बिजली पैदा करने के लिए कोई ईंधन शामिल नहीं है।
- सौर विकिरण प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है और निर्बाध है।
- यह पर्यावरण मित्रवत है। इसे शुष्क क्षेत्रों में स्थापित किया जा सकता है।
- सौर पैनल या मॉड्यूल स्थिर होते हैं।
- सोलर मॉड्यूल कम से कम 20-30 साल तक चलना चाहिए।
- सौर मॉड्यूल को खिड़कियों, दीवारों, छत की टाइल्स या पेर्गोलस के रूप में भवन में समेकित किया जा सकता है।
- सौर बिजली को ग्रिड में डाला जा सकता है।
- मांग या बजट बढ़ने पर अतिरिक्त सौर मॉड्यूल बाद में जोड़े जा सकते हैं।

रूफ टॉप एसपीवी सिस्टम

रूफटॉप फोटोवोल्टाइक प्रणाली एक ऐसी प्रणाली है जिसमें आवासीय या व्यावसायिक भवनों की छतों पर स्थापित एक या अधिक फोटोवोल्टिक पैनलों का उपयोग करते हुए सूर्य के प्रकाश को बिजली में परिवर्तित किया जाता है। रूफटॉप फोटोवोल्टिक पावर स्टेशन में विभिन्न घटकों में फोटोवोल्टिक मॉड्यूल, माउंटिंग सिस्टम, केबल्स, सौर इनवर्टर और अन्य विद्युत सहायक उपकरण शामिल हैं।

शहरी वातावरण बड़ी मात्रा में खाली छत का स्थान प्रदान करता है और स्वाभाविक रूप से संभावित भूमि उपयोग और पर्यावरण संबंधी चिंताओं से बच सकता है। रूफटॉप सोलर इंसोलेशन का अनुमान लगाना एक बहुआयामी प्रक्रिया है, क्योंकि रूफटॉप्स में इनसोलेशन वैल्यू निम्नलिखित से प्रभावित होती हैं :

- वर्षा का समय
- मौसम की स्थिति
- आसन्न इमारतों की छाया
- पेड़ों की और लटकती हुई वनस्पतियों की छाया
- छत की ढलान

एक औसत इमारत में अपनी सभी सामान्य सेवाओं की आपूर्ति के लिए पर्याप्त सौर ऊर्जा का उत्पादन करने के लिए आवश्यक संख्या में सौर पैनलों के लिए छत पर पर्याप्त जगह होती है। उपयुक्त इनवर्टर का उपयोग करके सौर पैनल द्वारा उत्पन्न डी सी करंट को ए सी धाराओं में परिवर्तित करके घरेलू विद्युत भार को पूरा करने के लिए सौर पैनल सरणियों को आकार दिया जा सकता है। हाई पावर प्राप्त करने के लिए, कई वर्ग फुट जगह पर श्रृंखलाबद्ध कई पैनल लगाए जा सकते हैं और पैनल (मॉड्यूल) क्षेत्र पर और समानांतर सर्किट स्थापित किए जा सकते हैं। सोलर ॲरे को इस तरह

परिभाषित किया जाता है कि यह कई मॉड्यूल का समूह है जो श्रृंखला में इलैक्ट्रीकली जुड़े होते हैं- आवश्यक धारा और वोल्टेज उत्पन्न करने के लिए समानांतर संयोजन।

सौर ऊर्जा की लागत में गिरावट और सौर ऊर्जा के विकास की आवश्यकता के लिए अधिमूल्यन के साथ, हाल ही में कई सौर ऊर्जा परियोजनाओं को लागू किया गया है। देश में सौर ऊर्जा की विशाल क्षमता का एक महत्वपूर्ण हिस्सा जरूरत और सामर्थ्य के अनुसार, विभिन्न आकारों के ग्रिड से जुड़े सौर फोटोवोल्टिक बिजली प्रणालियों को बढ़ावा देकर विकसित किया जा सकता है, साथ ही निवेश पर पर्याप्त लाभ भी सुनिश्चित किया जा सकता है।

निसेसंप्रनि ने सौर ऊर्जा के दोहन और इसके उपयोग में अधिकतम वृद्धि करने के लिए एक कदम उठाया है। अणुशक्तिनगर में विभिन्न इमारतों की छतों में लगभग 2 मेगावाट बिजली उत्पादन की क्षमता है, हालांकि छतों पर उपलब्ध स्पष्ट क्षेत्र, छत की स्थिति आदि को देखते हुए अणुशक्तिनगर में विभिन्न भवनों की छतों पर लगभग 01 मेगावाट पी ग्रिड- टाईड सोलर पीवी सिस्टम संस्थापित किया जा सकता है।

सोलर पीवी सिस्टम की संस्थापना के लिए दो बिजनेस मॉडल यानी कैपेक्स और ओपेक्स (CAPEX & OPEX) बाजार में मौजूद थे। तथापि पानी की टंकियों, लिफ्ट रूम, आस-पास के भवनों, आसपास के पेड़ों आदि की छाया की कमी के कारण किसी भी भवन में एक स्थान पर 200 kWp सौर पैनलों का संस्थापन संभव नहीं था। इसलिए, कैपेक्स व्यावसायिक मॉडल को अपनाया गया था।

रूफ टॉप सोलर पीवी सिस्टम (चरण- I) की 250 kWp क्षमता को 2021 में सफलतापूर्वक चालू कर दिया गया है। इस प्रणाली में सोलर पीवी मॉड्यूल, विभिन्न प्रकार के स्ट्रिंग इनवर्टर, ॲरे जंक्शन बॉक्स, ACDB, पर्यावरण निगरानी प्रणाली आदि शामिल हैं और प्रति वर्ष लगभग 4 लाख यूनिट हरित ऊर्जा उत्पन्न होंगी। परियोजना की पे बैक अवधि लगभग 5 वर्ष है और 25 वर्षों के जीवन काल के दौरान सिस्टम कार्बन उत्सर्जन को 8200 मीट्रिक टन CO2 से भी कम करेगा।

इसके अलावा, रूफ टॉप सोलर पीवी सिस्टम की स्थापना लगभग 255kWpisप्रगति पर है। कुल सिस्टम उत्पादन लगभग 4.1 लाख होगा और इसके 25 वर्षों के जीवन काल के दौरान कार्बन उत्सर्जन 8500 मीट्रिक टन CO2 से कम हो जाएगा।



पीटीएएएफ में रूफ टॉप सोलर पीवी सिस्टम का उद्घाटन
Inauguration of Roof Top solar PV system at PTAAF



नियामक भवन-एबी में रूफ टॉप सोलर पीवी सिस्टम का उद्घाटन
Inauguration of Roof Top solar PV system at NiyamakBhavan-A&B



विक्रम साराभाई भवन में रूफ टॉप सोलर पीवी सिस्टम का उद्घाटन
Inauguration of Roof Top solar PV system at V.S.Bhavan

मेरा कचरा मेरी जिम्मेदारी



श्री पी.एस.सालुंके
प्रभारी अभियंता
(एच एन्ड सीएमएस)

अणुशक्तिनगर एक बड़ी टाउनशीप है जिसमें 280 आवासीय और अन्य भवन हैं। वर्ष 2018 से पहले, निसेसंप्रनि निर्दिष्ट स्थानों पर कचरा एकत्र करता था और आगे की प्रक्रिया के लिए बृहन्मुम्बई महानगर पालिका द्वारा परिवहन किया जाता था (भारत सरकार, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा एसडब्ल्यूएमनियम-2016 के कार्यान्वयन से पहले)।

चूंकि कॉलोनी कचरे की थोक उत्पादक (प्रति दिन 100 किलो से अधिक अपशिष्ट उत्पादन) है, तथापि दिनांक 1 जनवरी 2018 से प्रभावी नियमों के अनुसार,अणुशक्तिनगर में उत्पन्न सभी प्रकार के घरेलू अपशिष्ट जैसे सूखा कचरा, गीला कचरा, घरेलू जैव-खतरनाक कचरा आदि को अणुशक्तिनगर में ही एकत्रित कर संसाधित किया जाता है।

उपरोक्त को ध्यान में रखते हुए, निसेसंप्रनि ने अणुशक्तिनगर में उत्पन्न कचरे के उचित प्रबंधन के लिए कॉलोनी में घरेलु सुविधा विकसित की है, जिससे अणुशक्तिनगर में स्वच्छ और हरित वातावरण विकसित करने में मदद मिलेगी।

अणुशक्तिनगर में प्रतिदिन उत्पन्न कचरा

1) कुल ठोस अपशिष्टः - 10 मीट्रिक टन (लगभग)
2) गीला कचराः- 6.0 मीट्रिक टन (लगभग))
3) सूखा कचराः- 4.0 मीट्रिक टन (लगभग .)

कचरे के प्रसंस्करण/प्रोसेसिंग के लिए निसेसंप्रनि द्वारा पहल

1. निवासी द्वारा केवल स्रोत पर ही कचरे का पृथक्करण।
2. घर-घर जाकर अलग किए गए कचरे का संग्रहण।
3. ताप्ती, वृंदावन और रजनीगंधा भवन के पास स्थित केंद्रों पर पृथक किए गए कचरे के प्रसंस्करण के लिए परिवहन करना।
4. प्रसंस्करण केंद्रों में सूखे कचरे और गीले कचरे का और अच्छा पृथक्करण।
5. सूखे कचरे को पुनर्चक्रण योग्य और पुनर्चक्रण ना करने योग्य कचरे में अलग किया जाता है।
6. गीले कचरे का उपचार दो प्रक्रियाओं द्वारा किया जाता है।

प्रसंस्करण/प्रोसेसिंग की विधियां

क) सूखा कचरा प्रसंस्करण:-

प्रतिदिन उत्पन्न होने वाले 4.0 मीट्रिक टन सूखे कचरे में से, लगभग 3.0 मीट्रिक टन पुनः प्रयोज्य है और लगभग 1.0 मीट्रिक टन लगभग गैर-पुनः प्रयोज्य है। पुनर्चक्रण योग्य सूखा कचरा (धातु, कार्ड बोर्ड, कागज, प्लास्टिक, आदि) निसेसंप्रनि द्वारा नियुक्त एजेंसी के माध्यम से अधिकृत पुनर्चक्रणकर्ताओं को सौंप दिया जाता है। वृंदावन भवन के पास स्थित प्लाज्मा आधारित भस्मक में गैर-पुनर्नवीनीकरण योग्य अपशिष्ट का उपचार किया जाता है ।

बी) गीला कचरा प्रसंस्करण : –

i) खाद बनाना

इस विधि में गीले कचरे को उपयुक्त कल्चर और कोको पीट की मदद से खाद बनाने के लिए विशेष रूप से बनाए गए गड्ढों में जमा किया जाता है। अणुशक्तिनगर में ऐसे 65 गड्ढों का निर्माण किया गया है (बृंदावन के पास 50 और ताप्ती भवन के पास और पीछे 15), जिनमें प्रतिदिन लगभग 4200 किलो गीला कचरा संसाधित किया जाता है। हालांकि, ओल्ड मंडला में ड्रम में कंपोस्टिंग भी की जा रही है।

ii) बायोगैस संयंत्र :–

गीले कचरे का जैव गैसीकरण अणुशक्तिनगर में दो निसर्गऋण प्रकार के 1000 किलोग्राम क्षमता के बायो गैस संयंत्रों में किया जाता है (ट्रेनिंग स्कूल हॉस्टल और बीएआरसी अस्पताल कैंटीन के पास स्थित)। संयंत्र मुख्य रूप से अस्पताल, प्रशिक्षण स्कूल छात्रावास और निलगिरी कैंटीन, अस्पताल कैंटीन से उत्पन्न गीले कचरे के उपचार के लिए अभिप्रेत हैं।

इसके अलावा निसेसंप्रनि द्वारा ताप्ती अपशिष्ट प्रसंस्करण केंद्र में500 किलोग्राम क्षमता के मॉड्यूलर 6 नए बायो गैस संयंत्र स्थापित किए गए हैं। यह प्लांट भापअकेंद्र द्वारा विकसित बायो गैस

तकनीक पर काम करता है, जो मीथेन गैस और खाद पैदा करता है। संयंत्र से उत्पन्न मीथेन गैस का उपयोग बिजली पैदा करने के लिए किया जा रहा है।इस प्रकार उत्पन्न बिजली का उपयोग प्रसंस्करण मशीनरी चलाने के लिए किया जाता है।

ई-कचरा या इलेक्ट्रॉनिक कचरे में बैटरी, कंप्यूटर के पुर्जे, तार, किसी भी तरह के बिजली के उपकरण, बिजली और इलेक्ट्रॉनिक खिलौने, रिमोट, घड़ियां, सेल फोन, साथ ही बल्ब, ट्यूब लाइट और सीएफएल आदि शामिल हैं।

अणुशक्तिनगर में ई–कचरा बिन के लिए स्थल

- हस्तिनापुर मार्केट
- वृंदावन मार्केट
- सेक्टर मार्केट
- वेस्टर्न सेक्टर मार्केट
- न्यू मंडला मार्केट
- राजनीगंधा प्रसंस्करण केंद्र
- कामेट मार्केट
- सोसाइटी स्टोर, मानसरोवर
- निसर्गऋण के पास बायो गैस प्लांट(टीएसएच)
- रागमाला, दीपक
- सहकारी भंडार

हम अणुशक्तिनगर में बेहतर अपशिष्ट प्रबंधन के लिए कैसे मदद कर सकते हैं

- गीले और सूखे कचरे के लिए अलग कंटेनर
- साफ रखने के लिए सूखा कचरा
- सुनिश्चित करें कि सूखा कचरा गीला नहीं है
- खाद्य सामग्री को निपटाने से पहले प्लास्टिक/ कांच के कंटेनरों को धो लें।
- खतरनाक कचरे के लिए बैग रखें(टूटे हुए बल्ब, ट्यूबलाइट,प्रयुक्त किए गए चिकित्सीय वस्तुएं)
- रिकवरी के लिए अलग ई– कचरा सौंपे
- डायपर सैनिटरी नैपकिन को कागज में लपेटें और एक लाल क्रॉस के साथ चिह्नित करे
- गीले कूड़ेदान के नीचे कागज रखें

निसेसंप्रनि की उपलब्धियां

दिनांक 1/11/2020 से पहले कचरा संग्रहण प्रणाली हाइब्रिड (बिल्डिंग एसोसिएशन और निसेसंप्रनि) थी। अब पूरी कॉलोनी के लिए केंद्रीकृत कचरा प्रबंधन शुरू किया गया है।

1. 2.5 टन क्षमता का प्लाज्मा आधारित भस्मीकरण गैर-पुनर्नवीनीकरण योग्य कचरे के उपचार के लिए पिछले साल परीक्षण के आधार पर अणुशक्तिनगर के अंदर प्रदान किया गया था और अब इस मशीन को संशोधित / उन्नत नई मशीन से बदल दिया जाएगा।

अब,निसेसंप्रनि सप्ताह के सभी सातों दिन इस टाउनशीप के निवासियों की सेवा कर रहा है

पृथक्करण की गुणवत्ता 95% सेअधिक है।

- पहले सार्वजनिक भवन के उपयोगकर्ता अपने कचरे को प्रोसेसिंग केंद्र में लाते थे। अब, हमने उन्हें अपनी सेवाएं प्रदान कर रहे और उनके कचरे को हमारे प्रोसेसिंग केंद्र में ला रहे हैं।
- हम ने 'जीरो वेस्ट' हासिल कर लिया है, निसेसंप्रनि नगर निगम को कोई ठोस कचरा नहीं दे रहा है।



घर–घर से कचरे का एकत्रिकरण



गीले कचरे का अच्छे से पृथक्करण



गड्ढों में गीले कचरे के अपघटन की प्रक्रिया



इंसीनरेटर में गैर-पुनर्नवीनीकरण सूखे कचरे का उपचार



ताप्ती बिल्डिंग के पास बायो गैस संयंत्र

रोज-रोज सूरज है आता



श्री सुनील सोहंदा
प्रवर श्रेणी लिपिक

रोज-रोज सूरज है आता
नया-नया दिन है दिखलाता
अंधेरे को दूर है भगाता
खिली-खिली धूप है लाता
शाम को जब दिन ढल जाता
चँदा मामा है फिर आता
शीतलता है फिर फैलाता
कुदरत का ये पहलू दर्शाता।

जीवन में दुख के बाद सुख है आना
कुछ भी यहां टिक नहीं पाता
फिर भी मैं, मेरा में सबका जीवन है जाता
पर लोभ और अहंकार नाश नहीं हो पाता।

जीवन में हर परिवर्तन ईश्वर है लाता
जो है इस सत्य को जानता
दुख में भी वो सुख को है पाता
हर परिवर्तन को हंस कर है सहता
के ही है ईश्वर को भाता।

सोचो अगर ये परिवर्तन नहीं होता
ब्लॅक ऍण्ड व्हाइट के बाद कलर टिवी नहीं आता
टाइपरायटर के बाद कम्प्यूटर नहीं आता
टेलीफोन के बाद मोबाईल नहीं आता
सायकिल के बाद स्कूटर नहीं आता
ट्रेन के बाद प्लेन नहीं आता
तो जीने का क्या खास मजा आता?

आजकल के कोरोना के बाद ओमीक्रोन भी है आता
कब होगा ये समाप्त ये जग समझ नहीं पाता
पर जैसे हर क्षेत्र में परिवर्तन है आता
वैसे भाई इसका अंत मैं निकट ही पाता।

ऊर्जा संरक्षण की आवश्यकता



श्री के.आर.रेड्डी
अधीक्षक इलेक्ट्रिकल

"ऊर्जा बचाओ ग्रह बचाओ"

दुनिया भर में अंतिम ऊर्जा खपत के लगभग 36% और लगभग 40% वैश्विक कार्बन उत्सर्जन के लिए बिल्डिंगें/इमारतें जिम्मेदार हैं। पिछले एक दशक से,भवन ऊर्जा की खपत को कम करने के साथ-साथ ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन के हिस्से को कम करने पर जोर दिया गया है, और ऊर्जा और पर्यावरण-बचत लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए ऊर्जा सेवाओं के महत्व को व्यापक रूप से मान्यता दी गई है।

ऊर्जा रूपांतरण प्रणाली में आम तौर पर हीटिंग, वेंटिलेशन, एयर कंडीशनिंग, लाइटिंग और रेफ्रिजरेशन सिस्टम का समावेश होता है।

निसेसंप्रनि ने ऊर्जा संरक्षण के लिए कई उपाय किए हैं जैसे ऊर्जा सक्षम एयर कंडीशनिंग सिस्टम, ऊर्जा सक्षम मोटर और एलईडी लाइटिंग आदि का उपयोग।

एलईडी प्रकाश: LED LIGHTING:

प्रकाश उत्सर्जक डायोड (एलईडी) आज की सबसे अधिक ऊर्जा सक्षम और तेजी से विकसित होने वाली विद्युत प्रौद्योगिकी है। गुणवत्ता वाले एलईडी लाइट बल्ब लंबे समय तक चलते हैं, अधिक टिकाऊ होते हैं, और अन्य प्रकार की रोशनी की तुलना में तुलनीय या बेहतर प्रकाश गुणवत्ता प्रदान करते हैं।

भारत में कुल बिजली खपत का लगभग 20% प्रकाश का योगदान है। पारंपरिक रोशनी,अत्यधिक अक्षम तापदीप्त बल्ब, घरेलू और सार्वजनिक प्रकाश क्षेत्रों में प्रकाश की अधिकांश जरूरतों को पूरा करते हैं। घरेलू और सार्वजनिक विद्युत व्यवस्था में एल ई डी के उपयोग से विद्युत की खपत में 50-90% की कमी हो सकती है।

सभी सरकारी भवनों के साथ-साथ सरकार द्वारा वित्त पोषित सभी सामुदायिक प्रकाश परियोजनाओं में एलईडी आधारित प्रकाश व्यवस्था की स्थापना करना अनिवार्य हो गया है। इसके अलावा, अब पारंपरिक फिक्स्चर्स बाजार से बाहर हो रहे हैं, चूंकि पारंपरिक फिश्चर के लिए स्पेयर पार्ट्स ढूंढना मुश्किल होता जा रहा है।

निसेसंप्रनि ने विभिन्न पऊवि भवनों में विद्युत फिक्स्चर्स को उपयुक्त LED विद्युत फिक्स्चर्स में बदल दिया है और प्रति वर्ष कुल ऊर्जा बचत 15,42,000 kWh / वर्ष हासिल की है और वर्ष 2022 के अंत तक कुल ऊर्जा बचत 16,75,000 kWh / प्राप्त की जाएगी।

ऊर्जा सक्षम मोटर और बीएलडीसी पंखे:

निसेसंप्रनि ने अणुशक्तिनगर में पानी की आपूर्ति पंप चलाने के लिए सभी पारंपरिक इंडक्शन मोटर्स को ऊर्जा सक्षम इंडक्शन मोटर्स से बदल दिया है, जिससे हम लगभग 1,50,000 kWh / प्रति वर्ष की बचत कर रहे हैं।

इसके अलावा, निसेसंप्रनि ने कार्यालय भवनों में सिंगल फेज इंडक्शन मोटर पंखों के स्थान पर ऊर्जा सक्षम बीएलडीसी पंखों की स्थापना शुरू कर दी है। बीएलडीसी पंखों के लाभ निम्नवत हैं:

- वजन अनुपात के लिए उच्च टॉर्क(torque)
- प्रति वाट अधिक टॉर्क
- बढ़ी हुई विश्वसनीयता
- आवाज में कमी
- लंबी उम्र

निसेसंप्रनि ने वर्तमान में 63,000 kWh /प्रति वर्ष की ऊर्जा की बचत की है और 2022 तक 1, 74,200 kWh की कुल ऊर्जा बचत प्राप्त करेगा। निसेसंप्रनि ने सभी आवासीय भवनों में चरणबद्ध तरीके से 2030 तक सभी पारंपरिक सीलिंग पंखों को बदलने की योजना बनाई है, जिससे 16,75,000 kWh /प्रति वर्ष ऊर्जा की बचत होगी।

ऊर्जा सक्षम एयर कंडीशनिंग सिस्टम:

निसेसंप्रनि ने सभी पारंपरिक स्प्लिट एसी इकाइयों को एनर्जी एफिशिएंट बीईई 5-स्टार रेटेड इन्वर्टर एसी इकाइयों से बदल दिया है और इस तरह लगभग 10% ऊर्जा की बचत की है यानी 1, 30,000 kWh/ प्रति वर्ष। इसके अलावा, निसेसंप्रनि ने विभिन्न कार्यालय भवनों में वीआरएफ एयर कंडीशनिंग सिस्टम स्थापित किया है और इस तरह लगभग 30% ऊर्जा की बचत की है अर्थात 1,40,000 kWh/ प्रति वर्ष।

गियरलेस लिफ्ट:

नई पीएमएसएम तकनीक की गियरलेस लिफ्ट बिल्डिंग प्रचालन लागत को कम करती है। पीएमएसएम 93 प्रतिशत कुशल या बेहतर हैं, पारंपरिक मशीनों की सामान्य 65 प्रतिशत दक्षता की तुलना में अनुकूल है। लिफ्ट के संचालन से जुड़ी प्रत्यक्ष ऊर्जा लागत आधुनिक प्रणालियों के अनुरूप काफी कम हो जाती है। नए गियरलेस मोटर्स आमतौर पर पारंपरिक तुलना में 40 प्रतिशत से 60 प्रतिशत कम ऊर्जा का उपयोग करते हैं। पीएमएसएम तुलनीय ट्रैक्शन मोटर्स की ऊर्जा का सिर्फ 30 प्रतिशत से 40 प्रतिशत उपयोग करता है।

निसेसंप्रनि ने लगभग 25% लिफ्टों को गियरलेस लिफ्टों से बदल दिया है और इस तरह लगभग 2,80,000 kWh /प्रति वर्ष की बचत की है। इसके अलावा नए लिफ्ट बिजली के चले जाने की स्थिति में यात्रियों के स्वचालित बचाव के लिए स्वचालित बचाव उपकरण (ARD) प्रदान कर रहे हैं।

यह निदेशालय न केवल 23,00,000 kWh/प्रति वर्ष ऊर्जा की बचत करता है, जिसकी लागत 230 लाख/ वर्ष है, बल्कि यह 1955 मीट्रिक टन/ वर्ष के कार्बन उत्सर्जन की काफी मात्रा में कमी में योगदान देता है और इस प्रकार वर्ष 2030 तक कार्बन उत्सर्जन में 35% की कमी के भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने में मदद करता है।।

युवा शक्ति का आव्हान



श्रीमती मीनाक्षी सिंह
वैज्ञानिक सहायक

इस देश के नौजवानों, तुम अपने को पहचानो,
तुममें है वो ताकत, जिससे आज़ाद हुआ था भारत
अपनी इस ताकत को तुम भूलो नहीं नादानों
तुम अपने को पहचानो, तुम अपने को पहचानो

शक्ति भी है तुममें, और भक्ति भी है तुममें
तुममें है वो जस्बा, जिसे देखें सारा कस्बा
अपने इस जस्बे को तुम भूलों नहीं नादानों
तुम अपने को पहचानो, तुम अपने को पहचानो

अपने देश के लिए कुछ करके इस दुनिया को दिखला दो
हर इंसान को भी तुम जीने का पाठ पढ़ा दो
अपने कर्तव्यों को तुम भूलों नहीं नादानों
तुम अपने को पहचानो, तुम अपने को पहचानो

इस देश की उम्मीदों को तुम आज नहीं तोड़ो
तुम अपने पैरों को सही राह पर मोडो
इस देश की उम्मीदों को तुम भूलों नहीं नादानों
तुम अपने को पहचानो, तुम अपने को पहचानो

तुम्हारे ही कंधों पर है देश का भार है सारा
तुम अपनी क्षमताओं से इसे विकसित देश बना दो
इस देश की उन्नति को तुम भूलों नहीं नादानों
तुम अपने को पहचानो, तुम अपने को पहचानो

शहर का सफर

शहर के उद्भव से स्मार्ट सिटी के उदय तक।



श्री अंशु गुप्ता
वास्तुकार

जीवन की शुरुआत– खानाबदोश जीवन



इतिहास में अधिकांश लोग एक खानाबदोश जीवन का नेतृत्व करते थे - भोजन के लिए वे जानवरों के शिकार और खाने योग्य पौधों पर आश्रित थे।

आबादी के लिये एक - अनुकूल पास-पड़ोस और जलवायु अनिवार्य है।

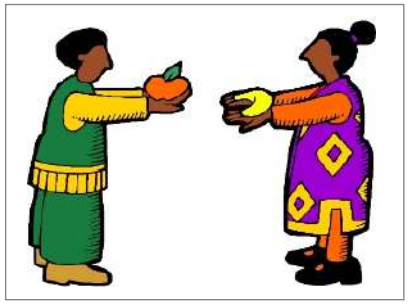
दूसरा रिहायशी जगह पर भोजन की उपलब्धता है।



सभ्यताओं की शुरुआत – मनुष्य ने, स्वयं के लाभ के लिए, फसलों की खेती और जानवरों को पालने की कला सीखी। इससे, लोगों का एक ही स्थान पर रहना जरूरी हो गया। साथ ही सभ्यताओं ने उपजाऊ नदी-घाटियों के साथ- साथ बढ़ना शुरू कर दिया।

शहर– एक व्यापार केन्द्र

पौधों और जानवरों की पालतू- करण से कुछ समय में भोजन की सामग्री अधिशेष हो गई। फलस्वरूप, स्थानीय केंद्र विकसित हुए और `शहर' का गठन किया गया। शहर, उस में रहने वाले सदस्यों के, व्यापार में लाभ के लिए और सभी प्रकार के संपर्क और संचार की सुविधा प्रदान करते थे।



शहरों में क्रांति

`शहर' स्थानीय प्रशासनिक, कानूनी तथा ऐतिहासिक स्थिति के आधार पर, बड़ी और स्थायी मानव बस्ती के रूप में उबरा।

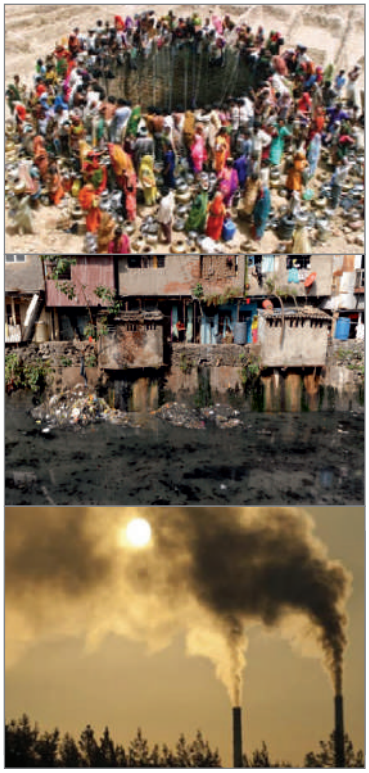
शहरों में कई क्रांतियों ने महान परिवर्तन चिह्नित किए और शहरों में सामाजिक, संस्कृति, दार्शनिक और प्रौद्योगिक बदलाव आया।



क्रांतियों के कई उदाहरणों में से कुछ हैं –

कृषि क्रांति, औद्योगिक क्रांति, वाणिज्य क्रांति और डिजिटल क्रांति इत्यादि।

शहरों को चुनौतियां



शहर, बहुत ही आकर्षक स्थान बन गये, क्योंकि वे न केवल रोजगार और काम, परंतु एक व्यक्ति को आनंद के लिए सुख सुविधाएँ भी प्रदान करते है। परिणाम स्वरूप अधिक से अधिक लोगों ने शहरों की ओर पलायन शुरू कर दिया। सस्ती हाउसिंग, यातायात का जमाव, प्रदूषण, प्राकृतिक संसाधनों की कमी, शहरों में प्रमुख चुनौतियां बन गई है। और हमारे शहरों को स्मार्ट होने की आवश्यकता पैदा हुई।

हमें स्मार्ट सिटी की आवश्यकता क्यों है?



विशेषज्ञों का अनुमान है दुनिया की शहरी आबादी 2050 तक दोगुनी हो जाएगी।इस बड़े पैमाने पर शहरी करण को संभालने के लिए, हमें, जटिल प्रबंधन, दक्षता बढ़ाने, खर्च को कम करने और जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए नए तरीके खोजने की आवश्यकता होगी। उद्देश्य है कोर बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध कराना और नागरिकों को एक सभ्य जीवन प्रदान करना। 'स्मार्ट' समाधान के द्वारा एक स्वच्छ और टिकाऊ पर्यावरण का निर्माण करना है।

स्मार्ट शहर की संकल्पना

स्मार्ट सिटी की अवधारणा भारत के किसी भी शहर के निवासी की कल्पना द्वारा निर्मित, बुनियादी सुविधाओं और सेवाओं की एक इच्छा सूची है, और आकांक्षा के स्तर पर उसका वर्णन भी शामिल है।

हम कल्पना करें की अगर हमारा शहर बात कर सकता, तो वह यातायात, प्रदूषण, पार्किंग के लिये रिक्त स्थान, पानी और बिजली पर हमें सीधा प्रसारण दे पाता।



कल्पना कीजिए कि इस जानकारी से निवासियों और आगंतुकों के लिए शहर में आर्थिक और पर्यावरण का सुधार हो सकता। काम करने की स्थिति और लोगों से उत्पादकता में सुधार सकता।

भारत सरकार का `स्मार्ट सिटी मिशन', एक बोल्ड और नई पहल है, जिसे सिटी के बाहर और भीतर से दोहराया जा सकता है। इस से अन्य नगर उत्प्रेरित होंगे और समरूप `स्मार्ट सिटी'की रचना होगी।

- मनुष्य का कर्तव्य है कि वह अपना पतन न होने दें बल्कि स्वयं का उद्धार करें ।
- प्रकृति से उतना ही लेना चाहिए जितनी आवश्यकता हो ।
- यदि मनुष्य इससे बेखबर रहे तो प्रकृति का भंडार रिक्त हो जाएगा ।
- प्रतिशोध और शोक किसी भी समस्या का समाधान नहीं है ।
- अहंकार के वृक्ष पर विनाश का फल आता है ।
- कर्म रेखा को भाग्य रेखा से अधिक गहरा होना चाहिए ।
- मित्रता ही सर्वश्रेष्ठ संबंध है ।
- आत्मा विधाता की है और उच्च आकांक्षाएं हमारी ।
- क्रोध की कटार क्रोधी की बुद्धि को काटती है ।
- आदर व्यक्ति की सम्पत्ति है ।
- नित्य कर्म करना कुछ न करने से अच्छा है ।

जीसीएनईपी साइट पर कोविड सुरक्षा

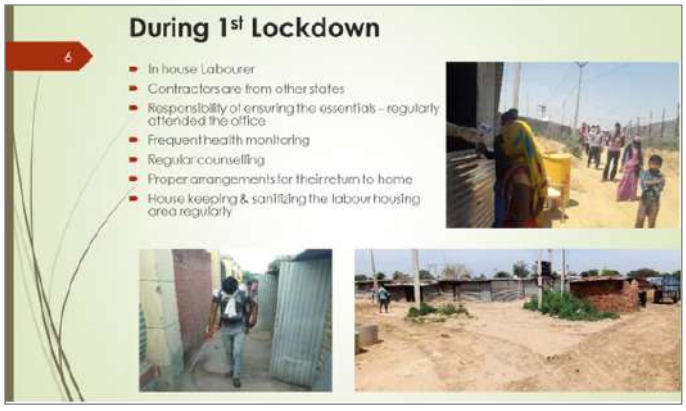


श्री मिलिंद गोवर्धन
मुख्य अभियंता (सी-1)



परिचय:

कोरोना वायरस के कारण दुनिया भर में 'महामारी' के प्रकोप के परिणामस्वरूप मार्च 2020 के अंतिम सप्ताह से देशव्यापी तालाबंदी लागू हो गई, जिसने श्रमिकोंऔर सामग्रियों दोनों के लिए संसाधनों के संदर्भ में निर्माण कार्यों को प्रभावित किया। करीब एक महीने से पूरी निर्माण गतिविधियां लगभग ठप पड़ी रहीं। गृह मंत्रालय के दिशा-निर्देशों के अनुरूप निर्माण कार्य स्थलों पर इनसीटू श्रमिकों के साथ सीमित संचालन अप्रैल 2020 के चौथे सप्ताह से उचित सावधानियों के साथ शुरू किया गया था। बाद में अनलॉकिंग अवधि के साथ अन्य साइटों पर निर्माण गतिविधियों का उत्तरोत्तर विस्तार किया गया।



चुनौतियां और इसका शमन:

लॉकडाउन के दौरान डीसीएसईएम के कर्मचारियों ने ठेकेदारों को श्रमिक शिविरों में उचित स्वच्छता प्रदान करने के लिए प्रेरित किया। भोजन और अन्य लॉजिस्टिक्स भी इनसीटू श्रमिकोंके लिए सुनिश्चित किए गए थे। स्थानीय प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों की मदद से श्रमिक शिविरों में समय-समय पर स्वास्थ्य जांच की व्यवस्था की गई।



लॉकडाउन के बाद, निर्माण को फिर से शुरू किया गया, शुरुआत में लॉकडाउन से पहले साइट पर उपलब्ध सामग्री के साथ। निर्माण कार्य फिर से शुरू करने के समय सभी सावधानियों और सुरक्षा उपायों जैसे स्वचालित तापमान जांच, बार-बार सैनिटाइज़ेशन करना,हाथ धोने के प्रावधान, पैर संचालित सैनिटाइज़र का प्रावधान, साबुन डिस्पेंसर, मार्किंग जैसे सभी उपाय किए गए थे।



निसेसंज्ञानि के 25 वर्षों की गौरवशाली निर्माण यात्रा



सुपरकंडक्टिंग साइक्लोट्रॉन बिल्डिंग, वीईसीसी, कोलकाता



राष्ट्रीय मस्तिष्क अनुसंधान केंद्र (NBRC), मानेसर, हरियाणा



नेशनल सेंटर फॉर प्लांट जीनोम रिसर्च (NCPGR), दिल्ली



नेशनल सेंटर फॉर सेल साइंस (NCCS), पुणे



एडवांस सेंटर फॉर ट्रीटमेंट, रिसर्च एंड एजुकेशन इन कैंसर (ACTREC), तलोजा, नवा मुंबई



इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ जियोमैग्नेटिज्म (IIG), पनवेल, नवी मुंबई



होमी भाभा राष्ट्रीय संस्थान (HBNI), अणुशक्तिनगर, मुंबई



किलबिल Cereche,अणुशक्तिनगर, मुंबई



खारघर, नवी मुंबई में औषधालय (Dispensary)



शारीरिक प्रशिक्षण, एथलेटिक और जलीय सुविधा (PTAAF), अणुशक्तिनगर, मुंबई



कोलाबा स्थित ओल्ड यॉचक्लब (OYC) का नवीनीकरण



राष्ट्रीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (NISER), भुवनेश्वर



राष्ट्रीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (NISER), भुवनेश्वर



राष्ट्रीय विज्ञान शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (NISER), भुवनेश्वर



अकादमिक ब्लॉक, सैद्धांतिक विज्ञान के लिए अंतर्राष्ट्रीय केंद्र (ICTS), बेंगलुरु



अकादमिक ब्लॉक, सैद्धांतिक विज्ञान के लिए अंतर्राष्ट्रीय केंद्र (ICTS), बेंगलुरु



टाइप II-बीफ्लैट, सीआईएसएफ (CISF), अणुशक्तिनगर, मुंबई



मेडिकल साइक्लोट्रॉन, कोलकाता



आईआईटी (IIT), पवई, मुंबई में कंप्यूटर केंद्र (Computeer Centere)



कंप्यूटर और सूचना भवन (C&I building), कोलकाता



इन्द्रधनुष Cultueral Centere (सांस्कृतिक केंद्र), अणुशक्तिनगर



निदेशक बंगला, एएमडी (AMD) - शिलांग



टाइप II-B फ्लैट्स, परमाणु खनिज निदेशालय (AMD) - शिलांग



टाइपवी-ई फ्लैट्स, वीईसीसी (VECC), कोलकाता



सिल्वर जुबली गेस्ट हाउस, वीईसीसी (VECC), कोलकाता



भौतिकी संस्थान (IOP), भुवनेश्वर



प्री- इंजीनियर्ड भवन (PEB), राजारहाट-कोलकाता



रेडियोधर्मी आयन बीम सुविधा (RIB), कोलकाता



विकिरण प्रौद्योगिकी के लिए एकीकृत सुविधा (IFRT), वाशी, नवीमुंबई



एएमडी (AMD), हैदराबाद में कार्यालय भवन



एफआरईटी भवन–टीआईएफआर (TIFR), हैदराबाद



डीएई कन्वेंशन सेंटर, अणुशक्तिनगर, मुंबई



Mo^{99} उत्पादन सुविधा -BRIT, BARC साउथगेट, मुंबई



एंट्रेंस कैनोपी, साहा परमाणु भौतिकी संस्थान SINP, कोलकाता



प्रायोगिक परमाणु खगोल भौतिकी में अनुसंधान के लिए सुविधा (FRENA), साहा परमाणु भौतिकी संस्थान SINP, कोलकाता



एम्फीथिएटर, वी एस भवन (V. S. Bhavan), अणुशक्तिनगर, मुंबई



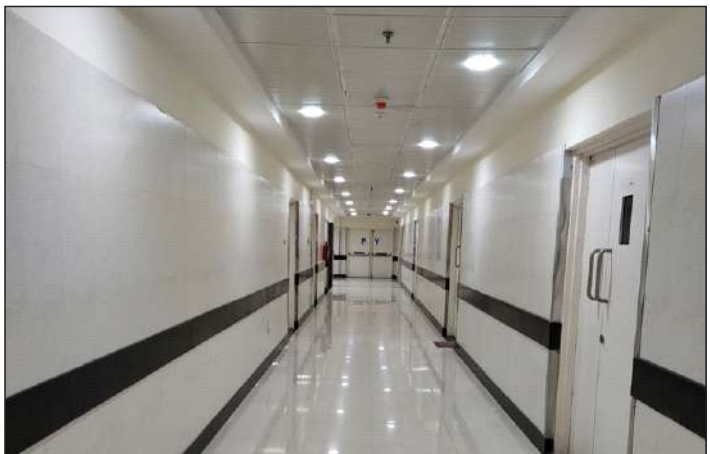
विकिरण चिकित्सा अनुसंधान केंद्र (RMRC), कोलकाता



एएमडी-एईआरबी बिल्डिंग, राजारहाट-कोलकाता



डायमंड जुबली गेस्ट हाउस (DJGH), राजारहाट, कोलकाता



होमी भाभा कैंसर अस्पताल और अनुसंधान केंद्र (TMC), विशाखापत्तनम



होमी भाभा कैंसर अस्पताल और अनुसंधान केंद्र (TMC), विशाखापत्तनम



टाइप II-B फ्लैट्स, RMP, मैसूर



टाइप IIIC फ्लैट्स, जीसीएनईपी (GCNEP), बहादुर गढ, हरियाणा



एसएनएसएस (SNSS), जीसीएनईपी(GCNEP), बहादुर गढ, हरियाणा



केंद्रीय भवन (Centeral Building, जीसीएनईपी (GCNEP) , बहादुर गढ, हरियाणा



एचबीएनआई/ बीएआरसी (HBNI/ BARC) प्रशिक्षुओं के लिए बैचलर एकोमोडेशन



एचबीएनआई/बीएआरसी (HBNI/ BARC) प्रशिक्षुओं के लिए मैरिड एकोमोडेशन

निदेशालय की राजभाषा गतिविधियाँ



श्रीमती हेमलता कदम
प्रवर श्रेणी लिपिक

निदेशालय संघ की राजभाषा नीति के सफल कार्यान्वयन की दिशा में प्रयत्नशील है। समय-समय पर राजभाषा विभाग एवं परमाणु ऊर्जा विभाग की ओर से जारी निर्देशों का अनुपालन किया जा रहा है। निदेशालय में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन के लिए प्रेरक व उत्साहवर्धक कार्यालयीन वातावरण है।

नियमित रुप से आयोजित राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों में विविध पहलुओं पर विचार विमर्श किया जाता है। अध्यक्ष, राभाकास एवं निदेशक निसेसंप्रनि तथा समिति के अन्य सदस्यों के मार्गदर्शन में हिंदी कार्यान्वयन सुचारु रुप से जारी है।

नवी मुंबई, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की छःमाही बैठकों में तथा नराकास की अन्य गतिविधियों में भी निदेशालय की सक्रिय सहभागिता रहती है। दिनांक 23.09.2021 को नराकास एवं कोंकण रेल्वे के तत्वावधान में राजभाषा हिंदी एवं तकनीकी सुविधाएँ विषय पर संगोष्ठी में हिंदी अधिकारियों ने सक्रिय सहभाग लिया। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में निदेशालय द्वारा आजादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर कहानी लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इसमें विभिन्न सदस्य कार्यालयों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

परमाणु ऊर्जा विभाग द्वारा हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए जारी प्रोत्साहन योजनाओं में भी अधिकाधिक संख्या में निदेशालय के कार्मिक भाग लेते हैं और पुरस्कार पाते हैं। इस वर्ष प्रोत्साहन योजना में लगभग 41 कार्मिकों ने भाग लिया था। वर्ष 2021-22 में पारंगत प्रशिक्षण के लिए 11 कर्मचारियों को एवं हिंदी टंकण के लिए 6 कर्मचारियों को नामित किया गया था।

कोविड के दिशानिर्देशों का पालन करते हुए निदेशालय के स्तर पर माह सितंबर 2021 में तकनीशियनों के लिए कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसमें 16 तकनीशियनों ने भाग लिया। निदेशालय के स्तर पर माह जनवरी 2022 में निम्नलिखित 4 हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

1. हिंदी टंकण प्रतियोगिता
2. स्वरचित कविता प्रतियोगिता
3. स्वरचित कहानी प्रतियोगिता
4. हिंदी निबंध प्रतियोगिता

इसमें कुल 30 पुरस्कार दिए गए।स्टाफ में हिंदी के प्रति रुचि बनाए रखने के लिए हिंदी पुस्तकालय का भी योगदान है। निदेशालय के कर्मचारियों ने कोविड-19 के दिशानिर्देशों का पालन करते हुए पुस्तकें पढ़ने के प्रति रूची बनाई रखी।

निदेशालय के 18 अनुभागों एवं 9 अनुरक्षण यूनिटों का माह दिसंबर 2021 में निरीक्षण किया गया और संबंधित अनुभागों को निरीक्षण रिपोर्ट प्रस्तुत की गई जो वार्षिक कार्यक्रम 2021-2022 में दिए गए अनुभाग निरीक्षण के निर्धारित लक्ष्य से अधिक है।

परमाणु ऊर्जा विभाग के मुंबई एवं नवी मुंबई स्थित पाँच एककों (निर्माण, सेवा एवं संपदा प्रबंध निदेशालय, क्रय एवं भंडार निदेशालय, भारी पानी बोर्ड, परमाणु ऊर्जा नियामक परिषद तथा विकिरण एवं आइसोटोप प्रौद्योगिकी बोर्ड) की संयुक्त राजभाषा समन्वय समिति के तत्वावधान में विभिन्न संयुक्त हिंदी कार्यक्रमों का समय-समय पर आयोजन किया गया जैसे-

- प्रत्येक तिमाही में एक संयुक्त हिंदी कार्यशाला काआयोजन संयुक्त रूप से किया गया।
- माह अगस्त- सितंबर 2021 में निसेसंप्रनि द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु संयुक्त रूप से चार हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

- दिनांक 14 सितंबर 2021 को संयुक्त रूप से हिंदी दिवस समारोह का वर्च्युअल माध्यम से आयोजन किया गया।

- संयुक्त राजभाषा समन्वयन समिति की ओर से क्रय एवं भंडार निदेशालय ने 11.01.2022 को विश्व हिंदी दिवस का वर्च्युअल आयोजन किया। इस में वार्ताकार के रुप में डॉ. सूर्यकांत गुप्ता, वैज्ञानिक अधिकारी,प्लाज्मा अनुसंधान संस्थान,गुजरात को आमंत्रित किया गया था। इसमें वार्ता का विषय था:- "सामाजिक लाभ हेतु पर्यावरण हितैषी प्लाज्मा प्रौद्योगिकी का योगदान"।

- दिनांक 24.03.2022 को निसेसंप्रनि द्वारा अर्ध-दिवसीय संसदीय राजभाषा प्रश्नावली पर कार्यशाला का आयोजन किया गया।

8 मार्च, 2022 को महिला दिवस के उपलक्ष्य में हिंदी में संगीत- नाटिका का लेखन व मंचन निदेशालय की उपनिदेशक (राजभाषा) श्रीमती अनुराधा दोडके द्वारा किया गया। इसकी प्रस्तुतिकरण में हिंदी अनुभाग ने सक्रिय सहयोग दिया।

इन सभी गतिविधियों एवं कार्यक्रमों के साथ-साथ हिंदी अनुभाग के दैनंदिन कार्यकलाप भी सुचारु रुप से जारी हैं। इनमें विभिन्न कार्यालयीन अनुवाद, टिप्पण-आलेखन, आंतरिक निरीक्षण करना, हिंदी पुस्तकालय का संचालन जैसे कार्य

प्राथमिक आधार पर सम्मिलित है।

निदेशक, निसेसंप्रनि व अध्यक्ष, राभाकास के आदेशों, राजभाषा कार्यान्वयन समिति एवं वरिष्ठ अधिकारियों के मार्गदर्शन, प्रत्येक वर्ग के कार्मिकों की मेहनत और योगदान तथा हिंदी अनुभाग के समर्पित कार्य संचालन से निदेशालय में राजभाषा हिंदी का कार्यान्वयन सुचारु ढंग से हो रहा है।

हिंदी है अस्मिता हमारी
हिंदी है पहचान हमारी

अस्तित्व का गौरव

क्यूँ समझे खुद को कमजोर तू
क्यूँ हिचके बोलने में, कठिन बोल तू
क्यूँ डरे तू किसी अन्याय से
क्यूँ सहमे तू किसी वार से!

जबकि,
तेरे होने से ही होते हैं एहसास कई
लगता है कोई शक्ति है पास कहीं
तू जननी, तू पत्नी, तू गुरु, तू प्रेरणा
तू कहीं द्वार के भीतर है तो कहीं विवेचना!

हे नारी !
नारी होना ही एक अस्तित्व है
नारी का मतलब ही ममत्व है
नारी तू जगत के लिए है ज्योति
नारी है तो मिलती हमें रोटी !

आओ हम सब मिलकर कुछ ऐसा करें
नारी को उसके अस्तित्व का गौरव दिलाएं

- श्री आलोक सक्सेना
वैज्ञानिक सहायक

निदेशालय में लेखा अनुभाग की शानदार यात्रा



श्रीमती एस. प्रेमलता
लेखा अधिकारी (कार्य)

पूर्व संपदा प्रबंध निदेशालय और निर्माण एवं सेवा समूह का विलय हो गया और दिनांक 1 जून 1996 को निर्माण, सेवा और संपदा प्रबंध निदेशालय (निसेसंप्रनि) का गठन किया गया। इकाइयों के विलय के साथ, संयुक्त लेखा नियंत्रक, निसेसंप्रनि के नेतृत्व में निसेसंप्रनि के लेखा अनुभाग का गठन किया गया था।

पिछले दो दशकों के दौरान, संगठन के समग्र लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए लेखा अनुभाग, काम करने के तरीके, लोगों के संरेखण और सहयोग में पूर्ण परिवर्तन हुआ है।यह कम्प्यूटरीकरण, लोगों के प्रशिक्षण, कौशल विकास और लेखा अनुभाग में काम करने वाले लोगों के सकारात्मक दृष्टिकोण के माध्यम से प्राप्त किया गया था।

कंप्यूटर के आगमन से पहले,निसेसंप्रनि में मैन्युअल रूप से लेखांकन किया जाता था। पहले की मैनुअल लेखा प्रणाली समय लेने वाली थी और इसमें मानवीय त्रुटि की संभावना थी। नुकसान या क्षति के मामले में कोई बैकअप रिकॉर्ड नहीं।

मैनुअल अकाउंटिंग की कमी को दूर करने के लिए, जो थकाऊ और बोझिल था, हमने निसेसंप्रनि में लेखा के कम्प्यूटरीकरण की प्रक्रिया शुरू की। निसेसंप्रनि में काम को कम्प्यूटरीकृत करने की दृष्टि से विकसित सॉफ्टवेयर का उपयोग करने के लिए लेखा टीम ने सुचारू रूप से संक्रमण किया है।

मौजूदा मैनुअल सिस्टम को नए विकसित कंप्यूटर सॉफ्टवेयर से बदलने के लिए लेखा टीम मेहनती थी और कम्प्यूटरीकरण में परिवर्तन को सफलतापूर्वक लागू किया।

कार्य में डब्ल्यूसीएमएस (WCMS) प्रोग्राम, ई-टेंडरिंग (E-Tendering), ई-प्रोक्योरमेंट (E-Procurement) पोर्टल और एएआईआईएस (AAIIS) जैसे वेतन प्रोग्राम की शुरुआत के साथ, लेखा अनुभाग का कार्यप्रवाह सुचारू हो गया है और अच्छी नियंत्रण प्रणाली स्थापित की गई है। निर्णय लेने और लागत लाभों में समग्र सुधार के लिए आवश्यक डेटा देने के लिए संबंधित अधिकारियों के साथ संबंधों में सुधार किया है।ऑनलाइन के माध्यम से, एक इन-हाउस सॉफ्टवेयर प्रोग्राम, जिसका नाम 'डीएईबीएएस' (DAEBAS) है, जो कि परमाणु ऊर्जा विभाग का एक अग्रणी कार्य है, निसेसंप्रनि की सभी बजटीय जानकारी/ डेटा पऊवि के बजट प्रभाग में निर्बाध रूप से प्रवाहित होती है।

कम्प्यूटरीकरण के बाद, काम के आसान निपटान में सुधार, पारदर्शिता, समय की बचत, काम की कोई पुनरावृत्ति नहीं, किसी भी समय अभिलेखों के बैकअप की उपलब्धता और लेखापरीक्षा प्रश्नों में कमी आई है।

संगठन के माहौल की दृष्टि से नया रूप देने के लिए एयरकंडीशनिंग सुविधा के साथ मॉड्यूलर फर्नीचर बैठने की व्यवस्था के साथ नवीनीकरण किया गया। इसका असर सभी अधिकारियों के उत्पादन पर भी पड़ा है।

लेखा अनुभाग एक बड़े परिवार के रूप में कार्य कर रहा है। एक दूसरे की सफलता, जन्मदिन और परिवार के सदस्यों के साथ छुट्टियों पर पिकनिक मनाते हैं। इससे एक-दूसरे की जरूरतों को समझने और सभी सदस्यों के बीच बेहतर समन्वय स्थापित करने में मदद मिल रही है। कोविड समय के दौरान, लेखा अनुभाग के लोगों ने सभी कोविड संबंधित प्रोटोकॉल का ध्यान रखते हुए उत्पादनदेने में एक दूसरे के साथ समन्वय के साथ काम किया है।

एक सफल टीम कई हाथों और एक दिमाग का समूह है।

एक साथ काम करना एक शुरुआत होती है।

एक साथ काम करना यशस्वी होने की निशानी होती है।

निसेसंप्रनि में बतौर लेखा अधिकारी (कार्य) के रूप में लेखा परिवार का हिस्सा बनकर मुझे बेहद खुशी हो रही है।

भोजन

(कहानी)



श्रीमती अनुराधा दोडके
उपनिदेशक (राजभाषा)

मामाजी का फोन आते ही कालिंदी व्याकुल हो उठी.... पिछले एक माह के ऊपर समय बीत गया माँ की शारीरिक हालत में कोई सुधार नहीं है... माँ 30 साल से डॉ. राणावत की पेशंट है... डॉ. राणावत जैसे माँ के लिए ईश्वर स्वरूप है...

कालिंदी को याद है इस तरह माँ के बीमार पड़ने के पहले रूटीन चेकअप के लिए वह माँ को डॉ. राणावत के क्लिनिक "आयुष्यमान" में ले गई थी... तब डॉ. ने कालिंदी से कहा था... "बेटा... अज्ञान में सुख होता है और इन्सान इसी में सुखी होता है.... कुछ ऐसी ही अवस्था है पद्मा मौसी की.... I mean तुम्हारी माताजी की.... इतने सालों से डायबीटीसऔर ब्लड प्रेशर की दवाइयाँ खा रही है.... इसका प्रतिकूल असर अंदर ही अंदर उसकी हड्डियों और किडनी पर हो रहा है.... She is suffering from chronic Arthratis, kidney problem, heart problem.... so many health complications... दवाइयाँ भी उस पर असर नहीं कर रही है.... फिर भी मैं उन्हें सहन होगी उतनी ही दवाइयाँ देता हूँ..... वह जब तक जीवित रहेंगी उन्हें खुश रखना...."

तब से कालिंदी माँ को लेकर मन ही मन डरी रहती है.... उस पर मामा का चिंतित करनेवाला फोन कॉल जैसे तैसे काम से दो दिन की छुट्टी लेकर कालिंदी बेंगलौर से अपने घर पूना पहुँची....

माँ की हालत देखकर वह चीख पड़ी.... फूट-फूटकर रोने लगी... मामा-मामी, भैय्या-भाभी सब उसे समझाने लगे.... वह कैसे समझे ? प्राण होते हुए भी शरीर निष्प्राण होकर बिस्तर पर पड़ा है.... माँ की तेजस्वी, स्वर्ण प्रदीप्त कांति म्लान होकर कुमहलाई है.....

माँ ने हलके से हाथ उठाकर कालिंदी के सिर पर रखा और इशारों से ही उसे रोने से मना किया कि "संध्या समय घर में रोते नहीं...." कालिंदी के कहने पर मामा-मामी रात को उसी के घर पररूक गए.... जैसे तैसे उदासीन घरवालों ने रात को भोजन किया.... माँ कुछ न खा सकी....

कालिंदी माँ के पैरों पर हाथ फेरते-फेरते वहीं कुर्सी पर बैठे-बैठे झपकियाँ लेने लगी.... "ऐsss! मुझे नारियल पानी चाहिए...." कालिंदी नींद से जग पड़ी... कौन बोल रहा है... उसने माँ की तरफ देखा... माँ ने फिर इशारों से बताया कि उसे नारियल पानी चाहिए..."

शाम को एअरपोर्ट से लौटते हुए रास्ते में कालिंदी ने पानी वाले दो नारियल खरीदे थे... पर माँ ने तब नारियल पानी नहीं पिया था.... कालिंदी रसोईघर में गई नारियल में छेद कर गिलास में पानी डालकर ले आई.... हौले से माँ को बिस्तर से उठाकर बिठाया एक हाथ का सहारा देकर बिठाया.... दूसरे हाथ से नारियल पानी पिलाया..... माँ ने थोड़ा पानी पिया.....

माँ फिर लेट गई.... कालिंदी को एकटक देखती रही.... कालिंदी समझ नहीं पा रही थी कि माँ के साथ हो क्या रहा है... बुखार में तप रही है.... डॉ. राणावत की दवाइयाँ तक असर नहीं कर पा रही है.... सोचते-सोचते कालिंदी घर के मंदिर से विभूति लाकर माँ के माथे पर लगाई.... उसके सिर पर हाथ फेरते-फेरते सिरहाने बैठ गई....

"उस रूम में कोई रो रहा है बेटा...." माँ ने धीमी आवाज़ में कालिंदी से कहा....

"नहीं माँ... वहाँ कौन रोएगा... सब तो सो गए हैं.... रात के अढाई बज रहे हैं... तुम भी सो जाओ..." कालिंदी सोच ही रही थी कि माँ तडाक् से उठ बैठी.... बेड से उतर गई, साथ वाले कमरे के दरवाजे तक गई और कहने लगी... "ऐ ! रोना बंद कर.... क्यों रो रही है.... कहीं और जाकेरो..."

कालिंदी कुछ समझ पाती माँ फिर बेड के पास आ गई और निढाल होकर बेड पर गिर पड़ी..... कालिंदी सहम गई.... माँ को क्या हो गया.... माँ किससे बात कर आई.... घर में और भी कोई है ? वह पूरा घर घूम आई.... घर में परिवार के सदस्यों के अलावा और कोई नहीं था....

सवेरे कालिंदी ने मामा से यह बात कही... मामा भी विचारों में खो गए... आधा दिन बड़ी बेचैनी में बिता... दोपहर का भोजन करने के लिए माँ को कालिंदी उठाने लगी.... और अवाक् रह गई....

उसे एक पल के लिए लगा यह मेरी माँ नहीं कोई और है..... उसने मामा को पुकारा.... मामा, भाई दोनों भी दूसरे रूम से पहुँचे..... "मामा... देखो ना..... मम्मी के साथ क्या हो रहा है...."

कालिंदी की बात सुनते ही माँ जो दीवार की तरफ मुँह कर लेटी थी, तुरंत इस करवट हो गई और मामा से कहने लगी....

"ऐsss! मुझे भूख लगी है..... मुझे खाना खिला..." एकाएक माँ की क्षीण आवाज़ बुलंद हो गई.... "मुझे खाना चाहिए..." मामी ने तुरंत थाली परोसकर दी.... मामा अन्न का कौर माँ के मुँह तक ले गया....

"ये खाना नहीं... मुझे मेरा खाना चाहिए..." मामा को जैसे झटका लगा... फिर कुछ सोचकर बोला

"कौन हो तुम..."

माँ हँसी.....

मैंने पूछा "कौन हो तुम..."

"तुम से मतलब..."

"यहाँ क्यों आई हो..."

"आ गई..."

"तुम नहीं जानती यह पूजा पाठ का घर है और तुमने मेरी साध्वी बहन को छुआ कैसे...."

"ओहो... मैं तो तेरे पैरों से आई हूँ...."

"मेरे..."

"हाँ.... तेरे.... इसे तो मैं छू नहीं सकती... पर ये मुझे अच्छी लगी....."

"बकवास बंद कर....." मामा बोला।

"मामा पहले सुनो तो यह क्या बोल रही है ?" कालिंदी ने मामा से कहा....

"कहाँ से आ रही है...."

"अरे वो रेल्वे का पुल है ना जो नदी के पास से गुज़रता है.... वहाँ से आई हूँ.... याद है रिक्शा में तुम दोनों भाई-बहन बैठकर उस रास्ते से तीन-चार दिन लगातार गुज़रे....."

"तो...."

"तो क्या... मैं आ गई.... बड़ी सुंदर है रे तेरी बहन.... अब मैं अपनी क्या कहूँ... मैं तो देवदासी हूँ..... खंडोबा की भक्त .... जेजूरी की रहनेवाली.... देख मेरी जटाएँ...." कहते-कहते उसने (माँ ने) अपने केश पर से हाथ फेरा।

"..... हं..... अब यहीं रहती हूँ..... पुल के नीचे..... ट्रेन से कट गई....." वह कहती रही...

"मेरी बहन को छोड़कर..... अभी के अभी जा...." मामा ने उससे कहा...

"जाऊँगी.... पर मेरा खाना दे....."

"क्या खाएगी..... ?"

"एक नारियल, नींबू, केला, बिना नमक का भात, उस पर हलदी, कुमकुम, गुलाल रखकर पूर्णिमा को पुल के पास रख दें.... मैं खा लूँगी....."

"पूर्णिमा....पूर्णिमा में कब..... कौन से समय.... ?" मामा ने कडक आवाज़ में पूछा.....

"बड़ी धार्मिक है तेरी बहन..... तेरी बहन से कुछ रीति-रिवाज सीख.... मेहमान से ऐसे बात करते हो.... अरे भोजन तो दोपहर में चाहिए.... देगा ना मुझे खाना.... एक महीने से भूखी हूँ....."वह बोली

"दूँगा.... एक शर्त पर....."

"बोल...."

"तुरंत यहाँ से चली जा....." कहते हुए मामा ने घर का दरवाजा खोल दिया....

"जा रही हूँ... ऐ लड़की ! मुझे कुमकुम नहीं लगाएगी क्या.... ?

कालिंदी भागकर घर के मंदिर से देवी माँ के सामने रखा कुमकुम ले आई.... माँ के माथे पर लगाया..... माँ ने करवट बदली.... एक क्षण भर में फिर पीठ के बल हो गई....

"मैं सामने वाले घर में जाऊँ.... कितनी स्वादिष्ट खुशबू आ रही है खाना पकने की...." माँ के मुँह से वह फिर बोली...

"तू अब किसी के घर नहीं जाएगी.... सीधा अपना रास्ता पकड़..." और मामा ने अपनी बहन के माथे पर विभूति लगा दी...

"आह... आह..." कराहती हुई माँ ने आँखे खोली।

"क्या हुआ देवेन्....." माँ ने क्षीण आवाज़ में मामा से पूछा.... "तुम सब लोग ऐसे क्यों खड़े हो... ?"

"कुछ नहींआक्का.... तुम सो रही थी न तब कोई मिलने आयी थी इसलिए हम सब यहाँ इकट्ठा हुए हैं....."

"कौन आयी थी.... ?"

"कोई भूखी थी जो भोजन माँग रही थी...."

"उसे खिलाया कि नहीं ....."

"हाँ.... अब तुम आराम करो" कहते हुए मामा ने माँ के सिर पर प्यार से हाथ फेरा...

कालिंदी ने देखा उस समय मामा की आँखों की कोर में बहन के प्रति ममता के अश्रु भर गए हैं...

माँ की दैवी-शक्ति का अनुभव कालिंदी को हुआ था और कालिंदी माँ के चरणों में गिर पड़ी....

सपनों की उड़ान



मोहन कुमार खपरिये
वैज्ञानिक सहायक

एक नये सफर का आगाज़ किया है,
छूने को कोई मुकाम अभी बाकी है।
देखें है जो ख्वाब अब तक,
हकीकत से उनका मिलान अभी बाकी है।।

राह चुनी है कठिन हमने,
पर हौसलों में जान अभी बाकी हैं।
अभी तो आंसुओं को पोंछा है हमने,
ओठों पर ये मुस्कान अभी बाकी है।।

तलाश रहा हूँ खुशियों को यहां,
पाने का अरमान अभी बाकी है।
बस कुछ कदम बढ़ाए हैं मंजिल की ओर,
'सपनों की उड़ान' अभी बाकी है।।

वक्त ठहर जा दो पल यहां,
मेहनत का अंजाम अभी बाकी है।
अभी तो मापी है बस जमीं हमनें,
मापने को ये आसमां अभी बाकी है...

एक विचार



श्रीमती सोनाली शुक्ला
वैज्ञानिक अधिकारी

हीरे को तराशा जाना और सोने को तपाकर दमकाना... इस संदर्भ में कभी कोई चर्चा तो ज़रूर सुनी होगी... हीरे के पारखी का बड़ा महत्व होता है... हीरा जब खदान से निकलता है तब उसमें और एक मामूली पत्थर, जिसमें भले ही चमक होती हो; कोई ख़ास फ़र्क़ दिखाई नहीं देता है; वो तो एक पारखी नज़र का कमाल होता है जो हीरे को हीरा बनाता है...

अगर आपको लगता है कि आपमें हीरे जैसे गुण हैं और आपको आपके जीवन में पारखी भी मिल जाए...तो मैं समझती हूँ कि अब आपके तराशे जाने की ही देर है...और आप से अधिक खुशनसीब इन्सान कोई नही...

लेकिन हाँ जितना हीरे के `पारखी' का महत्व है, उतना ही महत्व `तराशे जाने' का भी है...और एक पारखी नज़र ही आपको तराशे जाने के रास्ते की ओर ले जा सकती है...और अगर आप इतने खुशनसीब नहीं कि आपको कोई पारखी नहीं मिला तो फिर आप uncut diamond कहलाएँगे...

यहाँ तराशे जाने से मतलब आपको आपका लक्ष्य आसानी से प्राप्त हो जाएगा ऐसा नहीं है बल्कि आपको हर तरह के विरोध का सामना करना पड़ेगा...और जिस दिन आप हर तरह का विरोध झेलने के योग्य बन जाएंगे उस दिन आपकी चमक तराशे हुए हीरे की तरह होगी...आपका आत्म विश्वास चरम पर होगा...

चाहे वो इंसान हो या कोई सामान...हर किसी को quality check से होकर गुज़रना पड़ता है...तब जाकर वो इंसान या सामान बेहतर बनता है...परीक्षा जितनी कठिन होगी...आपका व्यक्तित्व उतना ही निखरेगा...असल जीवन में तराशे जाने से मतलब हर परीक्षा में अव्वल आना ही नहीं बल्कि हार को सहने की क्षमता विकसित करना भी है ... सहनशक्ति और धैर्य एक दूसरे के पूरक हैं.... क्यूँकि हारने के बाद जब आप धैर्य रखकर फिर से जीत की तैयारी में जुट जाते हैं ....और अगली जीत तक धैर्य ही आपका सच्चा साथी होता है.... सही मायने में अगर आपने हार का स्वाद चखा ही नहीं फिर तो आपमें अभी और निखार आना बाकी है.... हार आपको और मज़बूती से जमीन पर पकड़ बनाने में मदद करती है... आज के युवाओ में हार को सहन करने की शक्ति नहीं है... और वे स्वयं को perfect मानते हैं और स्वयं को किसी के द्वारा reject होते हुए नहीं सहन कर सकते...उन्हें एक ऐसे गुरु की आवश्यकता है जो उन्हें हार को झेलना भी सिखाए...और ये सिखाये कि हीरा हो या सोना..... हीरे को तराशे जाने और और सोने को तपाने की ज़रूरत होती है..तब जाकर वे बहुमूल्य बनते हैं...

एक महत्वपूर्ण पहलू यह भी है कि हीरा तराशे जाने में बाधा उत्पन्न ना करे एवम स्वयम को गुरु के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित कर दे, नही तो गुरुकृपा रूपी बारिश होने के बावजूद अगर आपका घडा उल्टा रखा है तो आप में कुछ भी जल संचित नहीं होगा और आप कोरे और अपूर्ण ही रह जायेंगे.

गुरु की महिमा का गुणगान तो आपने सुना ही होगा जिसके कई उदाहरण हैं...जैसे द्रोणाचार्य ने अर्जुन को...आचार्य विष्णुगुप्त (चाणक्य) ने चन्द्रगुप्त मौर्य को परखा और फिर तराशा था...न जाने कितने ऐसे उदाहरण मिल जाएँगे गुरु - शिष्य के....

कबीर के शब्दो में ....

गुरु कुम्हार सिष कुम्भ है, गढ़ि गढ़ि काढ़े खोट
अंतर हाथ संहार दे, बाहर मारे चोट

व्यक्तित्व विकास की प्रासंगिकता युवाओं के लिये सर्वाधिक महत्वपूर्ण है. ऐसे मैं हमारे National Youth Icon स्वामी विवेकानंद का यह वक्तव्य विचारणीय एवम अनुकरणीय है "मेरे गुरु श्री रामकृष्ण परमहंस की कृपा कटाक्ष मात्र से ही कोटिशः विवेकानंद क्षणमात्र में उत्पन्न हो सकते हैं"

भारतवर्ष में गुरु-शिष्य परंपरा रही है...यह परंपरा एक ज़िम्मेदार और सभ्य समाज की नींव है....आशा है ,भविष्य में भी इस परंपरा को निभाने वाले लोग अवश्य मिलेंगे....

समय बलवान है



अनुदीप गुप्ता
तकनीशियन

1. प्रस्तावना : मानव जीवन में समय का बहुत महत्व होता है। जो व्यक्ति इसका सदुपयोग करता है वह अवश्य ही सफल होता है। समय किसी भी मूल्यवान वस्तु से ज्यादा कीमति होता है। बचपन से ही हमारे माता पिता द्वारा हमे समय कि महत्व के बारे में सिखाया जाता है। विद्यार्थी जीवन के बाद भी मानव के जीवन में समय का महत्वपूर्ण योगदान होता है, यदि हम समय का सही उपयोग नहीं सीख पाते हैं तो हमें जीवन में कई कठिनाईयों का सामना करना पड़ सकता है। प्रत्येक वह व्यक्ति जिसने अपने जीवन में बड़ा मुकाम हासिल किया है अथवा कोई बड़ा कार्य किया है उसे समय के सदुपयोग का पूर्ण ज्ञान होता है। हर व्यक्ति के जीवन में अच्छा और बुरा समय आता है, जो व्यक्ति बुरे समय को मात देता है वह यशस्वी हो जाता है।

2. समय का महत्व : समय का महत्व सभी को समझना चाहिए बिना इसके महत्व को समझे कोई भी काम सही तरीके से कर पाना असंभव है। उदाहरण के लिए यदि कोई विद्यार्थी परीक्षा के लिए तैयारी कर रहा है तो उसे पता होना चाहिए कि प्रत्येक दिन में उसे पढ़ाई को कितना समय देना है। समय का सही प्रयोग ही विद्यार्थी के परीक्षा परिणाम में दिखाई देता है। इसी प्रकार हमें जिस भी कार्य में सफलता प्राप्त करनी है तो यह मालूम होना अति आवश्यक है कि हमें उस कार्य को कब व कितना समय देना है यदि उस कार्य में समय के महत्व को समझ गए तो हमें सफलता अवश्य प्राप्त होगी। लेकिन हमें यह भी याद रखना चाहिए कि समय हमेशा हमारे अनुकूल नहीं होता अर्थात् समय सही न हो तो दांव उल्टे भी पड़ सकते हैं और यदि समय सही है तो मनुष्य कुछ भी करे सही हो जाता है। इसलिए गीता में भी लिखा गया है कि `समय बहुत बलवान होता है'।

3. समय की बर्बादी : जो भी व्यक्ति जीवन में अपने समय की बर्बादी करता है उसका जीवन निरर्थक बन जाता है। उस मनुष्य को जीवन में सफलता प्राप्त नहीं होती, इसलिए व्यक्ति को समय का सही उपयोग करना चाहिए। आज अधिकतर लोग जीवन का महत्वपूर्ण समय व्यर्थ के कामों को करने में गवा देते है और उन्हें इस बारे में पता ही नहीं होता कि उनका कीमती समय बर्बाद हो रहा है यदि वो अपने इस समय का प्रयोग किसी नए काम को सिखने में अथवा अध्ययन में लगाये तो उनके साथ-साथ अप्रत्यक्ष रुप से समाज का भी भला होगा। समाज में हो रहे विभिन्न अपराध भी समय की बर्बादी का ही उदाहरण है, यदि वे इस समय का सही प्रयोग करें तो जीवन में कई अच्छे कार्य कर सकते हैं।

4. समय प्रबंधन : समय प्रबंधन से तात्पर्य है कि हम समय का किस प्रकार प्रयोग करते हैं। समय प्रबंधन जीवन में सफलता पाने की बहुत अच्छी व्यक्ति है, इसकी सहायता से हम जीवन में नयी चीजे सीखने के साथ-साथ अपने कार्यों को सही समय व सही तरीके से कर सकते हैं। समय प्रबंधन से तात्पर्य समय का कुशलतापूर्वक प्रयोग, इससे हम समझ सकते है कि हमें किन कार्यों को प्राथमिकता देना है अथवा किस कार्य को कितना समय देना है। समय के प्रबंधन का गुण प्रत्येक के पास नहीं होता लेकिन इसका प्रयोग जीवन में करने से हम अपने बहुत से व्यर्थ होते समय को बचा सकते हैं। समय के लिए `नेल्सन मंडेला' ने भी कहा है -

`हमें हमेशा अपने समय का बुद्धि के साथ उपयोग करना चाहिए और यह याद रखना चाहिए, कि सही कार्य करने के लिए समय हमेशा उचित होता है।'

अतः हमें अपना कीमती समय व्यर्थ नहीं करना चाहिए।

5. निष्कर्ष : समय बहुत अमूल्य है। इसे व्यर्थ करने से स्वयं का नुकसान होता है। मनुष्य को समय के महत्व को समझना चाहिए व इसके अनुरुप कार्य करना चाहिए, क्योंकि हम समय को रोक नहीं सकते। हमें इसके साथ ही चलना होगा, जिससे हम निर्धारित लक्ष्यों को सही समय पर प्राप्त कर सकें।

जो समय बचाते हैं, वे धन बचाते हैं और बचाया हुआ धन, कमाए हुए धन के बराबर होता है। - महात्मा गांधी

जिंदगी की पतंग



श्रीमती अनुभा खरगोणकर
वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी

पतंग सी जिंदगी है, हमारी । कभी ऊपर तो कभी नीचे कभी हिचकोले खाती । यह पतंग बचपन रूपी जमीन से उठा कर जवानी के आसमान तक ले जाती है। वह पतंग (समय) इतनी तेजी से गुजरता है कि पता ही नहीं चलता परंतु पतंग का माँझा बचपन तक माता-पिता के हाथों में होता है तो युवा होते ही यह जिम्मेदारी हमारे हाथों में ही आ जाती है। अब यह हम पर निर्भर करता है कि इस पतंग रूपी जीवन की डोर को कैसे उडाएं, इसकी डोर को ढील दें या डोर को खींच कर तोड़ दें या हौले हौले समय के साथ इसे आनंद लेते हुए उड़ाएं और उसे ऊंचाई पर ले जाएं । परंतु जब हमारी पतंग ऊँचाई पर होती है, तो खतरे भी बढ़ जाते हैं, कभी अडोसी-पडोसी की पतंग से कट जाने का डर तो कभी अपनों अर्थात नाते- रिश्तेदारों के माँझे से ।

मगर याद आते हैं वो बचपन के दिन जब हमारी पतंग खुले आकाश में मौजमस्ती के साथ बेफिप्र होकर उड़ती है, न तो जिम्मेदारियों का बोझ न भविष्य की चिंता न गला काट प्रतिस्पर्धा, न गिरने की फिक्र। जब हम अपनों के माँझे से अपनी या पड़ोसी के पतंग कट जाने से रोते थे वहीं दूसरों के माँझे से पतंग को कटते देख दुगने उत्साह से नई पतंग लिए चुनौती को नई उत्साह से स्वीकारते थे। जिंदगी का भी यही है फलसफा, यही जिंदादिली है। इसलिए अपनी जिंदगी की पतंग को यूं ही नहीं कटने दें। शाश्वत सत्य है कि एक दिन सभी को धरातल पर वापस आना है। मन रूपी पतंग की उडान का क्या कहना, वह तो न जाने कहां-कहां उड-उड कर आती है और जहां हम पहुंच नहीं पाते, वहां भी पहुँच जाती है। मन रूपी पतंग में कभी पुराने किस्से-कहानियां, गाने फिल्में सभी कुछ होते हैं और हम इस मन रूपी पतंग की भूली-बिसरी यादों में इस कदर खो जाते हैं कि लगता है अभी -अभी तो सरकारी नौकरी में कदम रखा था और इतने वर्ष पंख लगाकर उड गए । हिंदी अनुभाग के हिंदीमय वातावरण में, हिंदी पुस्तकालय के सानिध्य में बहुत ही स्तरीय किताबों का आनंद मिला । ये किताबें मेरे जीने का आधार है :

जिंदगी की राहों में जब अंधकार बढ़ने लगता है
जुगनूओं की तरह राहों में रोशनियां बिछाती है किताबें ।
दुनियां की भीड़ में जब तन्हा होने लगती हूँ मैं
तो चुपके से मेरे पास आकर समय बिताती हैं किताबें ।
चिंता की कड़कती धूप जब चेतन पर करती है वार
बरगद के पेड़ सी अपनी छांव में बुलाती हैं किताबे ।

जीवन रूपी पतंग हमें कई बातें सिखाती हैं - बंधन डोर से अर्थात परिवार से, कार्यालय से अनुशासन से संतुलन से आज के तेजी से बदलते परिवेश में, आधुनिक मशीनी युग में कार्य स्थल एवं पारिवारिक जीवन में संतुलन रुपी डोर का होना अति आवश्यक है और यह पतंग रूपी जीवन संयमित, समन्वित संतुलित हो, इसी आशा के साथ

चली चली रे पतंग मेरी चली रे
चली बादलों के पार, हो के डोर पे सवार
सारी दुनिया ये, देख देख जली रे

हमारे देश की आजादी के 75 वर्ष

(कहानी)



रेश्मा रा. मगरे
सहायक

महाराष्ट्र के एक छोटे से गांव में, में और मेरी बूढ़ी पत्नी अपनी जिदंगी के बचे हुए दिन काट रहे थे। आज कई सालों के बाद मेरा बेटा, बहु, पोता और पोती हमसे मिलने अपने गांव आए थे। मेरा बेटा कई साल पहले अपनी उच्च शिक्षा के लिए विदेश चला गया था। उसने शिक्षा खत्म करके वही पर नौकरी भी कर ली थी। बाद में उसने वही पर एक भारतीय लड़की से शादी की और वही बस गया। आगे जाकर उसे दो प्यारे बच्चें भी हुए। वह मुझे कई बार खत लिखता और हम दोनों को विदेश आने को कहता था। आज इन सब के आने से मुझे बहुत आनंद हुआ।

रात में सब ने एक साथ मिलकर खाना खाया। मेरे बेटे ने विदेश की बहुत सारी बातें बताई। सोने से पहले मेरे पोता पोती जो अब 6 और 3 साल के है, मेरे पास आए और कहने लगे - 'दादाजी, दादाजी, आप यहां गांव में क्यों रहते हो, आप और दादीजी विदेश में आकर हमारे साथ क्यों नहीं रहते ?' अपने पोते की बात सुनकर मुझे आंनद हुआ कि वह चाहता है कि हम सब एक साथ रहे। मैंने अपने पोते से कहा - 'बच्चों, मैं अपने देश को, अपनी धरती को छोड़कर कैसे आ सकता हूँ जहां मेरा जन्म हुआ और मेरा बचपन गुजरा। आखिर अपना देश तो अपना होता है। और बच्चों क्या तुम्हें पता है इस वर्ष 5 अगस्त को हमने अपने देश का 75 वाँ स्वतंत्रता दिवस मनाया।' उसी समय मेरे पोते ने मुझसे पुछा-'दादाजी, स्वतंत्रता दिवस, वह क्या होता है ?' मैंने बच्चों से कहा - 'आओ बच्चों, आज तुम्हें मैं एक कहानी सुनाता हूं - मेरे देश की स्वतंत्रता की कहानी।' कहानी के नाम पर बच्चें बड़े ही खुश हुए और मेरी गोदी में आकर बैठ गए। और मैं उन्हें कहानी सुनाने लगा।

यह उस समय की बात है जब मैं 5 साल का था। वर्ष लगभग 945 था। मैं अपने माता, पिता और दो बड़े भाईयों के साथ इस गांव में रहता था। हमारा एक छोटा सा खेत था, जिसपर मेरे माता, पिता खेती करते थे और अपना उदर निर्वाह चलाते थे। दशहरे का त्यौहार हमारे गांव में बड़ी ही धूम धाम से मनाया जाता था। गांव के बड़े से मैदान में रामलीला का नाटक होता था और बाद में रावण दहन भी वही होता था। इस त्यौहार के समय गांव में मेला भी लगता था। में अपने पूरे परिवार के साथ मेला घूमने आया था। मेले में घुमने में मुझे बड़ा मजा आ रहा था। अचानक 40-5 लोग वहां से जोर जोर से नारा लगाते हुए जा रहे थे - भारत माता की जय, भारत माता की जय, अंग्रेजों भारत छोडो, अंग्रेजों भारत छोडो, इंकलाब जिंदाबाद, इंकलाब जिंदाबाद।

``मैंने अपने पिताजी से पूछा - 'पिताजी, यह लोग ऐसे जोर जोर से चिल्ला क्यों रहे है।' पिताजी बोले - 'बेटा, यह लोग अपने देश को स्वतंत्रता दिलाने के लिए अंग्रेजो 'के विरुध नारा लगा रहे है। अंग्रेज हमारे देश पर कई सालों से शासन करते आ रहे है। वे भारतीयों पर अत्याचार करते और गुलामी करवाते थे। इन अंग्रेजों से अपने देश को स्वतंत्रता दिलाने के लिए कई लोगों ने अपना बलिदान भी दिया है। कई नेताओं ने जैसे कि महात्मा गांधी, सुभाष चंद्र बोस, बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय, भगत सिंग, राजगुरु कई बार जेल भी गए। हमें भी अपने देश की आजादी की इस जंग में इनके साथ शामिल होकर अपना सहयोग देना चाहिए।'

मैंने कई बार अपने पिताजी को इस आजादी के आंदोलन में सहभागी होते देखा था। आखिर 45 अगस्त 1947 को हमारा देश आजाद हुआ और स्वतंत्र भारत का तिरंगा पहली बार गर्व से लहराया।''

मैंने अपने पोते से कहा - ''यह आजादी हमें यूँ ही नहीं मिली। न जाने कितने लोग फांसी पर झूले और न जाने कितनों ने गोली खाई, तब जाकर यह आजादी मिली हैं। आज देश ऋणी हैं उन प्रांतिकारियों का जिन्होंने देश को गुलामी की जंजीरों से मुक्त करवाने के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। इनके त्याग और बलिदान के कारण ही आज हम चैन की सांस ले रहे हैं। इस वर्ष 15 अगस्त, 2021 को हमारे देश ने आजादी की 75 वर्षगांठ मनाई है। इन 75 सालों में हमारे देश ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर बहुत ही प्रगती की है। अनेक धर्म एवं जाति के लोग होने के बावजूद देश में एकता हमेशा बनाई रखी है। पुरुष एवं स्त्री को एक समान हक्क दिए है। मैं चाहता हूँ कि तुम बच्चें जो इस देश का भविष्य हैं, इस प्रगति में अपना भी योगदान दें और देश को और समृद्ध बनाएँ।''

कहानी सुनते सुनते बच्चें कब सो गए पता ही नहीं चला। मैंने भी अपने देश को, अपनी धरती को नमन किया और बच्चों को साथ सो गया।

एक सोच - गऊ को समर्पित



श्रीमती संजु कुमारी
वैज्ञानिक सहायक

आज फिर सुबह सुबह घर पर दूध वाले से हुई किट-किट मुझे सोचने पर विवश कर दिया। दूध वाले से किट किट का मुद्दा यही होता था कि दूध असली है या नहीं, कहीं केमिकल वाला दूध तो नहीं है दूध में पानी कितना मिलाया है, आदि-आदि। कल से हम पॉकेट वाला दूध नहीं खरीदेंगे आदि-आदि वाक्य पर यह मुद्दा अटक कर रह जाता।

पैकेट के दूध की असलियत में से हम सभी वाकिफ हैं इन सभी बातों के सांथ एक और बात भी बोली जाती कि हमारे गांव में तो सामने गाय का शुद्ध दूध निकालकर पिया करते थे, यह तो हम शहर में बस गए, वरना हमारे गांव में दूध की नदियां बहती है।

आज मुझसे रहा नहीं गया और मैं बोल पड़ी कि यह दूध की गंगा तो शहर में भी बह सकती है। मेरा इतना बोलना लोगों के लिए ऐसा प्रतीत हुआ जैसे मैंने बिल्कुल ही असंभव बात जुबान से निकाल दी हो, कई प्रश्नवाचक आंखें आकर मुझ पर अटक कर रह गई जैसे मानो में पूछ रही हो कैसे ?

इसका जवाब तो मुझे देना ही था, मेरी बातें थोड़ी अटपटी हो सकती है पर असंभव नहीं है। वास्तव में आज शहरों में विकास के नाम पर कई पुरानी चीजों की आहुति दी जा रही है। लोगों के पास एकल मकान नहीं है, अधिकतर लोग फ्लैट सिस्टम वाले मकान में अपनी गुजर-बसर करते हैं। हमारे पास जगह की कमी है का रोना रोते हैं, पर यह तो एक कड़वा सच है कि रोजगार, शिक्षा उच्च, रहन सहन तथा ऊंची चमक-दमक लोगों को शहर की तरफ आकर्षित कर रही है। ऐसे में जिंदगी जीने की जद्दोजहद में इंसान सिर्फ एडजेस्टमेंट पर गुजारा करना ही सीखता रहता है, अपनी रोजमर्रा की अति आवश्यक जरूरतों को हम दरकिनार कर देते हैं और जो उपलब्ध है, उसी में गुजारा करना सीख लेते हैं।

`दूध की बूंद' हर इंसान जो, बाल्यावस्था में धरती पर पदार्पण करता है, उसकी पहली जरूरत है। अगर वही शुद्ध नहीं मिला तो बच्चे के स्वास्थ्य की नींव कमजोर पड़ जाती है। आगे जाकर जहां बच्चे को और बहुत सारी समस्याओं से जूझना ही है, उदाहरणस्वरूप केमिकल युक्त सब्जियां, अनाज आदि आदि।

अब गाय का शुद्ध दूध उपलब्ध करवाना तो हमारी ही जिम्मेदारी बनती है, कि कैसे हम शहर में भी अपने बच्चे को शुद्ध गाय का दूध उपलब्ध करवाएं और गाय का दूध ही क्यों ? यहां अगर गाय की चर्चा की जाए तो सभी गाय के गुणों से भलीभांति वाकिफ है। गाय तो सर से लेकर पैर तक गुणों की खान है। गाय के गुणों की व्याख्या करना इतना आसान नहीं है, मात्र गाय की उपस्थिति से बहुत सारे फायदे हैं, जिसमें एक वायरस नाशक भी है।

'गाय विश्वस्य माता अर्थात गाय विश्व की माता है'

गाय के दर्शन से सारे पाप धुल जाते हैं। गाय के दूध की महत्ता अन्य सभी दूध देने वाले पशुओं से ज्यादा महत्व रखती है। गाय के दूध पीने से बच्चे बुद्धिमान और स्वस्थ रहते हैं ! गाय का दूध रैडियो विकिरण से रक्षा करने की सर्वाधिक शक्ति रखती है। गाय का दूध एक ऐसा भोजन है जिसमें प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट युक्त शर्करा खनिज लवण आदि पोषक तत्व भरपूर पाए जाते हैं।

दूध तो दूध गाय का घी भी काफी उपयोगी होता है। एक छोटा चम्मच गाय का घी जलते हुए कंडे पर डाला जाए तो 4 टन ऑक्सीजन निकलती है। इसलिए यज्ञ हवन में गाय का घी उपयोग में लाया जाता है, और तो और गाय का गोबर भी स्थान लिपने एवं कंडा बनाने में काम आता है। गाय का गोमूत्र भी काफी उपयोगी है। हमारे विश्व के कई वैज्ञानिक इस पर लगातार अनुसंधान कर गाय के महत्व को समझने की कोशिश कर रहे हैं, लेकिन ठीक जिस तरह एक तरफ गाय कौतूहल का विषय है, तो वहीं दूसरी तरफ इसे समाज से निष्कासन का कार्य बखूबी हो रहा है।

जहां एक समय में गाय हमारे घर के आगे बंधी रहती थी और घर की शान कहलाती थी, आज उनकी जगह दूसरे जानवर ले चुके हैं, और अगर शहर में गाय पालने के बात की जाए तो लोगों के मुंह से बरबस एक ही बात निकलती है `जगह कहां है ?'

नई सोसाइटी बनती है जहां अनेकों की संख्या में फ्लैट होते हैं। स्वास्थ्य आदि का ध्यान रखकर जिम, स्विमिंग पूल, सामुदायिक भवन आदि का निर्माण होता है। तो वहां क्या हम गाय के लिए एक आवास स्थान नहीं बना सकते हैं ?

बस बात प्रबंधन की है जहां अन्य पालतू जानवरों की देखभाल के लिए एक सेवक रख सकते हैं, वही गाय के लिए एक सेवक आवश्यकता अनुसार रखा जा सकता है जो उसके भोजन पानी आदि जरूरतों को पूरा कर सकता है। कुछ लोग तो यही भी सोच रहे होंगे कि उनकी बदबू कैसे मैनेज करेंगे ?

उसका भी उपाय है सही तरीके से प्रबंधन कर गोबर गैस संयंत्र बनाकर उसे इंधन के रुप में भी उपयोग कर सकते हैं। इन सबों से कम से कम 3 साल से छोटे बच्चों को शुद्ध दूध उपलब्ध तो कराया ही जा सकता है। अगर एक गाय 10 किलो दूध भी देती है तो कम से कम 10 बच्चों को तो यह शुद्ध दूध उपलब्ध हो सकता है।

वास्तव में यदि बात करें तो हमें यह बृहत रूप में शहर के लिए सोचना चाहिए। यह बात भी बहुत लोगों को नहीं समझ में आएगी, लेकिन इस उदाहरण से शायद कुछ साफ हो - उदाहरण स्वरूप किसने सोचा था कि जंगल फिर शहर लौट आएगा । आजकल कई शहरों जैसे कि रायपुर में 48 एकड़ जमीन में शहर के बीचों बीच जंगल बनाकर ऑक्सीजन जोन बनाया जा रहा है, जो कि आज के समय की विशेष मांग है। वही आजकल तो स्मार्ट सिटी का प्रचलन हो रहा हैं, तो वहां पर गौशाला के लिए कहां किसी के पास जगह है.... यही बात तो तब भी हुई थो, जब विकास के नाम पर लगातार जंगलों को काटा जा रहा था और आज भी काटा जा रहा है। इसके परिणाम स्वरूप जो भी घटित हो रहा है, उससे लोग भलीभांति परिचित है ।

तो इस प्रकार जिस तरह शहर में जंगल वापस आ रहे हैं, उसी तरह गाय भी वापस आनी चाहिए। और इन सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है तो वह है `टाउन प्लानर' जिनका की शहर निर्माण में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका होती है। एक टाउन प्लानर जब नगर का प्लानिंग करता है तो उसे बहुत सारी आवश्यक नागरिक सुविधाएं उपलब्ध करवाने की जिम्मेदारी होती है, जिसमें सोशल इंफ्रास्ट्रक्चर, फिजिकल इंफ्रास्ट्क्रचर आदि होते हैं। सोशल ईंफ्रास्ट्रक्चर में शिक्षा, खेलकूद, स्वास्थ्य, समुदायिक सहायता, जनसुरक्षा, सार्वजनिक स्थान, धार्मिक स्थान आदि सुविधाएं मुहैया कराए जाते हैं, जिससे कि वहां रहने वाले नागरिकों को आसानी हो और वहां वह एक सुरक्षित स्वस्थ एवं खुशहाल जीवन गुजार सकें।

इन सब में रोजमर्रा उपयोग होने वाली सामग्री जैसे कि दूध, फल, सब्जी, जल आदि की आपूर्ति कैसे होगी, यह भी ध्यान में रखा जाता है और साथ-साथ शहर को सुंदर कैसे बनाया जाए, यह भी ध्यान में रखा जाता है।

"यहां यह भी मायने रखता है कि हम जरूरत के आगे शहर की सुंदरता को खो नहीं सकते, वही सुंदरता के आगे नागरिकों की जरूरत को भी ताक पर नहीं रख सकते ..." तो इन सब के बीच नगर नियोजक यानी टाउन प्लानर्स छोटी सी गोशाला जो कि अन्य सुविधाओं के रूप में नागरिकों द्वारा उपयोग में लायी जा सकती है। वहीं यदि एक छोटी सी कॉलोनी का भी यदि निर्माण होता है तो वहां भी एक गाय-घर का प्रावधान भी किया जा सकता है, जहां आज के समय में लोग गाय के महत्व को समझ रहे हैं और दूध, गोमूत्र, उपले आदि के लिए इधर-उधर ढूंढते भटकते रहते हैं, वही उन्हें अपनी सोसाइटी में ही उपलब्ध, उनकी अपनी गाय के रूप में हो जाएगी।

वर्षों से शहरीकरण और विकास के नाम पर जहां हम अपनी पौराणिक वैज्ञानिक प्रमाणित पद्धतियों को भूल गए थे, वही आज जनमानस पुनः जागरूक होकर जन स्वास्थ्य एवं पर्यावरण संरक्षण हेतु पुनः इन पद्धतियों को अपनाने के लिए अग्रसर हों चुकी है। आज वृक्षारोपण, प्लास्टिक निर्मूलन विष - मुक्त कृषि पद्धति, बारिश के पानी का संग्रहण, नदी सरक्षण, स्वच्छता अभियान आदि इसके प्रत्यक्ष उदाहरण है।

उसी प्रकार गौशाल संरक्षण एवं ग्रहण भी इस तरह का एक उदाहरण बन सकता है। गाय को मानव समाज का अभिन्न अंग मानकर उन्हें समाज में पुनः स्थापित करना और गाय को समाज से बहिष्कृत होने से बचाना है । सही मायने में कहा जाए तो गाय को हमारी नहीं बल्कि हमें गाय की जरूरत है, हमारे आने वाली पीढ़ी को गाय की जरूरत है।

गुजर रहा गाय का चमन निशदिन,
ना जाने कब गौमाता अपने घर आएगी ?
हमारे बच्चों को दूध देकर,
स्वस्थ सुंदर कब बनाएगी?
बची नहीं गाय अगर, ऐसा क्या होगा हाल,
तरसेंगे फिर दूध को इस माटी के लाल।
क्या हम हैं इतने नादान,
नहीं कर सकते इसका समाधान,
बड़े बुजुर्गों जो निभा गए पुरानी परंपरा,
क्या हम नहीं कर सकते उस परंपरा का विस्तार?

जान है तो जहान है।



कु. शिखा मेश्राम
प्रवर श्रेणी लिपिक

`जीवन में सबसे बड़ा गौरव कभी नहीं गिरने में नहीं, हर बार गिरकर उठने में है।' - नेल्सन मंडेला

इस दुनिया में जन्म लेकर आनेवाला हर व्यक्ति, प्राणी अपनी-अपनी जान का महत्व स्वाभाविक रूप से समझता है। परंतु `जान' सबके लिए इतनी महत्वपूर्ण क्यों है? हर मनुष्य, प्राणी के लिए इसका अलग-अलग तात्पर्य क्यों है? प्रकृति के नियमों के हिसाब से हर जीव कार्य करता है। जैसे कि भूख से बचने के लिए चूहा खाना खाता है। चूहे का शिकार साँप करता है व साँप का शिकार बाज करता है। प्रकृती भी यही सिखाती है कि `जो सबसे ताकतवर है उसी की जान बची रह सकती है।' डार्विन ने भी यही बताया है ।

मनुष्य भी इसी कोशिश में दिन व्यतीत करता है कि उसका हर दिन स्वस्थ, निरोगी और खुशहाल ही जिसे उसकी जान को किसी तरह कि हानी न पहुंचे। आजकल की भागदौड़ - भरी ज़िंदगी में मनुष्य अपनी सेहत को नज़रअंदाज करके केवल ज्यादा से ज्यादा धन कमाने में जूट जाता है। पश्चिमी संस्कृति को अपनाने के प्रयास में मनुष्य जंक फूड़, कार्बनेटेड ड्रिंक्स का सेवन ज़्यादा मात्रा में करने लगा हैं जो कि सेहत के लिए हानिकारक है। आजकल फलों, पौधों में कीटनाशक का ज्यादा इस्तेमाल भी जान को नुकसान पहुँचा रहा है।

वैज्ञानिक और तकनीकी उन्नति के कारण फैक्ट्री एवं उद्योगों के साथ-साथ ही वाहनों में से निकलने वाले ज़हरीले पदार्थ और धुवाँ हवा में फैल कर प्रदुषण पैदा करता है जो की इंसान की सेहत के लिए तकलीफें पैदा करती हैं - जैसे फेफड़ों के रोग, साँस लेने में तकलीफ आदि। यहीं पदार्थ ताजे पानी के स्त्रोत में मिलकर पानी को प्रदूषित करता है, जिसे न केवल मनुष्य बल्कि पानी में रहने वाले जीवों को भी नुकसान पहुंचाता है।

मनुष्य ने अपने दिन प्रतिदिन की सुविधाओं के लिए और मेहनत से छुटकारा पाने के लिए विभिन्न वस्तुओं का आविष्कार किया जैसे की गाड़ी, कंप्युटर, मोबाईल फोन आदि। मगर क्या ये विज्ञान का आशीर्वाद है या अभिशाप? क्योंकि गाड़ी के आ जाने से जैसे मनुष्य चलना ही भूल गए। मोबाईल एवं कंप्युटर आने से मिलना-जुलना ही कम हो गया। जल, वायु, मिट्टी, ध्वनि आदि के प्रदुषण के परिणाम दिन-प्रतिदिन सुनाई देते हैं - जैसे ग्लोबल वॉर्मिंग, ग्लेशियर्स का पिघलना, आदि।

आज की परिस्थिति से तो पूरी दुनिया अवगत है। कोविड़-19 की महामारी ने दुनिया में हाहाकार मचा दिया है। पूरी दुनिया जैसे थम गई हो। अनगिनत लोगों को अपनी जान गँवानी पड़ी। इस मुसीबत की घड़ी में तो धन-दौलत, जमा-पूँजी भी लोगों के काम न आ सकी। तब जाकर लोगों को समझ आया है कि `जान' का महत्व क्या है। महात्मा गांधी भी कह गए - `सबसे बड़ा धन स्वास्थ्य/ जान है, न की सोना, चांदी।' कोरोना वायरस की महामारी ने सही मायनों में `जान है तो जहान है' इस कहावत का तात्पर्य समझा दिया।

अपनी जान एवं स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए नियमित रुप से आहार लेना चाहिए, व्यायाम करना चाहिए। अपना एवं अपनों का ख्याल रखने के साथ-साथ प्रकृति का भी ख्याल रखना महत्वपूर्ण है। 'अगर पृथ्वी रहेगी तो ही हमारी जान बचेगी तो ही जहान में हम कुछ कर पाएंगे जैसे कि नए आविष्कार, लोगों की सहायता, दोस्तों के साथ समय बिताना आदि। मार्टिन लूथर किंग ने भी कहा है - `जीवन का सबसे स्थाई और जरुरी सवाल है कि आप दूसरों के लिए क्या कर रहे हैं?'

मगर कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो अपने जीवन का बलिदान कर देते हैं, जैसे कि हमारे सैनिक और कुछ लोग ऐसे भी होते हैं जो अपने जीवन में निजी कारणों से हारकर, हताश होकर स्वयं ही अपनी जान ले लेते हैं। किंतु हमें समझना चाहिए की जिंदा रहने भर से हम कठिनाईयों का सामना कर सकते हैं, परिस्थितियों को अपने अनुसार बदल सकते हैं और दूसरों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत बन सकते हैं, क्योंकि अंततः जान है तो ही जहान है। हमारे प्रधानमंत्री भी कोरोना वायरस की आपात्कालिन स्थिति से निपटने के लिए यही संदेश दोहराते हैं।

'कोविड-19/कोरोना से मैंने सीखा....'



श्रीमती रानी सरदेसाई
प्रवर श्रेणी लिपिक

जिंदगी एक सफर है सुहाना,
यहां कल क्या हो किसने जाना ?

टी.वी.पर गाना बज रहा था। इस गाने के बोल मन को भा गए। सच में, अभी के हालातों के अनुसार साझा ऐसा गाना है। जिंदगी चल ही रही थी अपनी राह पर के साल 2020 में न जाने कहां से कोरोना नामक बिमारी जिसे कोविड-19 भी कहा जाता है, इसने पूरी दुनिया को अपनी चपेट में कर लिया। लोगों में पूरी तरह घबराहट फैल गई। इसे वैश्विक महामारी घोषित कर दिया गया। इसी महामारी की वजह से दुनया भर में लाखों लोगों ने अपनी जानें गँवाई। इससे बचने के लिए कई तरीके अपनाएँ गए।

मास्क, सॅनिटाइझर, ऑक्सिमीटर, स्टीम, सोशल डिस्टंसिंग, क्वारंटाइन आदि तो मानो जीवन का भाग ही बन गए हैं। इस महामारी से बचने के लिए सभी देशों की सरकारों ने लॉकडाउन किया। लॉकडाउन तो सभी के लिए बिलकुल नया था। यही वह समय था जब बहुत से लोग अपने व्यस्त जीवन को भुलाकर लॉकडाऊन के चलते घर बैठे थे। सिर्फ अत्यावश्यक सेवाएं चल रही थीं। भारत में 22 मार्च 2020 की रात्रि को कोरोना महामारी के कारण लॉकडाउन की घोषणा की गई। 70 दिनों तक चला यह लॉकडाउन धीरे-धीरे खोला गया। कई निर्बंधों के साथ जीवन चलने लगा। इस महामारी काल में हर एक व्यक्ति के अपने-अपने अनुभव रहे हैं।

कोरोना के चलते स्वास्थ्य भरा जीवन कितना जरुरी है यह प्रतीत हुआ। स्वास्थ्य के आगे कुछ नहीं इसका सबक मिला। इस महामारी पर दवा न होने के कारण और इससे लड़ने के लिए लोगों में रोगप्रतिरोधक शक्ति बढ़ाने के लिए जागरुकता लाई गई। पौष्टिक खाना, योगसाधना का महत्व मालूम हुआ। गरम पानी, काढा, स्टीम और ना जाने ऐसे कई टोटके जीवन बचाने के लिए किए जाने लगे। घर की चार दीवारें सुरक्षित लगने लगीं। लोग दूसरे लोगों से डरने लगे। अपने परिवार के साथ ज्यादा समय बिताया और इसी के साथ परिवार का महत्व को भी जाना। पारिवारिक सुख की परिभाषा समझ आई। लॉकडाऊन से पहले आज तक इतने लंबे समय तक घर में रहने का मौका नहीं मिला होगा। इसके दौरान मैंने अपनी रचनात्मकता को बढ़ावा दिया। खाने में कई नए व्यंजनों का आविष्कार किया। कई समय पेड़-पौधों की निगरानी तथा उगाने में व्यतित किया। इसी दौरान मुझे मोबाईल कंप्यूटर, इंटरनेट के परे एक अच्छी दुनिया का अनुभव हुआ।

साथ ही साथ साहस के कई रंग देखने मिले। जहां लोग एक दुसरे से डर रहे थे, वहां अत्यावश्यक सेवाओं के कर्मचारी जैसे डाक्टर, नर्स, सफाई कर्मचारी, पुलिस, न्यूज, रिपोर्टर, किराना-सब्जी मंडी वाले आदी लोगों ने तो अपने अलग ही साहस का दर्शन करवाया। मुझे तो अपनी सोसायटी में भी साहस के दर्शन हुए। जहां हमारे सोसायटी के चौकीदार जी भी कोरोना पीड़ित होम क्वारंटाइन लोगों को अत्यावश्यक वस्तूएं जैसे दूध, अंडा आदि की आपूर्ति करते हुए दिखें। ऐसे कई महानुभावों के कारण मैंने जीवन की हर परिस्थिति में साहस के साथ जीना सीखा है। सामाजिक लगाव और समाज के प्रति आत्मीयता निभानी कितनी जरुरी है यह भी सिखने का अवसर इस महामारी ने दिया।

कोरोना महामारी के चलते मैंने स्वच्छता का अलग पहलू भी सीखा। हाथों की सफाई के साथ हर एक वस्तू तथा सामान यहां तक की सब्जियों के साथ-साथ सामाजिक स्वच्छता का भी महत्व समझ आया। पर्यावरण भी इसके परिणाम से नहीं छूटा। लॉकडाऊन के चलते सभी तरह की गतिविधियाँ लगभग बंद हो गई और इसके परिणाम स्वरुप हमें पर्यावरण में ताजी हवा, साफ आसमान, पंछियों का कलख आदि का अनुभव हुआ। गाड़ियों का धुआ और कारखानों की प्रदूषित हवा मानों छू-मंतर हो गई। इससे हमें यह प्रतीत होता है कि पर्यावरण तथा प्रकृति के प्रति हमारा व्यवहार कितना प्रभावी होता है। मानव चाहे तो प्रकृति की रक्षा और प्रदूषण कम करने वाले उपायों पर काम कर सकता है।

कोरोनाकाल के दौरान सारे व्यापार, कारखाने, शिक्षा संस्थाएं इत्यादि बंद थे। लॉकडाऊन के चलते इनका फिर से त्वरित चलना मुश्किल था। सभी स्कूल, कॉलेज तथा अन्य शिक्षा संस्थाएं ऑनलाइन रुप से शिक्षा प्रदान करने लगीं। जिसके कारण

ऑनलाइन पढ़ाई और सिखाने की नई तकनिक देखने मिली। कई दफ्तरों ने `वर्क फ्रॉम होम' का विकल्प चुना। इस पूरे समय में टेप्नोलॉजी का सहारा मिला। मैंने भी `वर्क फॉर होम' का अनुभव किया। आपात्कालीन समय में यह सफल भी रहा। घर बैठे कई जीवनावश्यक सामग्री ऑनलाइन तरीके से मंगवाने में आसानी हुई। इससे यह सबक मिला कि टेक्नॉलॉजी का सही इस्तेमाल विकास यंत्रणा बनाए रखती है।

महामारी के इस काल ने हमें पैसों और चीजों के महत्व को भी समझाया। देखा जाए तो इस दौरान जरुरी सामानों और दवाइयों के अलावा कोई अन्य खर्च नहीं था। पर ऐसी स्थिति से निपटने के लिए पैसों का प्रबंधन बहुत ही आवश्यक हो जाता है। कम से कम साधनों में भी जीवन जीने की सीख मिली। `सर सलामत, तो पगडी पचास' इस कहावत की अनुभूति हुई।

कोरोना महामारी ने भले ही हमारे जीवन को सीमित कर दिया, पर इससे हमने बहुत सी बातें सीखी जैसे प्रतिकूल परिस्थितियों का डट कर सामना करना, खुद पर नियंत्रण रखना इत्यादी। यह भी समझ आया कि अगर एक दरवाजा बंद होता है तो कई नए रास्ते खुलकर सामने आते हैं। निरंतर प्रयत्न सफलता की पूँजी है। लॉकडाऊन ने हमें खुद से लड़ने और खुद पर भरोसा करना सिखाया। अतः यह कहना गलत नहीं होगा कि कोरोना महामारी ने हमें सच में जीना और जीने का तरीका सिखाया है।

परोपकार (कहानी)

देश के उत्तर पूर्वी क्षेत्र में एक गाव था। उस गांव में नवीन नाम का एक लड़का रहता था। नवीन बचपन से ही बड़ा मेहनती व बुद्धिमान था। नवीन के बचपन में ही एक गंभीर बिमारी के चलते उसके पिता का देहांत हो गया था। लेकिन फिर भी नवीन अपना व अपनी माँ का ख्याल बड़ी समझदारी से रखता था। वह बचपन से ही परोपकारी था। जब भी कोई नवीन से मदद के लिए कहता नवीन निःस्वार्थ भावना से मदद के लिए हमेशा तैयार रहता। दूसरों की निःस्वार्थ सहायता करना व सदैव परोपकार का भाव रखना नवीन को उसकी माँ ने ही सिखाया था। नवीन हमेशा से ही पास के शहर में जाकर अपनी कॉलेज की पढ़ाई करना चाहता था। इसलिए जैसे ही नवीन की स्कूली पढ़ाई खत्म हुई व कॉलेज में दाखिले के लिए शहर की ओर निकल पड़ा। नवीन जैसे ही शहर के रेल्वे स्टेशन पर पहुंचा उसने देखा एक व्यक्ति हाथ में बैग लिए उसकी तरफ दौड़ते हुए आ रहा था। लोग उसे देखकर पकड़ो-पकड़ो भी चिल्ला रहे थे। नवीन को यह समझते देर नहीं लगी कि वह व्यक्ति चोर है और तुरंत ही उसने अपने पैरों की सहायता से उस चोर को गिरा दिया। वह बैग जिस व्यक्ति का था उसने चोर को पकड़ने के लिए नवीन को धन्यवाद कहा और वहां से चला गया। अगले ही दिन नवीन कॉलेज में अपने दाखिले के लिए गया, लेकिन वहां जाकर उसे पता चला कि कॉलेज में अब कोई भी सीट खाली नहीं है और फिर नवीन मायूस होकर घर लौटने लगा। तभी अचानक, एक व्यक्ति ने नवीन से पूछा, "तुम यहां!" वह वहीं व्यक्ति था जिसकी मदद नवीन ने रेल्वे स्टेशन पर की थी। उस व्यक्ति ने बताया कि वह इसी कॉलेज में प्रधान अध्यापक है। उसने नवीन को उदास देख उसका कारण पूछा, तब नवीन ने कॉलेज में दाखिला ना मिलने की बात उस व्यक्ति को बताई। प्रधान अध्यापक ने आश्वासन देते हुए नवीन से कहा कि "तुम कल फिर से कॉलेज आकर मुझसे मिलो," अगले दिन जब नवीन कॉलेज में पहुंचा तो प्रधान अध्यापक ने उसे बताया कि मेरिट कोटे की एक सीट अभी भी खाली है, यदि नवीन के अंक अच्छे है तो उसे वह सीट मिल सकती है, क्योंकि नवीन पढ़ने में अच्छा था व उसके अंक भी अच्छे थे, उसे जल्द ही कॉलेज में प्रवेश मिल गया और उसने प्रधान अध्यापक को भी इसके लिए धन्यवाद दिया।

शिक्षा : हमारे द्वारा किये परोपकारी कार्य किसी न किसी रूप में हम तक वापस आते ही है और अच्छा फल दे जाते है।

– अनुदीप गुप्ता (तकनीशियन)

आपबीती



उषा डुँगडुँग
कार्य सहायक

मैं उषा डुँगडुँग हूँ। मैं मेरे जीवन में घटी घटना के बारे में आप लोगों को बताना चाहती हूँ। आज तक, मेरे जीवन में, कुछ भी चीज मुझे आसानी से नहीं मिली है। मुझे जीवन में बहुत संघर्ष करना पड़ा। हर समय मुझे निराशाजनक परिणाम मिला है और उसी परिणाम के द्वारा मुझे बहुत कुछ सीखने को मिला। मेरे जीवन में बहुत सारे उतार-चढाव है फिर भी मैंने हार नहीं मानी। मैं सिर्फ और सिर्फ मेरी जीत को सामने रखकर आगे बढ़ती गई। भले मैं उस योग्य नहीं, फिर भी मेरे सकारात्मक सोंच ने मुझे कई बार जीत दिलाई। बचपन से अभी तक का जीवन संघर्ष भरा है। लेकिन उस दुःख को मैं सहन करना सीख गई हूँ।

मैं बचपन से ही विवाह नहीं करना चाहती थी। घर की स्थिति देखकर घर के लोगों का सहारा बनना चाहती थी। नौकरी के बाद मुझे कई रिश्ते आए जो परमाणु ऊर्जा विभाग के थे।

एक दिन मेरी माँ मेरी छोटी बहन को फ़ोन पर बात करते समय बोली कि "किसी प्रकार उषा को शादी के लिए तैयार करना।" जब मैं यह बात सुनी तो मुझे यह महसूस हुआ कि मेरे माता-पिता भी यही चाहते है कि मैं शादी करुं। जब मेरी बात मेरी माँ से हुई तो मैं बोली कि "आप लोग देख लिजिए जो आप लोग बोलेंगे मैं वही करुँगी।" कई रिश्ते आये लेकिन मेरे हाथ के वजह से मना कर देते थे। ऐसा कई बार हुआ जिसके कारण मेरी माँ बहुत चिंतित रहती थी। मैं उन्हें बोलती, मेरे लिए जो है वही मिलेगा और मुझे बहुत अच्छा मिलेगा। बहुत दिन के बाद मेरे पति का रिश्ता मेरे लिए आया। मोबाईल नं.दिया. मैंने अपने बारे में सब कुछ बताया। मेरे पति एक मात्र ऐसे व्यक्ति थे जिन्हें मेरे हाथ से कोई परेशानी नहीं थी। मुझे प्यार से अपनाने को तैयार थे। शादी के लिए दोनों तरफ से सहमत हुए। लेकिन एक समस्या थी जो कि हमारा सरनेम। एक ही सरनेम होने के कारण मेरे पति मेरे साथ शादी करने को मना कर दिए। मैं भी सोंची कि जो भी हो रहा है अच्छा ही हो रहा है। दूसरी बात कि हम दोनों अलग-अलग राज्यों से हैं। इसलिए मैं भी उनकी बातों पर सहमत थी। लेकिन उनके माता-पिता बोले, सब चलेगा, सरनेम को लेकर कोई दिक्कत नहीं होगी। सगाई का दिन तय कर दिये। तीन महीने के अंदर ही मेरी सगाई हुई और दिसंबर 2019 में मेरी शादी तय हो गई। बहुत कम समय में ही सगाई और शादी का दिन तय हुआ। हम एक दूसरे से बिलकुल अनजान थे। एक-दूसरे से मिलना एक बार ही हुआ था। लेकिन मुझे विश्वास था कि जो भी है वह अच्छा हो जो कुछ होगा वह अच्छा ही होगा।

अक्तूबर में मेरी सगाई हुई। उससे पहले लड़की के रिश्तेदार और गांव वाले लड़के का घर देखना चाहते हैं। इस लिए मेरे परिवार के सदस्य मेरे रिश्तेदार और मेरे गांव के लोग, मेरे होने वाले ससुराल यानि उड़ीसा गये। वहां से एक ही दिन में वापस आना था इसलिए घर से ही गाड़ी (मिनीबस) रिजर्व की थी। गाड़ी समय पर नहीं आयी इसलिए भीड़ और भी जमा होती गई। बस आने के बाद सब लोग गाड़ी के अंदर बैठे। दूर होने के कारण पहुंचने में बहुत समय लगा। सब लोग उड़ीसा अच्छे से पहुंच गए और सब रस्म अच्छी तरह से हो गई। घर वापस आने में बहुत रात हो गई। दूसरे दिन मेरी सगाई थी इसलिए किसी भी हालत में घर वापस पहुंचना था। मैं घर में ही सबका वापस आने का इंतजार कर रही थी। बहुत रात हो गई मैं फोन लगा रही थी पर किसी का फोन नहीं मिला। 2 बजे एक फोन आया कि गाड़ी की दुर्घटना हो गई है। बहुत लोगों को चोट लग गई है। एडिसन मेरा भाई है। उनके गले की नीचे की हड्डी टूट गई है। उस गाड़ी में मेरे परिवार के बड़े सदस्य बैठे थे। मेरे पिताजी,जीजाजी और मेरा चचेरा भाई और मेरे खुद का भाई बैठा था। मैं यह समाचार सुनकर रो रो कर सबकी सलामती के लिए प्रार्थना करने लगी। सिर्फ मेरे भाई की हड्डी टूटी थी और दूसरे लोगों को थोड़ी चोटे लगी थी। मेरे घर के बड़े सदस्य मेरे पिताजी भी ओडिसा के अस्पताल में मेरे भाई के साथ थे। तब तक सुबह हो गई। तब मैंने मेरे पिताजी को फोन करके कहा पिताजी ये क्या हो गया ? अब क्या करें ? आज सगाई है, सब मेहमान आये हैं क्या करें ? सगाई रद्द कर रही हूँ। ऐसे में सगाई कैसे करें ? कौन सब तैयारी करेगा ?" मैंने मेरे पिताजी का दिल देखा कि इस दुःख की घड़ी में पिताजी बोले," बेटी ये सब रुकावट है तुम पीछे मत हटो। सगाई रद्द मत करो। कैसे भी करके आज ही तेरी सगाई होनी चाहिए।" मैं बोली "आप ही नहीं है तो मैं कैसे करूँगी सब।" पिताजी बोले "मैं कैसे भी करके समय पर आऊंगा, तुम लोग तैयारी करो।" लोग बोलने लगे यह सगाई मत होने दो अशुभ हो जाएगा। लेकिन मेरे पिताजी माने नहीं और कहां आगे बढ़ो । मेरी शादी हो गई। अभी मैं बहुत खुश हुं। सब अच्छा चल रहा है।

मुझे इस घटना से यही शिक्षा मिली कि हमें अपने दुःख में नहीं टूटना चाहिए। आगे बढ़ते रहना चाहिए। रास्ता खुद ही खुल जाता है। हमारे लिए जो पहले से तय है वहीं हमें मिलेगा।

'काश वो क्षण लौट आये'

(कहानी)



श्रीमती संजु कुमारी
वैज्ञानिक सहायक

काश वो क्षण लौट आये
अश्रुधार से है कपोल सराबोर,
काश वो क्षण लौट आये,
जिसमें हो पिता का बोध।

जीवन के नैतिक मूल्यों पर आधारित यह कहानी हम, आप, सभी से सवाल करती नजर आती है कि कर्तव्यबोध का निर्वाह क्या सिर्फ बेटे ही कर सकते है, बेटियां नहीं? विवाहित बेटियां अपने पति के हाथों की कठपुतली मात्र बन कर रह जाती है। यदि कभी अपने पिता का फोन भी उठाना हो तो उसे अपने पति के नियाज का अवलोकन करना पड़ता है कि यह उचित अवसर है या नहीं फोन उठाने का।

मेरी इस कहानी कि नायिका है साधना, जो रोज की तरह आज भी अपनी दिनचर्या से निवृत होकर रसोईघर में खाना बनाने में जुटी थी। चुँकि आज दिन था रविवार, सो पति महाशय के कुछ मित्र का घर पर आगमन था। श्रीमति जी पूरी कोशिश में जुटी थी कि कहीं शिकायत का मौका ना रहे।

तभी अचानक मोबाइल की घंटी बजी। चुँकि साधना व्यस्त थी सो उसकी बेटी सुमन ने फोन उठा लिया। फोन उसके नानाजी का था। उधर से आवाज आई - `कैसी हो सुमन? ममा कैसी है?' सुमन ने कहा `नानाजी, मैं अच्छी हूं। मम्मी किचन में है, मैं अभी बुलाती हूं।'

तभी सुमन के पति नीरज की बड़बड़ाहट साधना के कानों तक पहुंची। वो बोल रहा था कि ये लोग बस खाली बैठे रहते हैं और फोन घुमाते रहते हैं। उन्हें तो बस जरा सा भी यह ख्याल नहीं रहता है कि और लोगों के पास हजार काम होते हैं निपटाने के लिए। अब ये बातें इनको कौन समझाये!!

साधना के कानों में नीरज की बातें ऐसे जा रही थी मानों को गर्म शीशा पिघला रहा है। वे मन ही मन अपने आप से पूछ रही थी, यदि मैं बेटा होती तो शायद ये बातें कोई मेरे पिता को नहीं सुनाता। मेरे पति तो अपने माता-पिता से प्रत्येक दिन फोन पर घंटे बाते करते हैं और यदि किसी दिन फोन नहीं आता है तो चिंतित होकर खुद ही फोन करते हैं। तभी कुकर की सीटी से उसकी तंद्रा भंग हो गई। चँकि सुबह-सुबह वो अपना मूड खराब नहीं करना चाहती थी, और ना ही घर का माहौल खराब करना चाहती थी, सो उसने सुमन से कह दिया कि - `बेटा नानाजी को बोल दो, मम्मी व्यस्त है, बाद में खुद ही फोन कर लेगी।' ये कहकर साथ ही कनखियों से उसने अपने पति की तरफ देखा, जिनके चेहरे पर सकुन साफ नजर आ रहा था।

दोपहर तक सारी तैयारियां हो चुकी थीं। सारे मेहमान आ गये थे। किसी तरह की परेशानी ना हो इसलिए उसने अपना मोबाइल बंद कर पति को दिखाते हुए पर्स में डाल दिया ताकि उन्हें यकिन रहे कि उसके मेहमानों की खातिरदारी में उसने अपना शत-प्रतिशत ध्यान लगाया है।

दोपहर में सारे मेहमान आ गये थे. सभी काफी खुश थे। सारे पकवान जो साधना द्वारा बनाये गये थे, सभी उसका भरपूर आनंद ले रहे थे। लेकिन इन सबों के बीच आज पता नहीं क्यों साधना का मन ही नहीं रम रहा था। उसे ऐसा महसूस हो रहा था कि उसकी कोई बहुत ही किमती चीज छीन गयी है। रोने की सी इच्छा हो रही थी। फिर भी वो अपने आप को शांत रखने की पूरी कोशिश कर रही थी।

तभी उसने देखा कि उसके पति के मोबाइल पर बार-बार किसी का कॉल आ रहा है। जिसे वह बार-बार कट कर रहे थे। यहां तक कि उनके एक दोस्त ने कहा भी कि उसका फोन है, बात कर लो। तब उसने कहा अरे नहीं, क्रेडिट कार्ड वाले का फोन है बार-बार अवांछित काल कर-कर परेशान करते रहते हैं। यह सुनकर उसका दोस्त चुप हो गया। रात तक पार्टी समाप्त हुई। सारे कामों से निपट कर साधना फटाफट अपना फोन पर्स से निकाली और उसको ऑन किया। उसने देखा कि उसके पापा और भैया के बहुत सारे मिस कॉल थे।

उसने तुरंत पापा को फोन लगाया। उधर से उसकी मम्मी की फोन पर आवाज आयी। मम्मी की आवाज काफी बुझी सी और भारी लग रही थी। साधना का दिल आशंका से धड़क गया। उसने तुरंत मम्मी को बोला माँ सब ठीक है ना। पापा को फोन दो ना।

साधना की मम्मी रोने लग गई। और कहने लगी, `हमलोग दोपहर से ही तुम लोगों को फोन लगा रहे थे, पर कोई फोन उठा ही नहीं रहा था। तुम्हारे पापा को हार्ट-अटैक आया था, वो तुमसे बात करने की जिद कर रहे थे। तुम्हें मालुम है ना, तु उनकी सबसे लाडली बेटी है। पापा अभी अस्पताल में है, जितनी जल्दी हो आ जा बेटी।'

साधना सन्न रह गई। उसे याद आया कि ओहः शायद जो फोन पार्टी के समय मेरे पति के मोबाइल पर आ रहा था, वो मेरे पापा का ही था।

तभी उसका पति नीरज आया और उसे फोन पर बाते करते देख ताना मारा कि `अगर एक दिन मायके बात नहीं करोगी तो कोई भुचाल आ जाएगा क्या!!'

आज पति की बाते साधना को सहन नहीं हुई। उसके अंदर का ज्वालामुखी फूट चुका था। वह बरबस चिल्ला पड़ी - `सच कहा तुमने, आज भुचाल आ गया है, मेरे मायके में छीटें शायद सबसे ज्यादा तुम पर ही गिरेगां। मैं अभी तुरंत मायके जा रही हूं। मेरे पिता अस्पताल में है। उन्हें हार्ट-अटैक आया है।' उसका पति भौच्चक्का होकर उसके रौद्र रूप को देखता जा रहा था। कुछ कहने की हिम्मत मानों खत्म हो चुकी थी। साधना अपने पति को एकटक देखे जा रही थी और बड़बड़ाते जा रही थी कि `तुम भी एक बेटी के पिता हो, भगवान ना करे तुम्हारी बेटी का पति भी ऐसा व्यवहार किया तो तुम उस समय क्या महसूस करोगे। मानव का नैतिक मूल्य मानवता की पहचान होती है। तुमने तो उसे ताक पर रख दिया है। तुम्हारे अंदर असंतोष, असमानता, असामंजस्य, आदर्श विहिनता भरी पड़ी है। उचित नैतिक मूल्य के दर पर ही उचित -अनुचित का निर्णय किया जा सकता है। और यह विवेक के बल से संचालित होता है, पर तुम्हें क्या, सामने से कोई बार-बार फोन कर रहा है, इसकी तुम्हें क्या पड़ी है। तुम्हें तो चाहिए सिर्फ और सिर्फ `स्वसंतोष''। इतना कह साधना अपना सामान लेकर तुरंत घर से निकल कर आटो-रिक्शा ले सीधा अस्पताल पहुंची। वहां उसकी माँ उसे देखकर उससे लिपट गई और रोने लगी। बड़ी देर कर दी बेटा, तुम्हारे पिता अब नहीं रहे। उसकी माँ बार-बार उसके पिता को उठाने की कोशिश कर रही थी कि उठ जाइए, आपकी लाडली बेटी आ गई है। पर उसके पिता चीर निद्रा में सो रहे थे, हमेशा-हमेशा के लिए।

साधना पर मानो वज्रपात हो गया था. उसके आंसु सूख चुके थे। लाख कोशिशों के बाद भी आँसू बाहर नहीं निकल रहे थे, वो यही सोचे जा रही थी कि शायद वो अपने पति से ना डर अपने पिता से फोन पर बात कर लेती तो जिंदगी भर का मलाल न रहता। वो शायद अपने पति को कभी माफ नहीं कर पाएगी। वो बस सोच के सागर में डूबी जा रही थी कि एक और किसको वरियता दे। वो अपने सुख-स्वार्थ की तिलांजली तो बचपन से देती आती है। अब और कितना!!' तभी सामने से उसका पति आता दिखाई दिया। वो पास आकर रूक गया। और बोला-मुझे माफ कर दो।

आज मैं एक बेटी का बाप बनकर सोचा, तब मुझे तुम्हारा दर्द महसूस हुआ। मैं तो क्षमा के लायक भी नहीं हूं, फिर भी हो सके तो माफ कर दो।

इतना कह वह रोने लगा। पश्चाताप के आंसु साफ-साफ उसके चेहरे पर झलक रहे थे, जो शायद कहीं ना कहीं साधना को सकून दे रहे थे कि इस कहानी के माध्यम से मेरे पति जैसे पिता अपने कर्तव्य को समझ पाये कि सिर्फ पत्नि से रिश्ता नहीं जुड़ता, रिश्ता जुड़ता है दो परिवारों से, दो परिवार में सुख-दुख से। सच ही कहा है कि

खुशहाली वही लाते है।
सुख में साथ निभाते हैं।।
दुख को भी अपनाते हैं
ये है नैतिक मुल्य,
जो दो परिवारों को जोड़कर,
मानवता-भाईचारा को बढ़ाते हैं।।

कर्म



श्री संतोष कुमार
वैज्ञानिक अधिकारी

कर्म को जानने से पहले हमें बुद्धि को जानना होगा । बुद्धि को जानने से पहले हमें मन को जानना होगा। मन को टंटोलने से पहले कर्मद्रियों पर पारखी रूप से अवलोकन करना होगा।

जब शिशु जन्म लेता है तो उसे ना तो मन का पता होता है ना ही बुद्धि का। बस वह इंद्रियों द्वारा जगत को निहारता रहता है । धीरे-धीरे बड़ा होता है तो उसकी इंद्रियां चीजों का अवलोकन करने लगती है। इसी अवलोकन में मन का वास होता है।

मन इस शरीर का सॉफ्टवेयर है जो इंद्रियों द्वारा दिए गए डाटा को एनालाइज करता है। समय के साथ शिशु बड़ा होता है तो वह एनालिसिस करते करते कुछ अच्छा तो कुछ बुरा पाता है। अच्छाबुरा की परख इस मानव शरीर में विशेष रूप से भगवान द्वारा दी गई शक्ति बुद्धि को उत्पन्न करती है।

बुद्धि के द्वारा किए गए विभाजन को हम अपनाने की कोशिश करते हैं एवं मन को उस ओर मोडते हैं। मन इंद्रियों को आदेश देकर जो काम करते है उसे कर्म कहते है।

इच्छा- अभिलाषा- चाह आदि मन के ही विभिन्न उदगार हैं जिसे बुद्धि के द्वारा अच्छे या बुरे में विभाजित करते हुए समय के साथ जीवन यापन करने लगते हैं।

हम सभी ने अनुभव किया होगा बुद्धि के गलत कहे गए कर्म को भी कभी-कभी हम संपादित करते। उदाहरण के लिए -- सुबह टहलना स्वास्थ्य के लिए अच्छा होता है, -फिर भी हम लोग उठते नहीं हैं। बुद्धि द्वारा दिया गया संदेश या मूल स्वभाव के अच्छे कर्म ना करना हमारे मस्तिष्क में प्रभाव डालते हैं।

बुद्धि से ऊपर हमारे मस्तिष्क में ईश्वरीय शक्ति है जिसे हम आत्मा कहते हैं । प्रत्येक व्यक्ति का किसी एक घटना को समझने का तरीका भिन्न-भिन्न हो सकता है। आपने सोचा ऐसा क्यों होता है - जबकि मन और बुद्धि तो प्रत्येक मानव मैं एक ही तरह से आता है।

इसका कारण है प्रत्येक मानव के आत्मा का मूल स्वभाव होता है। स्वभाव को सर्वप्रथम समझना प्रत्येक मानव की जिम्मेदारी होनी चाहिए जब हम अपने मूल स्वभाव को समझेंगे तभी बुद्धि द्वारा अच्छे पथ पर अग्रसारित कर पाएंगे।

आत्मा-बुद्धि नमन-इंद्रियां यह सभी मिलकर मानव मस्तिष्क का ऑपरेटिंग सिस्टम बनाता है। सवाल यह उठता है कि हम ऑपरेट क्या करें ? यानी कर्म या काम क्या करें ?

शास्त्रों में कार्य को विभिन्न भाग में बांटा गया है। इसके प्रमुख दो - पहला नियत कर्म दूसरा आध्यात्मिक कर्म।

नियत कर्म:-

मानव रूपी शरीर को चलाने के लिए भोजन की जरूरत पड़ती है। अपने पेट पालने के लिए किया गया कार्य नियत कर्म है। नियत कर्म अलग-अलग तथा भिन्न-भिन्न तरीकों का हो सकता है। एक ब्राह्मण का तथा एक फौजी का नियत कर्म अलग अलग हो सकता है। एक ब्राह्मण को किसी को प्राण से मारना उसके नियम कर्म का हिस्सा नहीं हो सकता, जबकि फौजी के लिए यह रोजमर्रा की जिंदगी है।

आध्यात्मिक कर्म :-

जैसा की सर्वविदित है, आत्मा - परमात्मा का ही एक अंग है। पुराणों के अनुसार 84 लाख योनि में जन्म मरण कर यह मानव रूपी शरीर मिलता है। गीता के अनुसार - मानव रूपी शरीर में ऐसी क्षमता जो नियत कर्म करते करते अपने आत्मा को फिर से परमात्मा मे मिला सकता है। अपने मूल स्वभाव को पहचानना तथा बुद्धि के द्वारा अपने कर्मों को शुद्धता की ओर ले जाना ही आध्यात्मिक कर्म है।

आध्यात्मिक कर्म से मन पवित्र होता है तथा नियत कर्म करने में नया जोश आता है। आध्यात्मिक कर्म करने काये मकषद बिल्कुल नहीं है कि आप सन्यास ले ले या सबसे अलग-थलग हो जाएं, -- बल्कि इस ब्रह्मांड में अपने अस्तित्व को ढूंढना है। अपने अस्तित्व को ढूंढ कर आप अपने नियत कर्म (जो भी हो) उसमें निखरता ला सकते हैं।

निर्माण, सेवा एवं संपदा प्रबंधन निदेशालय को मिले सम्मान व पुरस्कार

निर्माण, सेवा एवं संपदा प्रबंधन निदेशालय को अपने विशिष्ट कार्यों के लिए विविध सम्मान और पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है जिससे निदेशालय गौरवान्वित हुआ है :

भारत सरकार का योजना आयोग, जो अब नीति आयोग से जाना जाता है , ने भारतीय निर्माण उद्योग के साथ संयुक्त रूप से भारतीय निर्माण उद्योग के विकास हेतु गतिविधियों को शुरू करने के लिए निर्माण उद्योग विकास परिषद (CIDC) की स्थापना की है। परिषद, समस्त उद्योग क्षेत्र में गुणवत्ता के स्तर को बढ़ाने के लिए प्रोत्साहन प्रदान करती है।

सीआईडीसी द्वारा निसेसंप्रनि परियोजनाओं को विश्वकर्मा पुरस्कार

वर्ष 2016 :- बैंगलोर स्थित आईसीटीएस(ICTS) परिसर के निर्माण के लिए दो श्रेणियों में सीआईडीसी विश्वकर्मा पुरस्कार



1) सर्वश्रेष्ठ निर्माण परियोजना
2) निर्माण कौशल विकास

वर्ष 2017 :- नाइजर (NISER) परियोजना के लिए शैक्षिक टाउनशिप तथा अन्य बुनियादी

अवसंरचनात्मक निर्माण हेतु सर्वोत्तम निर्माण परियोजनाओं की श्रेणी में सीआईडीसी विश्वकर्मा पुरस्कार

वर्ष 2018 :- बहादुरगढ़, हरियाणा में जीसीएनईपी चरण-I GCNEP Phase-I के निर्माण के लिए दो श्रेणियों में सीआईडीसी विश्वकर्मा पुरस्कार



1) सर्वश्रेष्ठ निर्माण परियोजना
2) पर्यावरण को संरक्षित रखने की अच्छी प्रथाओं का पालन करने के लिए व्यापक ग्रीन रेटिंग।

वर्ष 2021 :- महामारी के दौरान निर्माण उद्योग को गति प्रदान करने के लिए उद्योग निर्माण के ठकोरोना योद्धाओं के लिए पुरस्कारठ श्रेणी के तहत सीआईडीसी विश्वकर्मा पुरस्कार



वर्ष 2022 :- जीसीएनईपी हाउसिंग प्रोजेक्ट के लिए दो श्रेणियों में सीआईडीसी विश्वकर्मा पुरस्कार

1) सर्वश्रेष्ठ निर्माण परियोजनाएं
2) सर्वश्रेष्ठ पुरालेख परियोजना

निसेसंप्रनि को प्राप्त पऊवि पुरस्कार

वर्ष 2018 : राष्ट्रीय विज्ञान शिक्षा और अनुसंधान संस्थान (NISER) के लिए शैक्षणिक टाउनशिप खेल और अन्य बुनियादी ढांचा के निर्माण के लिए डीएई ग्रुप अचीवमेंट अवार्ड

वर्ष 2019 : पऊवि द्वारा नाइजर ,भुवन्वेश्वर तथा एएमडी, हैद्राबाद में आयोजित अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलनों में निदेशालय को उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए प्राप्त दो पुरस्कार :

1. सर्वश्रेष्ठ हिंदी गृह पत्रिका "निर्माण"- **प्रथम स्थान**



2. निसेसंप्रनि में उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु राजभाषा शील्ड -**द्वितीय स्थान**



वर्ष 2020 : पऊवि अवार्ड योजना (डीएई एक्सीलेंस इन साइंस इंजीनियरिंग टेक्नोलॉजी) के तहत ग्रुप अचीवमेंट अवार्ड "अपशिष्ट प्रबंधन सुविधाओं की संस्थापना और आत्मनिर्भरता एवं स्वच्छ व हरित अणुशक्तिनगर I"

वर्ष 2020 : स्वच्छता पखवाड़ा 16-28 फरवरी, 2020 के दौरान की गई स्वच्छता गतिविधियों का मूल्यांकन एवं डीएई सर्टिफिकेट ऑफ एक्सीलेंस के सम्मान में निसेसंप्रनि ने प्रथम स्थान प्राप्त किया



वर्ष 2021 : पेयजल और सेनिटेशन विभाग द्वारा प्रायोजित-स्वच्छता पखवाड़ा पुरस्कार-2021- तृतीय स्थान



निदेशालय की उपलब्धियों का सफर और ऊँचे पायदान पर होगा.... निदेशालय की क्षमताएं असीम हैं.... शायद गगन के क्षितिज तक ....




Construction Industry
Development Council (CID



भाभा तुझे प्रणाम...



कर दी हमारी परमाणु के क्षेत्र से पहचान
होमी जहाँगीर भाभा तूने कर दिया कमाल
भाभा करते हैं तुझे हम प्रणाम...

जब देश में छिडी थी आजादी की लड़ाई
लाठी किसीने तोप और बंदूक उठाई
हर वीर ने बलिदान की कहानी लिखाई
पर भाभा तूने परमाणु की लगन लगाई



इस पुत्र को माँ भारती सदा करे प्रणाम
होमी जहाँगीर भाभा तूने कर दिया कमाल
भाभा करते हैं तुझे हम प्रणाम...।। १ ।।

गरीबी की कगार पर ये देश खड़ा था
तन पे नहीं कपडे न पेट में अनाज था
लोगों पर आजादी का जूनून चढा था
ऐसे में भी भाभा तूने विज्ञान की सोची



तेरी सोच ने दी विश्व में भाभा तुझे पहचान
होमी जहाँगीर भाभा तूने कर दिया कमाल
भाभा करते हैं तुझे हम प्रणाम...।। २ ।।

1943 में जेआरडी टाटा से मिला
नेहरू से तू मिला, सर दोराबजी से मिला
इनकी भी आँखों में तूने ये सपना जगाया
जो देखा था सपना वो पूरा करके दिखाया





तेरे श्रम ने टाटा इन्स्टिट्यूट को जन्म है दिया
होमी जहाँगीर भाभा तूने कर दिया कमाल
भाभा करते हैं तुझे हम प्रणाम...।। ३ ।।

देश प्रेम से विदेश छोड देश में बसा
देश में विज्ञान का इक विश्व बनाया
विज्ञान के हर पहलु को खुद में समाया
DAE और BARC को पल्लवित किया



विज्ञान और कला का संगम तूने किया
होमी जहाँगीर भाभा तूने कर दिया कमाल
भाभा करते हैं तुझे हम प्रणाम...।। ४ ।।

- अनुराधा दोडके
उप निदेशक (राजभाषा)

निसेसंप्रनि रजत जयंती



निसेसंप्रनि द्वारा क्रियान्वित पॅन इंडिया परियोजनाएं